पढ़ें और सीखें योजना

रवि

जगदीश चंद्रिकेश

विभागीय सहयोग

हीरालाल बाछोतिया

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

नवम्बर 1993
कार्तिक - 1915

PD 10T SD

प्रकाशन सहयोग

सी. एन. राव **अध्यक्ष प्रकाशन विभाग**

प्रभाकर द्विवेदी **मुख्य संपादक**

यू. प्रभाकर राव **मुख्य उत्पादन अधिकारी**
डी. साई प्रसाद **उत्पादन अधिकारी**
चन्द्र प्रकाश टंडन **कला अधिकारी**
विकास मेश्राम **सहायक उत्पादन अधिकारी**
राजेन्द्र चौहान **उत्पादन सहायक**

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस	सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस	नवजीवन ट्रस्ट भवन	सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस
श्री अरविंद मार्ग	चितलापक्कम, क्रोमपेट	डाकघर नवजीवन	32, बी.टी. रोड, सुखचर
नई दिल्ली 110016	मद्रास 600064	अहमदाबाद 380014	24 परगना 743179

रु. 13.50

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा कम्पयूग्राफिक, एच-16, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली 110016 में कम्पोज होकर इण्डिया ऑफसेट प्रैस, मायापुरी इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली 110064 में मुद्रित।

विद्यालय शिक्षा के सभी स्तरों के लिए अच्छे शिक्षाक्रम, पाठ्यक्रमों और पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की दिशा में हमारी परिषद् पिछले पच्चीस वर्षों से कार्य कर रही है। हमारे कार्य का प्रभाव भारत के सभी राज्यों और संघशासित प्रदेशों में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से पड़ा है और इस पर परिषद् के कार्यकर्त्ता संतोष का अनुभव कर सकते हैं।

किंतु हमने देखा है कि अच्छे पाठ्यक्रम और अच्छी पाठ्यपुस्तकों के बावजूद हमारे विद्यार्थियों की रुचि स्वतः पढ़ने की ओर अधिक नहीं बढ़ती। इसका एक मुख्य कारण अवश्य ही हमारी दूषित परीक्षा-प्रणाली है जिसमें पाठ्यपुस्तकों में दिए गए ज्ञान की ही परीक्षा ली जाती है। इस कारण बहुत ही कम विद्यालयों में कोर्स के बाहर की पुस्तकों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है। लेकिन अतिरिक्त-पठन में बच्चों की रुचि न होने का एक बड़ा कारण यह भी है कि विभिन्न आयुवर्ग के बच्चों के लिए कम मूल्य की अच्छी पुस्तकें पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध भी नहीं हैं। यद्यपि पिछले वर्षों में इस कमी को पूरा करने के लिए कुछ काम प्रारंभ हुआ है। पर वह बहुत ही नाकाफ़ी है।

इस दृष्टि से परिषद् ने बच्चों की पुस्तकों के रूप में लेखन की दिशा में एक महत्वाकांक्षी योजना प्रारंभ की है। इसके अंतर्गत, 'पढ़ें और सीखें' शीर्षक से एक पुस्तकमाला तैयार की जा रही है जिसमें विभिन्न आयुवर्ग के बच्चों के लिए सरल भाषा और रोचक शैली में निम्नलिखित विषयों पर बड़ी संख्या में पुस्तकें तैयार की जाएँगी।

(क) शिशुओं के लिए पुस्तकें
(ख) कथा-साहित्य
(ग) जीवनियाँ
(घ) देश-विदेश परिचय
(ङ) सांस्कृतिक विषय
(च) वैज्ञानिक विषय
(छ) सामाजिक विज्ञान के विषय

इन पुस्तकों के निर्माण में हम प्रसिद्ध लेखकों, अनुभवी अध्यापकों और योग्य कलाकारों का सहयोग ले रहे हैं। प्रत्येक पुस्तक के प्रारूप पर भाषा, शैली और विषय-विवेचन की दृष्टि से सामूहिक विचार करके उसे अंतिम रूप दिया जाता है।

परिषद् इस माला की पुस्तकों को लागत मूल्य पर ही प्रकाशित कर रही है ताकि ये देश के हर कोने में पहुँच सकें। भविष्य में इन पुस्तकों को अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद कराने की भी योजना है।

हम आशा करते हैं कि शिक्षाक्रम, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के क्षेत्र में किए गए कार्य की भाँति ही परिषद् की इस योजना का भी व्यापक स्वागत होगा।

प्रस्तुत पुस्तक ***राजा रवि वर्मा*** के लेखन के लिए डा. जगदीश चंद्रिकेश ने हमारा निमंत्रण स्वीकार किया जिसके लिए हम उनके अत्यंत आभारी हैं। जिन-जिन विद्वानों, अध्यापकों और कलाकारों से इस पुस्तक को अंतिम रूप देने में हमें सहयोग मिला है उनके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

हिंदी में 'पढ़ें और सीखें' पुस्तकमाला की यह योजना प्रोफेसर अर्जुन देव के मार्ग-दर्शन में चल रही है। उनके सहयोगियों में श्रीमती संयुक्ता लूदरा, डा. रामजन्म शर्मा, डा. सुरेश पांडेय, डा. हीरालाल बाछोतिया और डा. अनिरुद्ध राय सक्रिय सहयोग दे रहे हैं। विज्ञान की पुस्तकों के लिखन में विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग के डा. राम दुलार शुक्ल सहयोग दे रहे हैं। मैं अपने सभी सहयोगियों को हार्दिक धन्यवाद और बधाई देता हूँ।

इस माला की पुस्तकों पर बच्चों, अध्यापकों और बच्चों के माता-पिता की प्रतिक्रिया का हम स्वागत करेंगे ताकि इन पुस्तकों को और भी उपयोगी बनाने में हमें सहयोग मिल सके।

डा. के. गोपालन

निदेशक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ:

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।



मदिर की चूने से पुती सफेद दीवार। एक बालक उसे बड़े ध्यान से देख रहा है। पास ही खड़ी है उसकी छोटी बहन। सहसा बालक अपनी बहन से कहता है, "जरा, कोयले का टुकड़ा तो लाना।"

"क्यो ?"

"तुझे घोड़ा बनाकर दिखाता हूं।"

"घोड़ा ? कहा ?"

"अरे, उस दीवार पर। जा, कोयले का टुकड़ा ले आ।"

बहन दौड़ कर कोयले का टुकड़ा तो ले आई, पर वह मन-ही-मन डर भी रही थी। चूने से पुती सफेद दीवार। उस पर बनी कोयले की लकीरें तो दूर से दिखाई दे जाएँगीं। माँ डाटेगीं। मामा नाराज होंगे। पिताजी भी खुश नही होंगे। पर उधर भाई का भी आग्रह था। सो, वह कोयले का टुकड़ा ले आई।

भाई ने कोयले का टुकड़ा हाथ में लिया और दीवार की ओर बढ़ गया। एक रेखा, फिर दूसरी रेखा, फिर रेखाएँ ही रेखाएँ। और इन रेखाओ के बीच उभर आई घोड़े की आकृति। बहन क्षण भर के लिए सारा भय भूल गई। "कितना सुंदर घोड़ा है। लगता है, जैसे अब दौड़ ही पड़ेगा।" उसके मुँह से निकल पड़ा।

भाई ने मुसकराकर उसकी ओर देखा। फिर कहा, "ले, तू भी बना।"

लड़की ने कोयले का टुकड़ा हाथ में ले लिया। वह सोचने लगी, 'मैं क्या बनाऊँ। हाथी, फूल, पत्ती।' तभी उसे अपने घर के सेवक की आवाज सुनायी पड़ी।

"अरे, यह क्या किया? मंदिर की दीवार खराब कर दी। अभी-अभी तो पुताई हुई थी। मै अभी जाकर स्वामी को बतलाता हूँ। तुम लोगों ने दीवार का सत्यानाश कर दिया।"

धमकी देता हुआ वह चला गया।

इधर भाई ने बहन का हाथ पकड़ा। कहा, "डर मत। कुछ नहीं होगा।"

उधर वह स्वामी के पास पहुँचा और उन्हें सारी बात बताई। उसने यह भी आग्रह किया कि वे स्वयं चलकर दीवार की दुर्दशा देख लें।

वे उसे लेकर मंदिर के पास पहुंचे। वहां कोई नहीं था। था तो केवल एक घोड़ा—मदिर की सफेद दीवार पर कोयले से खींची रेखाओं से बना हुआ।

वे एकटक उस घोड़े को देखते रहे और वह अपने स्वामी को। उसे आश्चर्य था। स्वामी क्रोधित क्यों नही हो रहे? वे चुप क्यों हैं?

स्वामी क्रोधित कैसे होते? मदिर की दीवार पर बने घोड़े ने उन्हें आश्चर्य में डाल दिया था। उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था कि यह घोड़ा उनके भांजे कोच्चू ने बनाया है।

कोच्चू!

हा, यही उस बालक का प्यार का घरेलू नाम था।

उन्होंने सेवक से पूछा, "कोच्चू कहां है?"

"पता नहीं, स्वामी! यहीं तो थे, मंगला बिटिया के साथ।"

"आओ, चलकर ढूंढें। यहीं, कहीं-न-कहीं होंगे।"

और वे दोनों, भाई-बहन को ढूंढने चल पड़े।

स्वामी थे—राजा राज वर्मा। कोच्चू—उनकी बहन का बेटा था। राजा राज

वर्मा स्वयं भी चित्रकारी करते थे। घोड़े की आकृति ने उन्हें बेहद प्रभावित किया था। इसलिए भी कि उसे एक नन्हें बालक ने बनाया था। घोड़े की आकृति पूरी तरह संतुलित थी। कहीं से बेडौल नहीं थी।

राजा राज वर्मा को लगा कि कोच्चू में चित्रकार बनने की प्रतिभा है। बस, आवश्यकता उसे प्रोत्साहन देने की है। सही मार्गदर्शन मिलने की है। उन्होंने निश्चय किया, वे कोच्चू को चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। उसका यथोचित मार्गदर्शन करेंगे। उन्हें विश्वास था, कोच्चू एक दिन अवश्य ही बड़ा चित्रकार बनेगा।

उनका विश्वास मिथ्या नहीं था। सचमुच, कोच्चू एक महान चित्रकार बना। उसे देश में ही नहीं, विदेशों में भी जाना गया। अपार सम्मान और लोकप्रियता मिली। उससे अनेक राजा-महाराजाओं ने चित्र बनवाए और सम्मानित किया। वह इतना लोकप्रिय हुआ कि उसे सम्मान के साथ 'राजा' कहा जाने लगा।

कौन था यह कोच्चू!

कोच्चू का वास्तविक नाम था—रवि वर्मा

भारतीय चित्रकला के इतिहास का एक अमर नाम!

केरल : अपने देश के धुर दक्षिण में स्थित एक छोटा-सा राज्य। आकार में छोटा, लेकिन प्राकृतिक सुषमा से भरपूर। घने बन, नदियाँ, पर्वत, हाथियों के समूह के समूह। साहित्य, कला, सस्कृति—सभी क्षेत्रों में संपन्न। आदि शंकराचार्य इसी प्रदेश के थे। आज भी केरल में साक्षरता कई प्रदेशों से अधिक है।

उसी केरल प्रदेश की राजधानी है तिरुवनन्तपुरम् यानी त्रिवेन्द्रम।

पहले भी तिरुवनन्तपुरम् त्रावणकोर रियासत की राजधानी थी।

तिरुवनन्तपुरम् के चालीस किलोमीटर उत्तर में है किलिमानूर।

किलिमानूर का अर्थ है, तोतों और हरिणों की भूमि।

किलिमानूर का भी एक इतिहास है :

सन् 1728 की बात है। तब त्रावणकोर राज्य की रानी और उनकी एक संतान के प्राण संकट में पड़ गए थे। राज्य के शत्रुओं ने उन्हें घेर लिया था। तभी कोली थाम्पुरन के रवि वर्मा अपने साथियों सहित वहाँ आ पहुंचे। उन्होंने आततायियों को ललकारा। तलवारें खिंच गयीं। रवि वर्मा ने रानी और उनकी संतान को मुक्त करा लिया, पर उन्हें अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी।

त्रावणकोर के नरेश को इसकी सूचना मिली। रानी और संतान के बचने पर उन्हें प्रसन्नता हुई। साथ ही वे दुखी भी हुए। दुखी इसलिए कि रानी और उनकी संतान की रक्षा में एक बीर को अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी। त्रावणकोर नरेश खोये प्राण तो वापस ला नहीं सकते थे। पर वे रवि वर्मा

के प्रति आभार भी व्यक्त करना चाहते थे। उन्होंने उनके छोटे भाई केरल वर्मा को किलिमानूर और उसके आस-पास की भूमि पुरस्कार में दे दी। उस युद्ध में केरल वर्मा भी अपने भाई के साथ-साथ लड़े थे।

इस तरह किलिमानूर में एक नए घराने का शासन हो गया। धीरे-धीरे इस घराने के त्रावणकोर राज घराने से संबंध मजबूत होते गये।

किलिमानूर के शासक कला-प्रिय थे। उन्हें साहित्य में, संगीत में, नृत्य में और चित्रकारी में गहरी रुचि थी।

उन्नीसवीं सदी के मध्य का किलिमानूर ! तब वहाँ राजा राज वर्मा रहा करते थे। राजा राज वर्मा को ललित कलाओं से प्यार था। वे चित्रकारी किया करते थे। उनकी अपनी रंगशाला थी। जहां वे चित्र बनाया करते थे। किलिमानूर में एक मंदिर था। एक टोली भी थी, जो कथकलि नृत्य किया करती थी। राजा राज वर्मा चाहते थे कि लोगों के मन में ललित कलाओं के प्रति रुचि बढ़े।

राजा राज वर्मा की एक बहन थी—उमा अंबा बाई। वे संगीत की जानकार थीं। मलयालम और संस्कृत के पद वे तन्मयता से गाती थीं। उमा के पति थे—नीलकांतन भट्टातिरिपद, वेदों के ज्ञाता, संस्कृत के पंडित। उमा और नीलकांतन की ही संतान थे रवि वर्मा।

रवि वर्मा का जन्म 29 अप्रैल, 1848 को किलिमानूर में ही हुआ था। उनकी एक बहन थी—मंगला और दो भाई थे—राज वर्मा तथा गोदा वर्मा।

कहते हैं, आसपास के वातावरण का मनुष्य पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। रवि वर्मा पर भी किलिमानूर के वातावरण का काफी प्रभाव पड़ा।

कैसा था किलिमानूर का वातावरण?

किलिमानूर का वातावरण पूरी तरह धार्मिक और सांस्कृतिक था। धार्मिक इस अर्थ में कि घरों में, मंदिर में प्रतिदिन पूजा-पाठ होता। पाठशाला में संस्कृत सिखायी जाती। वेदों का अध्ययन कराया जाता। किलिमानूर के जीवन में संस्कृति का भी महत्व था।

राजा राज वर्मा स्वयं चित्रकार थे। वे और लोगों में भी चित्रकला के प्रति रुचि उत्पन्न करना चाहते थे। विशेषकर बच्चों में। किलिमानूर में नर्तकों की एक टोली भी थी। वह समय-समय पर कथकलि नृत्य के कार्यक्रम किया करती थी।

तो ऐसे वातावरण में रवि वर्मा का लालन-पालन हुआ।

पिता संस्कृत के पंडित, चाहते थे कि बेटा संस्कृत का विद्वान बने।

मां संगीतज्ञा थीं। वे रवि वर्मा को उनके शैशवकाल से ही गीत-संगीत सुनाया करती थीं—रागों में बंधे मलयालम के गीत और संस्कृत के पद।

धीरे-धीरे रवि वर्मा पांच वर्ष के हुए। अब तक उन्होंने मलयालम के साथ-साथ संस्कृत भी सीख ली थी। छह वर्ष की अवस्था में रवि वर्मा ने गीत-गायन शुरू कर दिया था।

वे कभी माता-पिता के साथ, कभी बहन के साथ, प्रतिदिन सुबह-शाम मंदिर जाते। मां ने उन्हें गायन सिखा ही दिया था। वे मलयालम और संस्कृत के पद गाते।

रवि वर्मा पर सबसे अधिक प्रभाव अपने मामा का पड़ा। मामा अर्थात, राजा राज वर्मा। राजा राज वर्मा अपनी रंगशाला में चित्र बनाया करते थे। उनके गुरु का नाम था—अलगिरि नायडू। अलगिरि नायडू एक विशेष शैली में चित्र बनाते थे। चित्रकारों ने इस शैली को नाम दिया है—तंजौर शैली। चूंकि, तंजौर के चित्रकार उस शैली के चित्र बनाते थे, इसीलिए इस शैली का नाम तंजौर शैली पड़ गया था।

राजा राज वर्मा को चित्र बनाने का बड़ा शौक था। वे नियमपूर्वक चित्र बनाया करते थे। रवि वर्मा अपने मामा को चित्र बनाते हुए देखते। उन्हें आश्चर्य होता, कैसे बना लेते हैं मामा इतने सुंदर चित्र?

रवि वर्मा को पशु-पक्षियों से बेहद प्यार था। किलिमानूर में उनके घर पर घोड़े, हाथी, गायें और बैल थे। बगीचे के पेड़ों पर तरह-तरह के पक्षी

चहचहाया करते थे। रवि वर्मा उन्हें बड़े ध्यान से देखा करते। पुष्ट बदन वाले घोड़े, कान हिलाते, सूंड से धरती बुहारते हाथी देखकर उनका मन रोमांचित हो उठता। इनकी आकृतियां उनकी कल्पना में घूमा करतीं। तरह-तरह के पक्षी भी उनका ध्यान आकर्षित करते । पेड़ों पर बैठे पक्षी, पंख पसारे उड़ते पक्षी, फुदकते पक्षी—ये सब रवि वर्मा को प्रसन्नता से भर देते।

किलिमानूर में चारों ओर हरियाली थी। नारियल के ऊंचे-ऊंचे पेड़, केले के फलों से लदे-फंदे हरे-हरे वृक्ष—ये सब बरबस उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेते।

रवि वर्मा पशुओं को, पक्षियों को बड़े ध्यान से देखते। उनकी शारीरिक बनावट का अध्ययन करते। फिर वे कल्पना में इनके चित्र बनाया करते।

धीरे-धीरे उन्होंने दीवारों पर उनकी आकृतियां बनाना शुरू किया। जब भी अवसर मिलता, कभी अकेले, कभी बहन के साथ दीवारों पर हाथी, घोड़े, फूल, पत्ती, पक्षी बनाने लगते। घर के नौकर जगह-जगह दीवारों पर कोयले से खींची गयी आकृतियां देखते। उन्हें यह सब अच्छा नहीं लगता। वे सोचते, अच्छी-भली दीवारों का कैसा सत्यानाश कर दिया! ये कोच्चू क्या पागल है? और भी तो बच्चे हैं। पर कोई ऐसा नहीं करता। बस, एक कोच्चू ही शैतान है। नौकरों को एक भय और था। कहीं और बच्चे भी कोच्चू की नकल न करने लगें। मंगला ने तो भाई की देखा-देखी दीवारों पर लकीरें खींचनी शुरू कर ही दी थीं।

'कोच्चू'

यही रवि वर्मा का घरेलू नाम था।

नौकर-चाकर कभी-कभी उन्हें झिड़क भी देते थे। स्वामी से शिकायत करने की धमकी भी देते थे।

राजा रवि वर्मा की जीवनियों में उनके बचपन की ऐसी कई घटनाओं का उल्लेख है। मराठी के एक प्रसिद्ध लेखक हैं—श्री रणजीत देसाई। उन्होंने

राजा रवि वर्मा के जीवन पर एक उपन्यास भी लिखा है। उन्होंने भी उक्त घटना का उल्लेख किया है, जिसे हम आरंभ में कह आये हैं।

राजा रवि वर्मा की एक जीवनी उनके जीवन काल में ही प्रकाशित हो गयी थी। यह उनकी प्रथम जीवनी थी। अंग्रेजी में लिखी इस जीवनी का शीर्षक था—'रवि वर्मा—द इंडियन आर्टिस्ट' (रवि वर्मा—भारतीय कलाकार)। इस जीवनी पर लेखक का नाम नहीं है। पर समझा जाता है उसे श्री रामानंद चटरजी ने लिखा था। श्री रामानंद चटरजी एक प्रसिद्ध पत्रकार व कला-शास्त्री थे। वे बंगला भाषा में 'प्रवासी' नामक पत्रिका निकालते थे। अंग्रेजी में भी एक पत्रिका प्रकाशित करते थे। नाम था—'माडर्न रिव्यू'। इन पत्रिकाओं के प्रकाशन के लिए राजा रवि वर्मा ने उनकी काफी सहायता की थी। उन दिनों इन दोनों पत्रिकाओं में राजा रवि वर्मा के बनाये हुए चित्र प्रकाशित हुआ करते थे। उनके बारे में लेख भी छपा करते थे।

'राजा रवि वर्मा—द इंडियन आर्टिस्ट' में उनके बारे में अच्छी जानकारी दी गयी है। एक स्थान पर लेखक ने लिखा है कि 'राजा रवि वर्मा का स्वभाव सौम्य है। वे बहुत दयालु व उदार-हृदय हैं। हमेशा गरीबों की सहायता के लिए तत्पर रहते हैं। उन्हें अपने प्रसिद्ध होने का जरा भी घमंड नहीं है। वे स्वीकार करते हैं—जैसे-जैसे इनका ज्ञान बढ़ता है, उन्हें यह बात अनुभव होती है कि प्रकृति के महान रहस्यों के बारे में वे कितना कम जानते हैं।'

२. प्रकृति से प्यार

राजा रवि वर्मा को बचपन से ही प्रकृति से प्यार था। वे जब छोटे थे, तभी वे अकसर नीले आकाश को देखा करते। नीला-नीला आकाश। उसमें हाथियों के झुंड की तरह डोलते बादल। रवि वर्मा को सूर्योदय देखना बहुत भाता था। वे सुबह-सुबह उठकर आकाश में सूर्य का उदय होना देखते रहते। इसी तरह सूर्यास्त भी उन्हें आकर्षित करता था। संध्या होते ही वे एक स्थल पर बैठ जाते। पश्चिम में धीरे-धीरे उतरते सूर्य को देखते रहते। एक ओर बढ़ता अंधकार। दूसरी ओर क्षितिज पर डूबते सूर्य की सिंदूरी ललाई। सूर्यास्त के समय आकाश में तरह-तरह के रंग जैसे बिखर पड़ते।

रवि वर्मा कभी-कभी सूर्योदय और सूर्यास्त की भी तुलना करते। कितना अंतर है दोनों में। वे आश्चर्य करते।

रात होती तो आकाश के मैदान में तारों की टोलियों की टोलियां आ धमकतीं। रवि वर्मा इन तारों को घंटों निहारा करते।

प्रकृति उन्हें प्रफुल्लित करती। उन्हें कल्पना के लोक में ले जाती। यही कारण है कि रवि वर्मा जीवन भर प्रकृति से प्यार करते रहे। वे जानते थे कि प्रकृति से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। उससे बहुत कुछ पा सकते हैं। वे देखते थे कि उनके मामा प्रकृति से मिली चीजों से ही रंग बनाते हैं।

राजा राज वर्मा फूलों से, पत्तियों से, वनस्पतियों से तरह-तरह के रंग बनाते थे। वे तरह-तरह के रंगों की मिट्टी भी एकत्र करवाते। फिर बड़े मनोयोग से रंग बनाते।

रवि वर्मा सोचते, उन्हें कब रंग बनाना आयेगा? कब वे अपने चित्रों में मनचाहे रंग भर सकेंगे ? कब तक वे कोयले से दीवारों पर आकृतियां बनाते रहेंगे?

पर रवि वर्मा को अधिक दिन प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी।

नौकर की शिकायत उनके लिए वरदान सिद्ध हुई।

न नौकर राजा राज वर्मा से उनकी शिकायत करता। न राजा राज वर्मा उनकी कोयले से बनायी गयी आकृति देखते। और न उनके मन में रवि वर्मा को चित्रकारी की विधिवत शिक्षा देने का विचार आता।

राजा राज वर्मा ने एक निश्चय किया । वह अपने भांजे कोच्चू को ही नहीं, अन्य बच्चों को भी चित्रकारी सिखाएंगे। इसके लिए उन्होंने अपनी रंगशाला को स्कूल-जैसा बना दिया। वे बच्चों को रेखाएं खींचना, चित्र बनाना सिखाते। उन्हें बताते कि चित्र बनाते समय किन-किन बातों की ओर ध्यान देना जरूरी है।

रवि वर्मा अपने मामा राजा राज वर्मा की बातें ध्यान से सुनते। रवि वर्मा में एक विशेषता थी। जब वे किसी विषय की ओर ध्यान लगाते तो फिर सब कुछ भूल जाते। बस, एकाग्र चित्त होकर उसी विषय में लगे रहते।

एकाग्र चित्त!

एकाग्र चित्त होकर कार्य करना बड़ा कठिन है। कारण, मन चंचल है। हमेशा पक्षी-सा इधर-उधर उड़ा करता है। उसी कारण बहुत-सी बातों को पूरा करने में देर लगती है। कभी-कभी तो असफल भी होना पड़ता है।

महाभारत की एक कथा है।

आचार्य द्रोण कौरवों व पांडवों को निशाना साधने की शिक्षा दे रहे थे।

उन्होंने एक पेड़ पर एक नकली चिड़िया बैठा दी। फिर उसकी आंख में निशाना साधने के लिए एक-एक कर अपने शिष्यों को बुलाया था।

शिष्य आता तो वे पूछते—

"तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है?"

शिष्य उत्तर देता, "आचार्य! पेड़, आकाश, डालें।"

हर शिष्य इसी आशय का उत्तर दे रहा था। आचार्य उससे हट जाने को कहते। अंत में अर्जुन की बारी आयी। आचार्य ने उससे भी यही प्रश्न किया। अर्जुन ने उत्तर दिया, "आचार्य, मुझे केवल चिड़िया की आंख दिखाई दे रही है।"

"बस, तीर चला दो।" आचार्य ने निर्देश दिया।

अर्जुन ने तीर चला दिया। वह ठीक निशाने पर जाकर बैठा।

इस कथा का अर्थ क्या है? यही कि एकाग्र चित्त होने से व्यक्ति अपने लक्ष्य को बेध सकता है।

अर्जुन एकाग्र चित्त होकर निशाना साध रहा था। वहां केवल चिड़िया की आंख ही दिखायी दे रही थी। इसीलिए वह सफल भी हुआ।

आचार्य द्रोण के अन्य शिष्यों का मन चंचल था। उन्हें पेड़ दिखाई दे रहा था, डालें दिखायी दे रही थीं, चिड़िया भी दिखायी दे रही थी। पर आवश्यकता तो केवल उसकी आंख देखने की थी।

रवि वर्मा भी प्रत्येक कार्य ध्यान लगा कर करते थे। फिर उन्हें कोई और बात नही सूझती थी।

इसी कारण, वे शीघ्र ही अच्छे चित्र बनाने लगे। यह देखकर राजा राज वर्मा बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने धीरे-धीरे रवि वर्मा को चित्रकला की बारीकियां सिखानी शुरू कीं। फलक पर रेखांकन किस तरह किया जाता है, यह सिखाया। रंग किस तरह भरे जाते हैं, यह बताया। किन-किन वस्तुओं से रंग बनते हैं, यह कला भी सिखायी। किन-किन रंगों को मिलाने से कौन-सा नया रंग तैयार हो जाता है, वह तरीका भी समझाया।

रवि वर्मा तेजी से यह सब सीखने लगे। अब वे चित्र भी बनाने लगे। उनमें रंग भी भरने लगे।

उन्हें अपने मामा राजा राज वर्मा की सीखें याद थीं।

चित्रकला सिखाना शुरू करने के पूर्व एक दिन मामा ने उनसे कहा था— 'रवि, मनुष्य को केवल सिखा देने से कुछ नहीं आता। कुछ गुण उसमें जन्मजात होते हैं। मैं तुझे रंग बनाना सिखाऊंगा। पत्ते, फूल, जड़ें, रासायनिक द्रव्य और अनेक रंग की मिट्टी से रंग तैयार होते हैं। लेकिन एक बात इनसे भी ज्यादा जरूरी है। अपनी मरजी का रंग तो कलाकार को स्वयं खोजना पड़ता है। उसके लिए केवल आंखें ही नहीं बल्कि, अंतर्दृष्टि की भी जरूरत पड़ती है।'

फिर मामा राजा राज वर्मा ने आगे कहा था।

'आंखें केवल देखती हैं। जो दिखता है, उसे समझती हैं अंतर्दृष्टि।'

इसके साथ ही मामा ने कुछ शर्तें भी जोड़ी थीं। यह कि वे अब से किसी दीवार पर लकीर नहीं खींचेंगे। पाठशाला में वेदों का अध्ययन नियमित रूप से करेंगे। रात में नृत्यशाला में सिखाया पाठ परिश्रमपूर्वक तैयार करेंगे।

रवि वर्मा ने ये सब शर्तें स्वीकार कर ली थीं। फलतः सब उनसे प्रसन्न थे।

एक दिन की बात है।

राजा राज वर्मा रवि वर्मा के बनाये कुछ चित्रों को लेकर अपनी बहन उमा के पास गये। वे रवि वर्मा की मां भी थीं।

राजा राज वर्मा ने अपनी बहन से कहा, "देखो उमा, रवि ने कितने सुंदर चित्र बनाये हैं। इतनी छोटी उम्र में इतना कुशल चित्रकार। इस प्रकार की सुंदर रंग-संगति! यह बहुत कठिन काम है। पर तुम्हारे बेटे ने यह सब सीख लिया है। उमा, तुम्हारा बेटा बड़ा गुणी है। एक दिन वह बड़ा चित्रकार बनेगा। बस, उसे अवसर मिलना चाहिए।"

मां ने बेटे के बनाये चित्र देखे। वे प्रसन्न हो उठीं। उनका मन गर्व से भर गया। रवि वर्मा के पिता नीलकांतन भी उस समय वहाँ थे। उन्हें रवि वर्मा का चित्रकार बनना जरा नहीं सुहा रहा था। उन्होंने तीखे स्वरों में कहा, "रवि चित्रकार बन गया तो क्या होगा?"

राजा राज वर्मा हंस पड़े। उन्होंने उन्हें समझाया कि चित्रकार बनना कोई बुरी बात नहीं है। वह भी एक कला है। फिर वे तरह-तरह के तर्क देकर नीलकांतन को समझाते रहे। उनके तर्कों के सामने नीलकांतन कुछ बोल नहीं पाये।

इस तरह दिन बीत रहे थे।

रवि वर्मा की चित्रकला में दिन-प्रतिदिन निखार आता जा रहा था।

रवि वर्मा अब तेरह वर्ष के किशोर थे। उनका हाथ सध गया था। उनकी कल्पना चित्र-फलक पर भलीभांति उतरने लगी थी।

तभी एक घटना घट गयी। हुआ यह कि त्रावणकोर के नरेश ने राजा राज वर्मा को तिरुवनन्तपुरम् आने के लिए संदेश भेजा। यह राजाज्ञा थी। टाला जाना कठिन था। राजा राज वर्मा स्वयं भी तिरुवनन्तपुरम् जाने का विचार कर रहे थे। त्रावणकोर नरेश के संदेश ने उनका उत्साह और बढ़ा दिया था। त्रावणकोर नरेश ने संदेश भिजवाया था कि यदि घराने में कोई अच्छा लड़का हो, तो साथ में उसे भी लेते आयें। यह संदेश पाते ही राजा राज वर्मा की आँखो में रवि वर्मा का चेहरा घूम गया। वह उपयुक्त रहेगा! कोच्चू सुशील है, सुशिक्षित है, ललित कलाओं का उसे ज्ञान है। वह गायन जानता है, कथकलि नृत्य भी जानता है। यही नहीं, चित्रकार भी है। त्रावणकोर नरेश उससे अवश्य प्रभावित होगे। राजा राज वर्मा ने निश्चय कर लिया। वे कोच्चू को भी तिरुवनन्तपुरम् ले जायेगे। पर बहन उमा से पूछना आवश्यक था। आखिर, कोच्चू उनका ही तो बेटा था।

राजा राज वर्मा बहन के पास गये। उन्हें बताया कि तिरुवनन्तपुरम् पहुंचने का निमंत्रण मिला है। त्रावणकोर नरेश ने बुलाया है। साथ ही एक और संदेश भेजा है। घराने मे कोई अच्छा लड़का हो, तो उसे भी साथ ले आयें।

"फिर", बहन उमा ने पूछा।

"फिर क्या! जाना तो पड़ेगा ही। सोचता हूं, साथ में कोच्चू को भी ले

जाऊं। तिरुवनन्तपुरम् पहुंचकर वह कुछ सीखेगा ही। यहां किलिमानूर में, जो कुछ सीखना था, वह सीख चुका। तिरुवनन्तपुरम् में उसका नये-नये लोगों से परिचय होगा। उसे नये-नये अनुभव होंगे और इन अनुभवों से उसे जो ज्ञान मिलेगा, वह स्थायी होगा। उनसे उसे लाभ ही मिलेगा।"

उमा क्या कहती! भाई की बात काट भी नहीं सकती थी। उन्होंने बेटे की यात्रा की तैयारियां शुरू कर दीं। उसके लिए नये-नये वस्त्र सिलवा दिये।

और एक दिन रवि वर्मा अपने मामा के साथ तिरुवनन्तपुरम् की यात्रा पर चल दिये।

किलिमानूर से तिरुवनन्तपुरम्

सजी-धजी, आरामदेह बैलगाड़ी। पगडंडी पर दौड़ते बैल, उनके गले में बंधी घंटियो की टुन-टुन।

रवि वर्मा तरह-तरह की कल्पनाओं में डूब गये। इसके पूर्व वे कभी तिरुवनन्तपुरम् नहीं गये थे। कैसा होगा तिरुवनन्तपुरम्! कैसे होंगे वहां के लोग! कैसे होंगे त्रावणकोर के नरेश! रवि वर्मा सारे रास्ते तरह-तरह की कल्पनाओं में डूबते-उतरते रहे। कभी-कभी किसी पक्षी को देखकर उनका मन प्रफुल्लित हो उठता। सोचते, कितने स्वाधीन हैं ये पक्षी। जब मन चाहा पंख पसारा और उड़ चले आकाश में।

राह में मामा राजा राज वर्मा उन्हें त्रावणकोर नरेश के बारे में बताते रहे। उन्होंने बताया, त्रावणकोर नरेश का नाम है—आयिल्यम तिरुनाल। वे कला-प्रेमी हैं। कला की परख करना जानते हैं। वे उदार भी हैं। उनसे मिलते समय घबराना नहीं। जो पूछें, विनम्रता से निर्भीकतापूर्वक उत्तर देना।

इसी तरह की और भी सीखें।

धीरे-धीरे रास्ता कटता गया। तिरुवनन्तपुरम् पास आता गया।

और कुछ समय बाद वे तिरुवनन्तपुरम् में थे।

धीरे-धीरे बैलगाड़ियां राजमहल के विशाल अहाते के द्वार के पास जाकर रुक गयीं। इस अहाते में किलिमानूर घराने की एक हवेली थी—भदात मदहोम। किलिमानूर घराने के लोग तिरुवनन्तपुरम् आते, तो वहीं ठहरते थे।

राजा राज वर्मा इसी हवेली की ओर बढ़े। इसी बीच उन्होंने त्रावणकोर नरेश के पास अपने आगमन की सूचना भिजवा दी।

भदात मदहोम एक सुंदर हवेली थी। उसमें सब तरह का आराम था। राजा राज वर्मा अपने भांजे और सेवकों के साथ उसी में ठहर गये।

अगले दिन राजा राज वर्मा रवि को लेकर राजमहल में गये। इसके पूर्व रवि वर्मा ने कभी कोई राज प्रासाद नहीं देखा था। विशाल कक्ष। झाड़-फानूसों से सजे-धजे। ऊँचे-ऊँचे स्तंभ। सुंदर मेहराबे। सब कुछ भव्य और आकर्षक।

लेकिन रवि वर्मा को इन सबसे भव्य लगा, राजा आयिल्यम तिरुनाल का व्यक्तित्व। गोल चेहरा, बड़े-बड़े नेत्र, पीछे की ओर काढ़े गये काले रेशम-जैसे केश। शरीर पर अगरखा। गले में मोतियों की माला। राजा आयिल्यम तिरुनाल ने मुसकराकर राजा राज वर्मा की ओर देखा। मानो पूछना चाह रहे थे—'आनंद से तो हो।' उनकी दृष्टि रवि वर्मा पर भी पड़ी।

तभी राजा राज वर्मा ने विनम्रता से झुककर अभिवादन किया। रवि वर्मा ने भी मामा का अनुकरण किया। झुककर नमस्कार के लिए हाथ जोड़ दिये।

राजा आयिल्यम तिरुनाल ने कहा, "राजा राज वर्मा, हमारा संदेश पाकर

आप आये, यह अच्छा किया। हां, यह बालक कौन है?" रवि वर्मा की ओर देखते हुए उन्होंने पूछा।

"महाराज, यह मेरा भांजा रवि है। मेरी बहन उमांबा का पुत्र। इसे भी मैं आपके दर्शनों के लिए साथ लेता आया।" राजा राज वर्मा ने विनम्रता से कहा।

"अच्छा किया ।" राजा आयिल्यम तिरुनाल ने स्नेह भरे स्वरों में कहा।

कुछ देर बातचीत करने के पश्चात राजा राज वर्मा रवि के साथ हवेली लौट आये।

राजमहल के पास ही एक मंदिर था। पद्मनाभ स्वामी का। यह मंदिर बहुत ही भव्य था। उसका गोपुरम् सात मंजिल का था। प्रत्येक मंजिल पर देवी-देवताओ की सुंदर मूर्तियां थीं। मंदिर में एक प्रदक्षिणा-पथ भी था। उसके दोनों ओर सुंदर स्तंभ थे। इन स्तंभों पर स्त्रियों की सुंदर प्रतिमाएं थीं। ये प्रतिमाएं हाथों में दीपक लिये हुए थीं। मंदिर के निकट ही एक विशाल जलाशय था। चारों ओर सीढ़ियों से बंधा।

रवि वर्मा के लिए यह एक नया संसार था। चारों ओर राजसी वैभव बिखरा हुआ था। चार दिन कैसे बीत गये, उन्हें पता ही नहीं लगा। अब पुनः किलिमानूर लौटना था।

किलिमानूर लौटने के पूर्व राजा राज वर्मा महाराज तिरुनाल से मिलने गये। महाराजा ने प्रेम से उनका स्वागत किया। फिर खिन्न स्वरों में बोले, "राजा राज वर्मा, खेद है कि संबंध जुड़ नहीं पायेगा। यह सब कहते हुए मुझे संकोच हो रहा है।"

"महाराज, निस्संकोच कहिए। मुझे किंचित दुःख नहीं होगा।" राजा राज वर्मा ने विनम्रता से कहा।

"राजा राज वर्मा, मुझे तो आपका भांजा रवि वर्मा बहुत पसंद आया।

वह प्रतिभा संपन्न है, विनम्र है। उसका रंग जरूर सांवला है, पर वह है रूपवान। लेकिन राजघराने की स्त्रियो ने केवल उसका रंग ही देखा। वे इसी कारण विवाह-संबंध नहीं जोड़ना चाहतीं। मेरा बस चलता तो मैं अवश्य रवि का विवाह तुरंत कर देता।" महाराजा ने कहा।

राजा राज वर्मा ने कहा, "महाराज, रवि पर आपकी कृपा भर चाहिए। राजघराने में उसका विवाह-संबंध हो या न हो, यह विशेष महत्त्वपूर्ण नही। वह एक होनहार बालक है। मलयालम, संस्कृत जानता है। चित्रकारी के प्रति उसका बचपन से झुकाव है। आपकी छत्रछाया में रहेगा। उसका विकास ही होगा। किलिमानूर छोटी जगह है। वहा वह जो सीख सकता था, सीख चुका। अब तो तिरुवनन्तपुरम् में ही उसकी प्रतिभा को निखार मिलेगा।"

महाराजा तिरुनाल कुछ क्षण सोचते रहे। फिर बोले, "ठीक है। मैं तुम्हें शीघ्र ही सदेश भेजूंगा।"

महाराज तिरुनाल से विदा लेकर राजा राज वर्मा भदात मद्होम लौट आये। सेवकों से किलिमानूर लौटने की तैयारी करने को कहा।

अब फिर वही बैलगाड़ी से यात्रा। रवि वर्मा को घर लौटने की खुशी थी। वे लपककर बैलगाड़ी में जा बैठे।

गाड़ीवान ने बैलों को हुकारा। रास खींची। बैल दौड़ पड़े। उनके गले में बंधी घटियां टुनटुना उठी।

धीरे-धीरे तिरुवनन्तपुरम् की ऊंची-ऊंची इमारतें आंखों से ओझल होने लगीं।

किलिमानूर लौटकर रवि वर्मा प्रफुल्लित हो उठे। अपना घर, आखिर अपना घर होता है। उसकी दीवारें प्राणहीन होती हैं, फिर भी लगता है, जैसे वे प्राणवान हैं। हमारे सुख-दुख की संगी-साथी हैं। किलिमानूर के चप्पे-चप्पे से रवि वर्मा को प्यार था। उन्होंने मंगला को राज प्रासाद के बारे में बताया। महाराजा आयिल्यम तिरुनाल के स्वभाव की प्रशंसा की। उसे यह भी बताया कि पद्मनाभ स्वामी का मदिर कितना भव्य है। उसके गोपुरम् में कितनी सुंदर मूर्तियां हैं। मां को भी उन्होंने यही बातें बतलायी। अपने दोस्तों को भी तिरुवनन्तपुरम् के संस्मरण सुनाये।

किलिमानूर में रवि वर्मा ने फिर वही दिनचर्या अपना ली। प्रातः वही वेदों का अध्ययन, फिर चित्रकारी। रात कथकलि का अभ्यास।

रवि वर्मा अधिक दिनो तक किलिमानूर में नहीं रह पाये।

कुछ समय बाद फिर से महाराजा तिरुनाल का संदेश आया। उन्होंने रवि वर्मा को तिरुवनन्तपुरम् बुलवाया था।

हुआ यह था कि महाराजा आयिल्यम तिरुनाल रवि वर्मा से बेहद प्रभावित हुए थे। वे चाहते थे कि उनके संरक्षण में रवि वर्मा प्रगति करे।

एक दिन फिर तिरुवनन्तपुरम् की यात्रा शुरू हुई। इस बार फिर रवि वर्मा अपने बनाये तीन चित्र भी साथ ले गये। ये चित्र वे महाराजा तिरुनाल को भेंट करना चाहते थे।

रास्ते भर रवि वर्मा तरह-तरह की कल्पनाओं में खोये रहे।

बैलगाड़ी पगडंडी पर दौड़ रही थी। बैलों के गले में बंधी घंटियां टुनटुना कर एक मधुर संगीत पैदा कर रही थीं। अब तिरुवनन्तपुरम् का रास्ता जाना-पहचाना लग रहा था। रास्ते में खड़े पेड़ परिचित मालूम पड़ रहे थे।

तिरुवनन्तपुरम् पहुंचकर वे सब भदात मदहोम में ही ठहरे। तिरुवनन्तपुरम् में वही तो किलिमानूर घराने की हवेली थी।

दूसरे दिन राजा राज वर्मा रवि वर्मा के साथ महाराजा तिरुनाल से मिलने गये। महाराजा ने उनका स्नेह से स्वागत किया। कुशल-क्षेम पूछी। रवि वर्मा ने भी महाराजा को विनम्रतापूर्वक नमस्कार किया। फिर अपने बनाये तीनों चित्र महाराजा को भेंट किये।

महाराजा ने तीनों चित्रों को बड़े चाव से देखा। इनमें से दो चित्र देवियों के थे। तीसरा चित्र एक शिशु का था।

महाराजा कला के पारखी थे। चित्र देखकर वे प्रभावित हुए। उन्हें आश्चर्य हुआ, चौदह वर्ष का यह बालक और चित्र ऐसे, जैसे किसी अनुभवी, कुशल चित्रकार ने बनाये हों। उन्होंने प्रशंसा भरी नजरों से रवि वर्मा की ओर देखा। इन चित्रों की प्रशंसा की।

राजा राज वर्मा ने कहा, "महाराज, आप कला के पारखी हैं। चित्रकला के ज्ञाता हैं। आपने जान ही लिया होगा। इस किशोर में प्रतिभा है। योग्य गुरु इसकी चित्रकला को और निखार सकता है। मैं तो साधारण चित्रकार हूं। जो कुछ भी मुझे आता था, मैंने इसे सिखा दिया। अब इस पर आपकी कृपा हो जाए। आपके संरक्षण में यह बहुत उन्नति करेगा, मुझे पूरा विश्वास है।"

महाराजा आयिल्यम तिरुनाल ने मुस्कराकर कहा, "राजा राज वर्मा, अब आपका भांजा रवि मेरे संरक्षण में है। आप चिंता न करें। अपने यहां रंगशाला है। राज चित्रकार है। बाहर के भी चित्रकार आते रहते हैं। अपने ग्रंथालय में चित्रकला पर बहुत-सी पुस्तकें हैं। रवि को इन सब का लाभ मिलेगा। आप निश्चिंत रहें।"

7. [illegible]

रवि वर्मा के जीवन का अब एक नया अध्याय शुरू हुआ।

अब तिरुवनन्तपुरम् ही उनका नया घर था।

राजा राज वर्मा ने हवेली में रवि वर्मा के निवास की पूरी व्यवस्था करा दी। फिर वे एक दिन किलिमानूर लौट गये।

जाने के पूर्व उन्होंने रवि वर्मा से कहा, "बेटा, यह तुम्हें नया अवसर मिला है। इसके क्षण-क्षण का उपयोग करना। एक बात ध्यान रखना। विनम्र रह कर ही बहुत कुछ सीखा जा सकता है। ज्ञान तो आकाश की भांति है। उसकी कोई सीमा नहीं। अपनी कला पर कभी घमंड न करना। यह न सोचना कि तुम्हें सब कुछ आ गया है। कारण, एक पूरा जीवन भी कम है, किसी कला को सीखने के लिए।"

यह कहते-कहते राजा राज वर्मा का गला भर आया। रवि वर्मा से उन्हें बेहद प्यार था।

रवि वर्मा भी भावुक हो उठे।

मामा किलिमानूर जा रहे हैं। अब यहां अकेला ही रहना पड़ेगा। क्षणभर के लिए उनका मन आशंका से भर उठा। पर उन्होंने स्वयं को संभाला। कुछ पाने के लिए कुछ न कुछ खोना पड़ता है। अगले क्षण उनका आत्मविश्वास लौट आया। बोले, "मामाजी, आप मेरे गुरु हैं। मैं आपकी बातों को सदा ध्यान मे रखूंगा। आपकी बतायी सीखों पर चलूंगा। मै प्रयत्न करूंगा कि यहां जितना ज्ञान प्राप्त कर सकूं, कर लूं।"

मामा राजा राज वर्मा ने कहा, "रवि, हर चुनौती का हँसकर सामना करना। विपत्ति को मित्र समझना। हर अभिशाप में एक वरदान भी छिपा होता है। विपत्तियां तो हमें कुछ सिखाने आती हैं। उनसे जूझकर हम नयी शक्ति पाते हैं।"

इस तरह समझा-बुझाकर राजा राज वर्मा किलिमानूर लौट गये।

अब इस भव्य हवेली मे रवि वर्मा अकेले रह गये। बड़े-बड़े कक्ष उन्हें अभी पराये ही लग रहे थे। अभी उनसे आत्मीयता नहीं हुई थी।

अकेलेपन में रवि वर्मा को किलिमानूर की बहुत याद आती थी। मां की, मंगला की, पिता की, मित्रो की याद कर उनका मन उदास हो जाता। अपनी उदासी मिटाने के लिए वे पद्मनाभ स्वामी के मंदिर में चले जाया करते। वहा की मूर्तियों को देखा करते। कभी-कभी वे विशाल सरोवर की सीढ़ियो पर बैठ जाते। उसके जल मे तैरता मंदिर का प्रतिबिंब उन्हें बेहद भला लगता। वे सोचते, यदि इस दृश्य को चित्र में उतार लिया जाए तो!

और चित्र, चित्रकला की बात याद आते ही उनका अकेलापन दूर हो जाता। वे सोचते, एक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए ही तो उन्होंने घर छोड़ा है। माता-पिता, बहन, मामा, मित्रो से अलग हुए हैं। यह विचार आते ही उनकी उदासी दूर हो जाती। वे अपने में एक नयी स्फूर्ति अनुभव करने लगते।

महाराजा आयिल्यम तिरुनाल जानते थे कि उन्होंने बहुत बड़ा उत्तरदायित्व ओढ़ा है। एक किशोर को उसके घर से अलग किया है। अब उसकी शिक्षा-दीक्षा, उसके सुख-दुःख का भार उन्हीं पर है। उन्होंने निश्चय किया, वे रवि वर्मा का मार्गदर्शन करेंगे। वयस्क होकर वह एक अच्छा चित्रकार बने, इसके लिए सारे प्रयत्न करेंगे।

महाराज आयिल्यम तिरुनाल ने राज-दरबार में एक राज-चित्रकार नियुक्त किया था। नाम था – रामस्वामी नायकर। महाराजा ने रामस्वामी नायकर को बुलवाया। वे आये तो निर्देश दिया, "किलिमानूर से एक किशोर आया है।

वह राजा राज वर्मा का भांजा है। चित्रकार बनना चाहता है। राजा राज वर्मा उसे जितना सिखा सकते थे, उतना उन्होंने सिखा दिया। मैं सोचता हूँ कि अब आप उसे सिखाए। किशोर होनहार है। उसे चित्रकला का ज्ञान है। उसके हाथ में सफाई है। आपके मार्गदर्शन में वह अवश्य उन्नति करेगा। मुझे पूरा विश्वास है।"

रामस्वामी नायकर ने कहा, "जो आज्ञा, महाराज!"

दूसरे दिन से रवि वर्मा रामस्वामी नायकर के पास जाने लगे। वे राजकीय रंगशाला में जाते। रामस्वामी नायकर को प्रणाम कर एक ओर बैठ जाते। रामस्वामी नायकर का एक शिष्य था—आर्मुखम पिल्लई। शीघ्र ही आर्मुखम से रवि वर्मा की मित्रता हो गयी।

रामस्वामी ने महाराजा की आज्ञा तो मान ली थी, पर रवि वर्मा को कुछ सिखाने का उसका कोई विचार न था। चौदह वर्ष का किशोर उन्हें अपना प्रतिस्पर्धी नजर आता। अब रवि वर्मा की प्रतिभा उन्हें खलने लगी थी। कारण, उनके मन में ईर्ष्या ने जन्म ले लिया था।

ईर्ष्या!

ईर्ष्या व्यक्ति के गुणों का नाश कर देती है। ईर्ष्यालु व्यक्ति हमेशा चिंताओं में घुलता रहता है। उसे मित्र भी शत्रु नजर आने लगते हैं। और रवि वर्मा तो रामस्वामी के मित्र भी नहीं थे। ईर्ष्या तो आत्मीय सबधों में भी दरार डाल देती है।

रामस्वामी को रवि वर्मा जरा भी नही सुहाते। वह बात-बात पर उनकी गलती निकाला करते। कभी-कभी झिड़क भी देते। वे रवि वर्मा को कुछ सिखाना ही नहीं चाहते थे।

रामस्वामी घर से ही रंग तैयार कर लाते थे। इसका भी एक कारण था। वह नहीं चाहते थे कि रवि वर्मा को रंग बनाना आ जाए। वह रंगों की संगति बैठाना जान जाएं।

रवि वर्मा को उनकी इस भावना का पता नही था। वे समझते थे, गुरूजी

स्वभाव से क्रोधी हैं। इसीलिए उन्हें बात-बात पर झिड़क देते हैं। लेकिन गुरू की झिड़की तो लाभ के लिए ही होती है।

रहीम का एक दोहा है—

खैर, खून, खासी, खुशी, बैर-प्रीति मधुपान।
रहिमन दाबै न दबै जानत सकल जहान।।

अर्थात्,

कत्थे का रंग, खून, खांसी, प्रसन्नता, शत्रुता, प्यार-स्नेह और शराब का नशा— ये सब छिपाये नहीं छिपते। लोग जान ही जाते हैं।

रामस्वामी नायकर के मन मे छिपी ईर्ष्या की भावना भी छिपी नहीं रह सकी। ईर्ष्या से ही बैर का जन्म होता है।

रवि वर्मा तो किशोर थे। वे रामस्वामी नायकर की भावना समझ नहीं पाये। हां, महाराजा आयिल्यम तिरुनाल ने अवश्य भांप लिया। राज-चित्रकार अपने किशोर शिष्य को कुछ सिखा नहीं रहा है। उन्होंने संकेत से रामस्वामी नायकर को समझाया भी। लेकिन रामस्वामी का स्वभाव नहीं बदला।

महाराजा तिरुनाल ने सोचा, रामस्वामी से कुछ कहना व्यर्थ है। उन्होंने स्वयं रवि वर्मा की सहायता करने का निश्चय किया। वे जानते थे कि रवि वर्मा रंग बनाना सीखना चाहता है। रामस्वामी उसे रंग बनाना सिखाएंगे नहीं। क्यों नहीं, उसे बने-बनाये रंग ही दे दिये जाएं।

और महाराजा तिरुनाल ने यही किया। उन्होंने बाजार से चित्रकला के रंग मंगवाये। रंग आ गये तो उन्होंने रवि वर्मा को बुलवाया।

महाराजा का संदेश मिलते ही रवि वर्मा महल में पहुंचे। महाराजा ने उन्हें रंगो की पेटिका दी। कहा, "रवि, अब तुम्हें रंगों की कमी नहीं रहेगी। जाओ, सुंदर चित्र बनाओ।"

रंग पाकर रवि वर्मा बहुत खुश हुए। उन्होंने महाराजा को प्रणाम किया और रंग-पेटिका लेकर हवेली वापस आ गये।

8. एक सच्चा मित्र

रंग पाकर रवि वर्मा प्रसन्न थे। अब वे इन रंगों से चित्र बनाने लगे। वे प्रतिदिन की भांति रामस्वामी नायकर के पास भी जाते थे। रामस्वामी का स्वभाव अभी भी नहीं बदला था। वे अक्सर उन्हें झिड़क देते थे। कभी-कभी गुरू के इस व्यवहार से उनका मन खिन्न हो जाता। उन्हें उदासी घेर लेती। तब रामस्वामी का शिष्य आर्मुखम पिल्लई उन्हें धैर्य बंधाता।

एक दिन आर्मुखम पिल्लई ने रवि वर्मा से कहा, "गुरूजी के व्यवहार से तुम निराश न हो। कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो औरों को अपनी कला सिखाना नहीं चाहते। वे उसे गुप्त रखना चाहते हैं। उन्हें भय होता है कि कहीं सीखने वाला उनसे आगे न निकल जाए। पर तुम चिंता न करो। मुझे जो कुछ भी आता है, उसे मैं तुम्हें सिखाऊँगा। ऐसा करूंगा, रात को तुम्हारी हवेली आ जाया करूंगा। इससे गुरूजी को भी पता नहीं लगेगा।"

रवि वर्मा को आर्मुखम की यह योजना पसंद आ गयी। उन्होंने कहा, "आर्मुखम, तुम सच्चे मित्र हो। मैं हर रात तुम्हारी प्रतीक्षा किया करूंगा।"

आर्मुखम वचन का धनी था। वह रामस्वामी नायकर का सारा कार्य करके रात को भदात मदहोम जाता। वहां रवि वर्मा को चित्रकला के बारे में बताता। रवि वर्मा के मन में कई संदेह होते। कई समस्याएं होतीं। वे आर्मुखम से निस्संकोच पूछते। आर्मुखम भी निष्कपट भाव से उनका उत्तर देता। फल अच्छा ही हुआ। चित्रकला के बारे में रवि वर्मा की समझ बढ़ने लगी।

एक दिन की बात है। महाराजा आयिल्यम तिरुनाल ने रवि वर्मा को महल में बुलवाया। रवि वर्मा तुरंत गये। महाराजा को प्रणाम किया।

महाराजा ने रवि वर्मा को स्नेह से बैठने के लिए कहा। फिर उन्होंने उन्हें कुछ चित्र भेट किये। ये चित्र यूरोपीय चित्रकारों के थे, विशेषकर इतालवी चित्रकारो के।



एक मलयाली युवती

(साभार : श्री भवानी चित्र संग्रहालय, औंध, सतारा)

चित्र पाकर रवि वर्मा की प्रसन्नता की सीमा न रही। महाराजा ने कहा, "रवि, ये चित्र तुम्हारे लिए हैं। घर ले जाकर इन्हें ध्यान से देखो। सोचो, चित्रकार ने किस तरह कल्पना की होगी, कैसे ये चित्र बनाये होंगे। कैसे इनमें रंग भरे होंगे। यह भी देखो कि चित्रकार ने किसी खास जगह के लिए कोई खास रंग ही क्यों चुना है! क्या कोई कारण होगा! ये महान चित्रकारों के मूल-चित्रों की छपी हुई अनुकृतियां हैं। अब तुम भी इनकी अनुकृति करने का प्रयत्न करो।"

क्षण भर रुककर महाराजा तिरुनाल ने कहा, "रवि, अभ्यास ही सबसे बड़ा गुरू है। सतत अभ्यास करते रहो। एकलव्य की कथा तो याद है।"

"जी महाराज!" रवि वर्मा ने उत्तर दिया।

"तो जब एकलव्य केवल गुरू का ध्यान कर, निरंतर अभ्यास कर, धनुर्धर बन सकता है, तो तुम भी चित्रकार बन सकते हो। जाओ!" महाराजा तिरुनाल ने स्नेह से कहा।

रवि वर्मा वे सारे चित्र लेकर अपनी हवेली में आ गये।

हवेली में आकर उन्होंने ध्यान से एक-एक चित्र देखना शुरू किया।

ओह! कितने सुंदर चित्र हैं।

कितना सुंदर रंग प्रयोग है।

रवि वर्मा मन ही मन सोचते।

चित्र ही उनके गुरू थे! रवि वर्मा ने राज-चित्रकार रामस्वामी नायकर से तैलरंगों के प्रयोग की जानकारी चाही थी। वे उनसे चित्रकला की नयी तकनीक सीखना चाहते थे। पर रामस्वामी से उन्हें निराशा ही मिली थी। हां, आर्मुखम पिल्लई ने अवश्य कुछ सिखाया था।

पहले मामा राजा राज वर्मा।

फिर आर्मुखम पिल्लई।

और अब ये चित्र!

रवि वर्मा इन विदेशी चित्रों की अनुकृतियां बनाने लगे।

एक दिन महाराजा तिरुनाल के पुस्तकालय में उन्हें एक पुस्तक मिली। पुस्तक का नाम था—'द हिंदू पैथन।' इसके लेखक और चित्रकार थे—मेजर एडवर्ड मूर। इस पुस्तक में छपे कुछ चित्र रवि वर्मा को बहुत भाये।

इसमें एक चित्र सूर्य देवता का था।

सात अश्वों के रथ पर सवार सूर्य। हाथ में सातों अश्वों की वल्गा अर्थात रास।

इस चित्र में लाल, सिंदूरी, पीले रंगों का अदभुत प्रयोग किया गया था।

रवि वर्मा काफी देर तक इस चित्र को देखते रहे।

इस पुस्तक में एक और चित्र था—कृष्ण को दूध पिलाती देवकी का।

इस चित्र को देखकर रवि वर्मा रोमांचित हो उठे।

देवकी के चेहरे पर वात्सल्य भाव उमड़ा पड़ रहा था। कृष्ण का भोला मुख पुलकित कर देता था।

रवि वर्मा सोचते, कैसे हैं ये चित्रकार, जो इतने सुंदर भावना-प्रधान चित्र बना लेते हैं।

फिर उनके मन में संकल्प जन्म लेता। वे भी ऐसे ही सुंदर चित्र बनाएँगे। भले ही उन्हें कोई न सिखाये। वे सतत अभ्यास करेंगे। धीरज नहीं खोएँगे। एक बार गलती करेंगे, दो बार गलती करेंगे। कभी न कभी तो वे सफल होंगे ही। वे अपनी ही गलतियों से सीखेंगे। आगे बढ़ेंगे।

यदि कोई पक्का निश्चय कर ले। उस निश्चय को पूरा करने में ईमानदारी से जुट जाए तो सफलता मिलती ही है!

कहा भी गया है—

व्हेयर देयर इज़ ए विल

देयर इज़ ए वे।

—जहाँ चाह वहाँ राह!

अब तो रामस्वामी नायकर की उपेक्षा रवि वर्मा के संकल्प को और दृढ़ करती। महाराजा आयिल्यम तिरुनाल का प्रोत्साहन उन्हें निराश नहीं होने देता।

10. फिर त्रिवेन्द्रम में

वही बैलगाड़ी की यात्रा। वही घंटियों की टुनटुन। रवि वर्मा का मन कुछ खिन्न भी था। कुछ प्रसन्न भी। एक ओर पत्नी से विदा लेने का दुख। दूसरी



एक मराठी महिला

(साभार : राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली)

और किलिमानूर लौटने की प्रसन्नता।

किलिमानूर जहां मां, पिता, बहन, भाई, मामा और उनके दोस्त थे।

राह में कभी उन्हें किलिमानूर का ख्याल आता। कभी मावलेकिरा का। मावलेकिरा में उनकी पत्नी थी। वहां भी उन्होंने दो वर्ष बिताये थे। पर कभी-कभी आदमी विवश हो जाता है। कई बार परिस्थितियां ऐसी बन जाती हैं कि आदमी कुछ कर नहीं पाता। विवश हो जाता है।

इस समय रवि वर्मा भी इसी तरह विवश थे।

विवश होना बुरी बात नहीं है। जिन परिस्थितियों पर अपना बस नहीं, उनके सामने विवश होना ही पड़ता है। पर जो साहसी होते हैं, जिनके मन में कोई लक्ष्य होता है, वे विवश होकर भी निराश नहीं होते। वरन, वे सोचते हैं कि उन विवशताओं से कैसे मुक्ति पायी जाए। जिन परिस्थितियों ने विवश बनाया है, उन पर किस तरह विजय प्राप्त की जाए। निराशा से कभी किसी को कुछ नहीं मिला है। वह तो एक अंधेरी सुरंग की तरह होती है। पर विवेक से इस अंधेरी सुरंग में भी प्रकाश किया जा सकता है। साहस से, बुद्धिमानी से निराश को भी आशा में बदला जा सकता है। जो लोग अपना लक्ष्य नहीं भूलते, जो उसे पाने के लिए सतत प्रयत्नशील होते हैं, निराशा उनका मार्ग रोक नहीं सकती।

रवि वर्मा के सामने भी एक लक्ष्य था। चित्रकला में निपुणता प्राप्त करने का। किलिमानूर पहुंचकर उनके मन में नया उत्साह जाग गया और यह उत्साह जाग पाया राजा राज वर्मा की रंगशाला को देखकर। इसी रंगशाला में तो उन्होंने मामा से रंग तैयार करना सीखा था। इसी रंगशाला में तो उनकी कला निखरी थी।

बस, रवि वर्मा ने निश्चय कर लिया। जो बीत गया, सो बीत गया। अब वे मावलेकिरा को भूल जाएंगे। कितना कुछ करना है। कितने सारे विषय हैं, जिन पर चित्र बनाने हैं।

रवि वर्मा को लगा, वे जैसे फिर से किशोर बन गये हैं। वही उत्साह, चित्र बनाने की मन में वही ललक।

रंगशाला में चित्रकारी की सारी सामग्री रखी हुई थी। बस, उन्हें फलक पर आकृतियां बनानी थीं। उनमें रंग भरने थे। रंग जो चित्त को प्रसन्न करते हैं। चित्र जो बनने पर संतोष देते हैं।

रवि वर्मा पूरे उत्साह से चित्र बनाने में जुट गये।

***　　　　***

रवि वर्मा की देवी-देवताओं पर बड़ी आस्था थी। बचपन से ही उन्हें पूजा-पाठ के संस्कार मिले थे। इसी तरह बचपन से ही उन्हें प्रकृति से प्यार था। पूर्व में प्रातः निकलता सूर्य, शाम को पश्चिम में डूबता सूर्य। चहचहाते पक्षी। जुगाली करते घरेलू पशु। वनों के हिंसक जीव। इन सभी ने रवि वर्मा को लुभाया था। अब वे कल्पना से इनके ही चित्र बनाते।

माता-पिता, बहन, मामा उनके बनाये चित्रों को देखते। उन्हें आश्चर्य होता, किस भांति बना लेते हैं वे इतने सुंदर चित्र। उनकी देखादेखी मंगला को भी चित्रकला का शौक उत्पन्न हो गया।

रवि वर्मा के दो भाई और थे। राज वर्मा और गोदा वर्मा। उनमें से राज वर्मा को भी चित्रकला ने आकर्षित किया। गोदा वर्मा का झुकाव संगीत के प्रति था।

परिवार में रहकर रवि वर्मा सारी मानसिक व्यथा भूल गये। अब वे अपने में एक नयी स्फूर्ति का अनुभव कर रहे थे।

इसी तरह दिन बीतने लगे।

अचानक एक दिन रवि वर्मा को महाराजा आयिल्यम तिरुनाल का संदेश मिला। उन्होंने उन्हें तिरुवनन्तपुरम् बुलवाया था।

हुआ यह था कि महाराजा तिरुनाल को रवि वर्मा के वैवाहिक जीवन की कहानी मालूम पड़ गयी थी। उन्हें सूचना मिल गयी थी कि पति-पत्नी में मतभेद हो गया है। रवि वर्मा ने मावलेकिरा छोड़ दिया है। अब वे किलिमानूर में अपने माता-पिता और मामा के पास रहते हैं। महाराजा तिरुनाल एक बात जानते थे। किलिमानूर में रहने से रवि वर्मा का विकास नहीं हो पाएगा। उचित मार्गदर्शन न मिलने से भटकाव भी आ सकता है। इसीलिए उन्होंने उन्हें तिरुवनन्तपुरम् बुलवाया था।

महाराजा तिरुनाल का संदेशा पाकर रवि वर्मा तिरुवनन्तपुरम् पहुंचे। वही राजमहल। वही लोग। वही अपनी हवेली।

रवि वर्मा महाराजा तिरुनाल से मिलने गये। प्रणाम किया। आज्ञा पूछी।

महाराजा तिरुनाल ने देखा, रवि वर्मा अब पूरी तरह वयस्क हो गये हैं। उनका व्यक्तित्व और भी अधिक आकर्षक हो गया है। उन्होंने रवि वर्मा से उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछा। माता-पिता और मामा के बारे में पूछा। फिर कहा, "तुमने मावलेकिरा छोड़ दिया है। यह मुझे ज्ञात हुआ। हो सकता है, तुम्हारा मन वहां न लगा हो। पर तुम्हें तिरुवनन्तपुरम् ही वापस आ जाना था।"

रवि वर्मा मौन रहे।

' महाराजा तिरुनाल ने आगे कहा, "कोई बात नहीं। अब तुम यहीं रहोगे। यहीं रहकर चित्रकला की साधना करोगे।"

फिर महाराजा ने उन्हें समझाया, "रवि, किलिमानूर बहुत अच्छी जगह है। तुम्हारा बचपन वहां बीता है। उससे लगाव होना स्वाभाविक है। पर अब किलिमानूर में रहकर तुम अधिक नहीं सीख पाओगे। इसीलिए चाहता हूं कि तुम तिरुवनन्तपुरम् में रहो। यहां राजकीय रंगशाला है। पुस्तकालय है। उसमें चित्रकला के संबंध में आधुनिक पुस्तकें हैं। फिर यूरोप के चित्रकारों के बनाये चित्रों की मुद्रित अनुकृतियां भी यहां हैं। विदेशी चित्रकार भी यहां आते रहते हैं। यहां रहकर तुम काफी सीख सकोगे। हां, जब मन ऊब जाए तब किलिमानूर चले जाना कुछ दिनों के लिए। मावलेकिरा भी चले जाना कभी-कभी। आखिर, वहां तुम्हारी पत्नी है।"

महाराजा तिरुनाल की बातों ने रवि वर्मा को सांत्वना दी। एक नयी दृष्टि भी दी। महाराजा ठीक कहते हैं। तिरुवनन्तपुरम् में रहकर चित्रकला की साधना अच्छी तरह की जा सकती है। यहां एक नहीं, अनेक अवसर हैं। नये-नये लोगों से संपर्क की भी सुविधा है।

रवि वर्मा ने किलिमानूर खबर भेज दी। अब वे तिरुवनन्तपुरम् में ही रहेंगे। मावलेकिरा में पत्नी को भी सूचना भिजवा दी।

अब वे अपनी हवेली में रहकर उसके एक कक्ष में चित्र बनाने लगे। कभी वे भ्रमण को निकल जाते। बाजार में घूमा करते। साधारण स्त्री-पुरुषों के जीवन को देखते। उनकी मुखाकृतियों का अध्ययन करते। कभी वे वहीं रेखाचित्र बनाने लगते। कभी हवेली लौटकर रेखाचित्र बनाते।

वे पुस्तकालय में भी जाते। चित्रकला विषयक पुस्तकें पढ़ते। पुराणों का अध्ययन करते। रामायण, महाभारत, भागवत के प्रसंगों पर विचार-मनन किया करते।

वे पूरी तरह कला साधना में डूब गये। अब मन में निराशा का कहीं नाम-निशान तक न था। हर नया दिन एक नया उत्साह लेकर आता।

ऐसा ही होता है। जब तक हम कुछ नहीं करते, केवल सोचा करते हैं, तब तक भटकते रहते हैं। तब मन स्थिर नहीं रहता। बहुधा निराशा ही मन को घेर लेती है। निराशा हमारे आत्मविश्वास में घुन की तरह लग जाती है। और जब आत्मविश्वास ढह जाता है तो मनुष्य अपने को असहाय पाने लगता है। इसीलिए कर्म पर जोर दिया गया। जो व्यक्ति कर्म करता रहता है, अपने कार्य में जुटा रहता है, उसके पास निराशा तो फटकती भी नही।

तिरुवनन्तपुरम् में रवि वर्मा के जीवन से निराशा पूरी तरह दूर हो चुकी थी। अब उनमें नयी आशा थी। नया उत्साह था। नया आत्मविश्वास था।

एक दिन की बात है।

महाराजा आयिल्यम तिरुनाल ने रवि वर्मा को महल बुलवा भेजा।

रवि वर्मा तुरंत पहुंचे।

उन्होंने देखा, महल में महाराजा के पास एक गोरे सज्जन खड़े हैं। रवि वर्मा ने महाराजा को नमस्कार किया। फिर मौन होकर सोचने लगे आखिर, महाराजा साहब ने क्यों बुलवाया है।

उन्हें पता नहीं था कि वह एक विदेशी चित्रकार हैं।

उस चित्रकार का नाम था—थ्योडर जेनसेन। वह हॉलैंड का निवासी था और महाराजा के पास राज-परिवार के सदस्यों के चित्र बनाने के लिए आया था।

उन दिनों यूरोप के अनेक चित्रकार भारत आते रहते थे। यहां ये भारतीय प्राकृतिक दृश्यों का चित्रांकन करते। ये चित्र उनके देश में पसंद किये जाते थे। वे बिकते भी थे। साथ ही ये चित्रकार भारतीय राजा-महाराजाओं के चित्र भी बनाते थे। उनके परिवार के सदस्यों के भी चित्र बनाते थे। ये चित्र उनकी हू-ब-हू तसवीर होते। इसीलिए वे पसंद भी किये जाते थे। इन चित्रकारों को राजा-महाराजाओं से अच्छा पारिश्रमिक भी मिलता था। पुरस्कार और भेंटें भी मिलती थीं। थ्योडर जेनसेन भी ऐसा ही एक चित्रकार था। वह महाराजा आयिल्यम तिरुनाल और उनके राज-परिवार के सदस्यों के चित्र बनाने आया था।

महाराजा चाहते थे कि रवि वर्मा भी थ्योडर जेनसेन से कुछ सीख लें। इसीलिए उन्होंने रवि वर्मा को बुलवाया था। रवि वर्मा के आने पर महाराजा तिरुनाल ने चित्रकार जेनसेन से कहा, "मिस्टर जेनसेन! यह किशोर भी चित्रकला जानता है। अच्छा चित्रकार बनना चाहता है। हमारा संबंधी भी है। मैं चाहता हूं, आप इसे चित्रकला की नयी तकनीक सिखाएं।

फिर उन्होंने उसे रवि वर्मा के बनाये कुछ चित्र दिखाये। ये चित्र देशी रंगों से बने हुए थे। जेनसेन ने उन्हें देखा और उपेक्षा से एक ओर कर दिया। फिर उसने विनम्रता से कहा, "महाराज, क्षमा करें। मैं तो मात्र चित्रकार हूं। चित्रकला की शिक्षा देना शायद, मेरे बस में नहीं। और ऐसे नौसिखिये को तो मैं कुछ सिखा ही नहीं सकता।"

चित्रकार जेनसेन का उत्तर सुनकर महाराजा मुस्करा उठे। बोले, "कोई बात नहीं। पर एक काम तो आप कर ही सकते हैं।"

"कहिए, महाराज।" जेनसेन ने कहा।

"बस, एक कार्य अवश्य कीजिए। जब भी आप राजघराने के किसी व्यक्ति का चित्र बनाएं, उस नवयुवक को अपने पास बैठकर देखने का अवसर दीजिए।"

चित्रकार जेनसेन यह भी नहीं चाहता था। उसने बहाना बनाते हुए कहा, "महाराज, क्षमा करें। चित्र बनाते वक्त एकाग्रता की जरूरत होती है। उस समय मेरे पास कोई होता है तो ध्यान भंग हो जाता है। अतः मैं आपका यह निर्देश भी नहीं मान सकूंगा। क्षमा करें।"

महाराजा तिरुनाल गंभीर हो उठे। उन्हें जेनसेन की बातें अप्रिय लगीं। क्षण भर में उन्होंने एक निर्णय कर लिया। वे बोले, "ठीक है मिस्टर जेनसेन, यदि आपको मेरा सुझाव मंजूर नहीं, तो हमें भी आपके बनाये चित्रों की आवश्यकता नहीं। दीवान जी से मिल लें। वे आपकी वापसी की व्यवस्था करवा देंगे।"

फिर क्षण भर रुककर उन्होंने कहा, "मिस्टर जेनसेन, मेरी समझ में एक बात नहीं आती। भला, एक नवयुवक अपनी उपस्थिति से आपका ध्यान कैसे भंग कर सकता है। आपका तर्क हमारी समझ में तो आता नहीं।"

चित्रकार जेनसेन को यह आशंका नहीं थी कि महाराजा उससे काम ही नहीं कराएंगे। राजा-महाराजाओं के चित्र बनाकर उसे काफी आय हो जाती थी। पुरस्कार व भेंट अलग मिलती थी। चित्रकार जेनसेन ने सोचा, यदि महाराजा अप्रसन्न हो गये तो बड़ी कठिनाई होगी। यह खबर और राजा-महाराजाओं को भी मालूम पड़ेगी। तब तो वे भी चित्र नहीं बनवाएंगे। बड़ी आर्थिक क्षति होगी।

अतः चित्रकार जेनसेन ने फैसला कर लिया। वह इस नवयुवक को अपने पास बैठने की अनुमति दे देगा, पर उसे कुछ सिखाएगा नहीं। उसने विनम्रता से कहा, "महाराज, क्षमा करें। आपको अप्रसन्न करने का मेरा कोई इरादा नहीं था। मैंने तो अपनी बात भर कही थी। आपका आदेश है, तो इसे भी अपने पास बैठा लिया करूंगा।"

महाराजा ने मुस्करा कर कहा, "धन्यवाद, मिस्टर जेनसेन।"

फिर उन्होंने रवि वर्मा से कहा, "रवि, जेनसेन एक कुशल चित्रकार हैं। उनके पास केवल बैठने से ही तुम बहुत कुछ सीख सकते हो। अब जाओ, इस नये अवसर का पूरा-पूरा लाभ उठाओ।"

रवि वर्मा ने महाराजा तिरुनाल और चित्रकार जेनसेन को नमस्कार किया और अपनी हवेली में लौट आये।

xxx xxx

अब रवि वर्मा नियमित रूप से जेनसेन के पास जाने लगे। जेनसेन का कार्य था, राज-परिवार के सदस्यों का चित्र बनाना। जेनसेन मनोयोगपूर्वक अपना कार्य करता था। रवि वर्मा की उपस्थिति से पहले तो वह थोड़ा विचलित हुआ। फिर अभ्यस्त हो गया।

रवि वर्मा भी तन्मय होकर उसे सारा कार्य करते देखते। लेकिन उनका सारा ध्यान एक विशेष बात की ओर होता। वे एकाग्र चित होकर देखते, जेनसेन रंग किस तरह तैयार करते हैं। किन-किन रंगों को मिलाकर नये रंग की सृष्टि करते हैं। धीरे-धीरे वे रंग मिलाने की कला समझने लगे।

तभी एक घटना घट गयी।

महाराजा आयिल्यम तिरुनाल जेनसेन के पास आये। उस समय वह राज-परिवार के एक सदस्य का चित्र बना रहा था।

रवि वर्मा भी पास ही खड़े थे।

महाराजा ने देखा, रवि वर्मा का ध्यान चित्र फलक की ओर नहीं है। वे जेनसेन का कूंची चलाना भी नहीं देख रहे हैं। रवि का सारा ध्यान रंगों की ओर है। जेनसेन किन-किन रंगों को किस तरह प्रयोग में लाते हैं, यही वह देख रहा है।

महाराजा तिरुनाल ने जेनसेन से कहा, "मिस्टर जेनसेन, आपका यह शिष्य कुछ सीख रहा है।"

जेनसेन ने कोई उत्तर नहीं दिया।

महाराजा ने आगे कहा, "मिस्टर जेनसेन, यह लड़का तो आपका चित्रांकन देख ही नहीं रहा है।"

जेनसेन चौंका। उसने आश्चर्य से पूछा, "फिर?"

"इसका ध्यान तो आपके रंगों की ओर है। यह यही देख रहा है कि आप किस तरह रंग तैयार करते हैं।"

जेनसेन गंभीर हो उठा। उसने रुखे स्वरों में कहा, "महाराज, क्षमा करें। कल से यह रंगशाला में नहीं आ सकेगा।"

महाराजा के चेहरे पर मुस्कान तैर गयी। उन्होंने कहा, "ठीक है, नहीं आएगा।"

वे कक्ष के बाहर चले गये।

रवि वर्मा भी उनके साथ कक्ष के बाहर आ गये।

रवि वर्मा को इस घटना पर आश्चर्य भी था। कुछ क्षोभ भी था। वे सोचते, आखिर, चित्रकार अपनी कला को क्यों गोपनीय बनाये रखना चाहते हैं? कला का, ज्ञान का जितना प्रसार हो, उतना ही अच्छा है।

पर वे नहीं जानते थे कि आखिर, चित्रकार क्यों अपनी कला अपने तक सीमित रखते हैं। कारण आर्थिक था। चित्रकार नहीं चाहते थे कि कोई और चित्रकला में प्रवीणता प्राप्त करे। कोई उनका प्रतिद्वंद्वी बन सके। वे चित्रकला पर अपना एकाधिकार चाहते थे।

फिर भी चित्रकार जेनसेन के पास बैठकर रवि वर्मा ने काफी कुछ सीख लिया था।

रवि वर्मा की चित्रकला दिनों-दिन निखर रही थी। थ्योडर जेनसेन की पोर्ट्रेट बनाने की शैली से उन्होंने बहुत कुछ सीखा था। अब वे भी इसी तरह पोर्ट्रेट अर्थात् व्यक्ति-चित्र बनाने की कोशिश करने लगे थे।

उनके पास मेहनत थी, लगन थी, अभाव था तो केवल आधुनिक तरीकों से तैयार रंगों का। परंपरागत तरीके से तैयार किये जाने वाले रंगों का चलन कम हो रहा था। रवि वर्मा अक्सर सोचते, काश, उनके पास आधुनिक तरीकों से तैयार किये गये रंग होते!

एक दिन उनकी यह इच्छा भी पूरी हो गयी।रवि वर्मा की पत्नी पुरुतार्थी रानी लक्ष्मीबाई की छोटी बहन थीं। रानी लक्ष्मीबाई के पति थे केरल वर्मा। वे उच्च कोटि के साहित्यकार थे। ललित कलाओं से भी उन्हें प्यार था। रवि वर्मा की लगन से वे बेहद प्रभावित थे। वे रवि वर्मा की कठिनाइयों को भी समझते थे। जानते थे कि रवि वर्मा आधुनिक रंगों से चित्र बना सकते हैं। पर उनके पास इन रंगों का अभाव है।

अतः एक दिन उन्होंनें मद्रास से रंगों की पेटी मंगवायी। उन दिनों दक्षिण में मद्रास में ही, ये रंग बाजार में मिलते थे। जब रंग तिरुवनन्तपुरम् पहुंच गये तो केरल वर्मा ने उन्हें रवि वर्मा को भेंट कर दिया। कहा, "रवि, तुम्हें इन्हीं रंगों की जरूरत थी! ये रंग तुम्हें भेंट हैं। अब इच्छानुसार चित्र बनाओ। ये रंग खत्म हो जायेंगे तो फिर मंगवा लेंगे।"



हंस की प्रतीक्षा करती दमयंती

(साभार : श्री चित्रकला दीर्घा, तिरुवनन्तपुरम)

रंग पाकर रवि वर्मा की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा। उन्हें जैसे मनचाही वस्तु मिल गयी। उन्होंने केरल वर्मा के प्रति आभार व्यक्त किया और रंग ले लिये।

पर एक समस्या थी। किस का चित्र बनाया जाए! रवि वर्मा बहुत देर सोचते रहे। सहसा उन्हें पुरुतार्थी की बड़ी बहन रानी लक्ष्मीबाई का ध्यान आया। वे रवि वर्मा का बड़ा ध्यान रखती थीं। बिलकुल पुत्र की तरह स्नेह करती थीं। उनके कारण रवि वर्मा को घर की याद अधिक नहीं सताती थी। रवि वर्मा ने तय किया कि वे अपने पहले पोट्रेट के लिए रानी लक्ष्मीबाई से अनुरोध करेंगे। पोट्रेट के लिए व्यक्ति को स्थिर होकर बैठना पड़ता है। काफी देर तक। एक ही मुद्रा में। अर्थात्, एक तरीके से।

रवि वर्मा ने रानी लक्ष्मीबाई से अपने मन की बात कही। वे हंस पड़ीं, 'अरे, मेरा चित्र बनाओगे! नहीं, किसी और का चित्र बनाओ।"

रवि वर्मा ने हठ पकड़ ली। "बनाऊंगा तो केवल आपका चित्र, नहीं तो रंग धरे रहेंगे।"

आखिर, रानी लक्ष्मीबाई ने रवि वर्मा की बात मान ली। उन्होंने कहा, "ठीक है। कामकाज खत्म होने के बाद मैं बैठ जाया करूंगी तुम्हारे सामने। पर एक शर्त है। इस बात का किसी को पता नहीं चलना चाहिए।"

दूसरे दिन से ही रवि वर्मा ने रानी लक्ष्मीबाई का चित्र बनाना शुरू कर दिया। वे मनोयोग से काम मे जुट गये। सात-आठ दिन में चित्र तैयार हो गया। रानी लक्ष्मीबाई ने अपना चित्र देखा। वे बहुत खुश हुईं। इतना सुंदर चित्र तो उस विदेशी चित्रकार ने भी नहीं बनाया था। उन्होने अन्य लोगों को वह चित्र दिखाया। सब ने चित्र की खूब प्रशंसा की। रवि वर्मा को और चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। किसी ने कहा, "ये चित्र निर्जीव नहीं हैं। इसमें प्राण हैं। चेहरे के भाव कितने सुंदर हैं। विदेशी चित्रकारो के चित्रों में भाव नहीं होते। उनके बनाये चित्र केवल नकल भर होते हैं।"

सबने रवि वर्मा के प्रयास की प्रशंसा की। इससे उनका हौसला बढ़ा। उनमें और चित्र बनाने का उत्साह जागा।

XXX XXX

अब उन्होंने राज-परिवार के अन्य सदस्यों के चित्र भी बनाने शुरू किये। यही नहीं, अब उनका ध्यान सामान्य लोगों की ओर भी गया। राह चलते लोग, बाजार में सामान बेचते दुकानदार। सामान खरीदते खरीददार। मंदिर में पूजा के लिए जाते हुए स्त्री-पुरुष। रवि वर्मा इनके रेखाचित्र बनाते। फिर उनमें से कुछ के आधार पर रंगीन चित्र बनाते।

इसी बीच उन्हें कुछ विदेशी चित्रकारों के चित्रों के एलबम भी देखने को मिले। वे ऐसे तीन विदेशी चित्रकारों से बहुत प्रभावित हुए। उनके नाम थे— लुई बोलंगार, गुस्ताव बोलंगार और एडाल्फ बोरक्यू। इनके बनाये चित्रों में रंग-संयोजन बहुत उत्तम था। रवि वर्मा भी इसी तरह के रंग-संयोजन का प्रयत्न करने लगे। शुरू में तो उन्हें सफलता नहीं मिली। पर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। परिश्रम के साथ प्रयत्न में जुटे रहे। उन्होंने अपनी गलतियों को पहचाना। उन्हें सुधारा। फिर प्रयत्न किया। इस तरह अपनी गलतियों से ही उन्होंने सीखा। कहा जाता है कि पहली बार रवि वर्मा ने ही 'प्रिंसिपल ऑफ परस्पेक्टिव' की शुरुआत की। 'प्रिंसिपल ऑफ परस्पेक्टिव' चित्रकला का एक सिद्धांत है। इस सिद्धांत के अनुसार, चित्रकार स्वयं देखे गये दृश्य के अनुसार चित्रांकन करता है। 'हम कोई दृश्य देखते हैं। जो चीजें पास होती हैं, वे बड़ी नजर आती हैं। दूर की चीजें छोटी दिखायी देती हैं। चित्रकार अपने चित्र को इस तरह बनाता है कि चित्र में वह दृश्य ठीक वैसा ही दिखायी देता है, जैसा कि वह है। रवि वर्मा को इस तरह के चित्रांकन में प्रवीणता प्राप्त थी।

रवि वर्मा को धार्मिक संस्कार अपने माता-पिता से मिले थे। बचपन में मां उमा की गोद में बैठकर उन्होंने भक्ति पद सुने थे। शंकराचार्य की

'सौंदर्य-लहरी' सुनी थी। वे ध्यान के श्लोकों का, मंत्रों का पाठ भी करते थे। जब वे वंदना करते तो उन्हें लगता, देवी-देवता उनके पास आ विराजे हैं। वे ध्यान में इन देवी-देवताओं के रूप-स्वरूप की कल्पना करते।

रवि वर्मा स्वभाव से भी सरल थे। वे दुर्व्यसनों से सदा दूर रहते थे। यों, उन दिनों तथाकथित छुआछूत की भावना बहुत अधिक थी। पर रवि वर्मा इन सब बातों को नहीं मानते थे। उनका हृदय उदार था। वे सब की सहायता के लिए सदा तत्पर रहते थे।

अच्छा कलाकार कौन? श्री महावज्र भैरव-तंत्र नामक एक प्राचीन ग्रंथ। उसमें अच्छे कलाकार के गुण बताये गये हैं। इस ग्रंथ के अनुसार कलाकार को अवश्य ही एक अच्छा आदमी होना चाहिए। वह आलसी न हो। कभी क्रोध न करे। विद्वान हो। अपने पर नियंत्रण रखना जानता हो। भक्त हो। उदार हो। उसे किसी प्रकार का कोई लोभ भी न हो।

रवि वर्मा कलाकार की इस कसौटी पर बिलकुल खरे उतरते थे। इसी कारण वे लोकप्रिय भी थे।

रवि वर्मा अब जीवन के चौराहे पर खड़े थे। वे वयस्क हो चुके थे। उनका विवाह भी हो चुका था। अब प्रश्न था कि वे आजीविका के लिए क्या करें? जीवन में कुछ न कुछ काम तो अवश्य ही करना होता है।

रवि वर्मा चित्रकार थे। पर क्या वे चित्रकारी को अपना व्यवसाय बना सकते थे? जिस परिवार के वे थे, उसमें पहले किसी ने ऐसा नहीं किया था। चित्रकारी का शौक एक अलग बात है। उसे आजीविका का साधन बनाना दूसरी बात। और वह भी राजघराने से संबंधित व्यक्ति के लिए। उन दिनों चित्रकारी को राजघराने के योग्य काम नहीं समझा जाता था। फिर एक प्रश्न और था। रवि वर्मा सोचते, क्या एक व्यावसायिक चित्रकार के रूप में वे सफल हो सकेंगे? क्या लोग उन्हें चित्रकार के रूप में मान्यता देंगे? ऐसे ही अनेक प्रश्न थे।

एक दिन रवि वर्मा ने महाराजा तिरुनाल को अपनी समस्या बतायी। कहा कि कोई निर्णय नहीं कर पा रहा हूं। क्या करूं? क्या चित्रकारी को पूरी तरह अपना लूं!

महाराजा तिरुनाल ने उनकी बातें सहृदयता से सुनीं। महाराजा स्वयं कला के पारखी थे। रवि वर्मा की भावना को अच्छी तरह समझते थे। उन्होंने उन्हें समझाया कि चित्रकारी को अपनाने में कोई दोष नहीं है। यह कोई असम्मानजनक कार्य नहीं है।

महाराजा तिरुनाल ने कहा, "रवि, कला तो महान होती है। कोई भी कला हो। संगीत कला हो या चित्रकला। कला महान है। वह हम में संस्कार पैदा करती है। हमें आनंद देती है। उसे अपनाने में किसी की मानहानि कैसे हो सकती है! यदि तुम चित्रकार बनना चाहते हो, तो झिझकते क्यों हो? पूरी निष्ठा के साथ उसे अपना लो। तुम अवश्य सफल होगे। एक श्रेष्ठ चित्रकार के रूप में जाने जाओगे।"

महाराजा तिरुनाल की बातें सुनकर रवि वर्मा का चित्त स्थिर हुआ। उन्होंने सोचा, महाराजा ठीक कहते हैं। कला तो महान होती है। अमर होती है। लोग आते हैं, चले जाते हैं, पर उनकी बनायी कृतियां अमर होती हैं। कई पीढ़ियों तक लोगों को प्रभावित करती हैं। उन्हें आनंद देती हैं, उनसे आत्मिक संतोष मिलता है।

रवि वर्मा ने निश्चय किया, वे चित्रकार ही बनेंगे। चित्रकला को पूरी तरह अपना लेंगे। उनके सामने विदेशी चित्रकारों के उदाहरण थे। रवि वर्मा ने सोचा, अपनी कला के कारण ही तो वे सात समुद्र पार भी जाने जाते हैं। उनका मान है, सम्मान है।

रवि वर्मा ने मन में पक्का संकल्प कर लिया। वे चित्रकार ही बनेंगे। अपना पूरा समय चित्रकला में लगायेंगे। ईश्वर ने चाहा तो वे अवश्य सफल होंगे।

ईश्वर !

रवि वर्मा को ईश्वर पर अगाध विश्वास था। ईश्वर की पूजा-प्रार्थना से उन्हें नयी शक्ति मिलती थी। मन शांति भी पाता था।

एक दिन रवि वर्मा ने सोचा, कार्य शुरु करने के पहले तीर्थ-यात्रा करनी चाहिए। पर प्रश्न उठा कि कहां जाएँ?

आखिर, उन्होंने मुकुम्बिका देवी के दर्शन करने का संकल्प किया।

मुकुम्बिका देवी विद्या की देवी मानी जाती हैं। उनका मंदिर दक्षिणी कनारा जिले में स्थित था। यह स्थान तिरुवनन्तपुरम् से काफी दूर था। पर यह दूरी रवि वर्मा को अपने संकल्प से नहीं डिगा पायी। उन्होंने महाराजा को सूचित किया कि वे तीर्थ-यात्रा पर जाना चाहते हैं। किलिमानूर में घरवालों को भी संदेश भिजवा दिया।

फिर वे एक दिन दो संबंधियों के साथ तीर्थ-यात्रा पर निकल पड़े।

उन दिनों आज-जैसी न सड़कें थी और न तेज गति से चलने वाले वाहन।

यह यात्रा उन्हें कहीं पैदल और कही नाव से ही तय करनी थी। पर मन में मुकुम्बिका देवी के प्रति श्रद्धा थी। आस्था थी। विश्वास था। और आस्था और विश्वास से असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं।

सो, रवि वर्मा चल पड़े। साथ में दोनों संबंधी भी थे। घने वनों के बीच से गुजरते, नदी में नावों के सहारे सफर करते, वे आगे बढ़ने लगे।

आखिर, एक दिन वह यात्रा भी पूरी हुई।

रवि वर्मा अपने दोनों संबंधियों के साथ देवी के मंदिर के द्वार पर जा पहुंचे।

मंदिर देखते ही प्रसन्नता से उनका गला भर आया। मन में प्रार्थना के स्वर फूटे—

'मां, तुम्हारी शरण में आया हूं। अपना संकल्प पूरा कर सकूँ, ऐसी शक्ति दो। सही मार्ग पर चल सकूं, ऐसा विवेक दो।'

रवि वर्मा इकतालीस दिन तक वहीं रहे। वे प्रतिदिन प्रातः उठते। स्नान करते। फिर देवी के मंदिर में जाते। वहां वे देवी की स्तुति करते। भजन गाते। विधिपूर्वक देवी की पूजा-आराधना में समय बिताते।

मुकुम्बिका देवी के मंदिर में रवि वर्मा को आत्मिक शांति मिलती। वे जब नेत्र मूंद कर देवी का ध्यान करते तो उनका आत्मविश्वास दुगुना हो जाता। रवि वर्मा को लगता, उन्होंने अपने लिए सही मार्ग चुना है। देवी की कृपा और अपने परिश्रम से वे अवश्य सफल होंगे।

इकतालीस दिनों तक देवी की पूजा-अर्चना के बाद रवि वर्मा घर के लिए वापस चले। फिर उसी तरह पैदल-यात्रा। गांवों में ठहरते, प्रकृति की सुषमा का आनंद उठाते हुए कालीकट पहुंचे।

वहां उनकी भेंट कालीकट न्यायालय के एक उपन्यायाधीश से हुई। उनका नाम था। किजा के. पालट कृष्ण मेनन। किजा के. पालट कृष्ण मेनन ने रवि वर्मा का नाम सुन रखा था। उन्होंने उनसे कहा, "अब आप हमारे परिवार के लोगों के चित्र बनाइए। जो भी पारिश्रमिक चाहेंगे, आपको भेंट करने की कोशिश करूंगा।"

यह सन 1870 की बात है।

पहली बार पारिश्रमिक लेकर रवि वर्मा ने इसी परिवार का चित्र बनाया था।

पालट कृष्ण मेनन अपना, अपने परिवार का चित्र देखकर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने रवि वर्मा का यथोचित सम्मान किया। पारिश्रमिक दिया।

xxx xxx

कालीकट से तिरुवनन्तपुरम्।

फिर वही जीवन! पर अब एक अंतर आ गया था। अब उनके जीवन को एक दिशा मिल गयी थी।

जीवन को सही दिशा मिलना बड़ी बात है। सही दिशा पा जाने पर मन भटकता नहीं। जीवन उद्देश्यपूर्ण हो जाता है। निरुद्देश्य नहीं रहता। आदमी के सामने कोई उद्देश्य न हो, तो वह भटकता रहता है।

तिरुवनन्तपुरम् में रवि वर्मा रंगशाला में चित्र बनाते। समारोहों में भाग लेते। एक कुशल चित्रकार के रूप में सभी उनका सम्मान करते।

एक दिन की घटना है।

राजमहल में एक समारोह का आयोजन किया गया था। ऐसे समारोहों में लोग मद्यपान भी करते थे। यह बड़े लोगों के बीच एक फैशन-सा था। वह आधुनिक होने का प्रमाण समझा जाता था।

इसी समारोह में वह घटना घटी थी। इससे रवि वर्मा के चरित्र पर प्रकाश पड़ता है।

समारोह में एक युवराज ने रवि वर्मा को मद्यपान के लिए निमंत्रित किया।

रवि वर्मा ने विनम्रता से उत्तर दिया, "युवराज, मैं मद्यपान नहीं करता।'

युवराज तो युवराज!

उसे आदत थी, हमेशा 'हां' सुनने की।

चाटुकार लोग सदैव उसकी 'हां' में 'हां' मिलाते थे।

उन्होंने भी रवि वर्मा से आग्रह किया, "युवराज कह रहे हैं, तो थोड़ी-सी पी लो।" रवि वर्मा ने फिर 'न' कर दी।

अब तो युवराज ने हठ पकड़ ली। इस बात को प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया। रवि वर्मा से कहा, "आज तो आपको पीनी ही पड़ेगी।" उसके स्वर में कुछ अधिकार का भाव भी था।

इससे रवि वर्मा के आत्मसम्मान को ठेस लगी। वे बड़े स्वाभिमानी थे। इच्छा के विपरीत दबाव में आकर कार्य करने की उसकी आदत नहीं थी।

वे गंभीर स्वर में बोले, "युवराज, मेरा जीवन मद्यपान में नष्ट करने के लिए नहीं है।"

युवराज चिढ़ गया। उसे क्रोध आ गया।

बात बढ़ती देखकर महाराजा आयिल्यम तिरुनाल ने हस्तक्षेप किया। बोले, "युवराज, कोई मद्यपान नहीं करना चाहता तो जबरदस्ती क्यों? रवि वर्मा को बाध्य मत करो।"

युवराज मौन हो गया। पर उसके मन में यह बात फांस बनकर चुभ गयी। वह अपने चाटुकार लोगों के साथ वहां से चला गया।

महाराजा आयिल्यम तिरुनाल ने रवि वर्मा की ओर मुसकरा कर देखा मानो कह रहे हों, 'तुमने ठीक किया।'

इस घटना के बाद महाराजा आयिल्यम तिरुनाल रवि वर्मा को और अधिक चाहने लगे।

उन्हें अपार संतोष भी हुआ। महाराजा देख रहे थे कि नयी पीढ़ी विदेशी शासकों की शान-शौकत तो अपना रही है, पर उनके गुण उसने नहीं लिये हैं।

रवि वर्मा ने विदेशी शासकों की शान-शौकत से अपने दो दूर रखा। उनकी कभी नकल नहीं की। बुरी आदतें नहीं सीखीं। एक ओर नयी पीढ़ी के युवक उसे ही अपना रहे थे। दूसरी ओर रवि वर्मा अंग्रेजी भाषा पर अधिकार करने में लगे हुए थे। उन्हें त्रावणकोर राज्य के दीवान से भी भरपूर सहयोग मिल रहा था। उनका नाम था — टी. माधवराव।

टी. माधवराव विद्वान थे। प्रतिभा के पारखी थे। उन्होंने रवि वर्मा की प्रतिभा को पहचान लिया था। वे उन्हें हर संभव सहायता देना चाहते थे।

अब तक रवि वर्मा का हाथ काफी सध गया था। वे सुंदर पोर्ट्रेट बनाने लगे थे।

एक दिन उन्होंने महाराजा आयिल्यम तिरुनाल से एक अनुरोध किया। बोले, "महाराज मैं आपका पोर्ट्रेट बनाना चाहता हूं। मुझे थोड़ा-सा समय देने की कृपा करें।"

महाराजा तिरुनाल सहर्ष तैयार हो गये।

वे अपनी पत्नी के साथ चित्र बनवाने के लिए बैठने लगे।

रवि वर्मा ने पूरे मनोयोग से उनका चित्र बनाया।

चित्र पूरा हुआ। उसे देखकर महाराजा दंग रह गये। कुछ विदेशी चित्रकारों ने भी उनके चित्र बनाये थे। पर रवि वर्मा के चित्र की तो बात ही अलग थी। उनका चित्र निसंदेह श्रेष्ठ था। सुंदर था। जैसे उन्होंने उसमें जान डाल दी थी। उन्होंने यह बात सबसे कही। कहा, "रवि वर्मा के चित्र में आत्मा है। उसने हमारे मनोभावों को भी बखूबी उतारा है।"

महाराजा आयिल्यम तिरुनाल ने रवि वर्मा का सम्मान करने का निश्चय किया। उन दिनों महाराजा 'वीर श्रृंखला' अलंकरण से योग्य, विद्वान व्यक्तियों का सम्मान करते थे। उन्होंने तय किया, वे रवि वर्मा को इसी अलंकरण से सम्मानित करेंगे। यों, वह अलंकरण कई व्यक्तियों को मिला था। पर अब तक कोई चित्रकार इस अलंकरण से सम्मानित नहीं हुआ था। रवि वर्मा पहले चित्रकार थे, जिन्हें इस अलंकरण से विभूषित किया गया।

महाराजा ने एक दिन दरबार का आयोजन किया। उसमें रवि वर्मा को यह अलकरण प्रदान किया।

इस अलंकरण से रवि वर्मा की ख्याति और बढ़ गयी। लोग उनका आदर करने लगे। पर कुछ लोग ऐसे भी थे, जो रवि वर्मा से जलते थे। वे उन्हें मिले इस सम्मान से वे खुश नहीं थे। पर वे कुछ कर भी नहीं सकते थे।

'वीर श्रृंखला' अलंकरण पाने से रवि वर्मा का उत्साह बढ़ा। उन्हें विश्वास हो गया कि उन्होंने अपने लिए सही मार्ग चुना है। वे उत्साह और उल्लास से चित्रकला की साधना में जुट गये।

रवि वर्मा स्त्रियों के सुंदर चित्र बनाते थे, विशेषकर नायर जाति की स्त्रियों के। उन दिनों तिरुवनन्तपुरम् में एक चर्चा थी। लोग कहा करते थे कि रवि वर्मा के निवास में स्वर्गलोक की अप्सराएं आया करती हैं। उनका आशय था कि रवि वर्मा की रंगशाला में सुंदर स्त्रियों के चित्रों की भरमार है।



वन में एकाकी दमयंती

(साभार : श्री भवानी चित्र संग्रहालय, औंध, सतारा)

रवि वर्मा केवल सुंदर स्त्रियों के ही चित्र नहीं बनाते थे, वे प्राकृतिक दृश्यों का भी चित्रांकन करते। उनकी दिनचर्या नियमित थी। स्नान-ध्यान, पूजा-पाठ, भ्रमण। चित्रांकन। रामायण, महाभारत, भागवत व पुराणों का अध्ययन। कभी-कभी वे पंडितों को निमंत्रित करते। उनसे पुराणों के प्रसंग सुनते। वे सोचते थे कि पौराणिक प्रसंगों पर सुंदर चित्र बनाये जा सकते हैं।

ठीक यही बात दूसरे कला-प्रेमी भी सोचते थे। नृत्य-संगीत में पौराणिक कथाएं कही जाती थीं पर चित्रकला में इन विषयों का समावेश नहीं हुआ था।

सन 1871 की बात है। मद्रास में एक सभा हुई थी। उसमें मद्रास के गवर्नर लॉर्ड नेपियर का भाषण हुआ था। लॉर्ड नेपियर विद्वान थे। रामायण, महाभारत, पुराणों का उन्होंने अध्ययन किया था।

अपने भाषण में लॉर्ड नेपियर ने एक महत्वपूर्ण बात कही थी। उन्होंने कहा था कि रामायण, महाभारत और पुराणों में चित्रांकन के लिए अपार विषय हैं। यदि भारतीय चित्रकार यूरोपीय चित्र-शैली का उपयोग कर इन विषयों पर चित्र बनायें, तो चित्रकला समृद्ध होगी।

रवि वर्मा ने लॉर्ड नेपियर का भाषण नहीं सुना था। वे तो पांच सौ मील दूर रहते थे, पर उनके मन में भी यही विचार उठे थे। वह भी काफी वर्ष पहले।

उन दिनों मद्रास में एक चित्र-प्रदर्शनी का आयोजन होता था। उसमें देशी चित्रकार भाग लेते थे। भारत आये विदेशी चित्रकार भी इस प्रदर्शनी में अपने चित्र भेजते थे। प्रदर्शनी में आने वाले श्रेष्ठ चित्रों को पुरस्कार भी दिया जाता था। सर्वश्रेष्ठ चित्र को मद्रास के गवर्नर की ओर से स्वर्ण पदक दिया जाता था।

ऐसी ही एक प्रदर्शनी सन 1873 में हुई।

महाराजा आयिल्यम तिरुनाल ने रवि वर्मा से कहा, "तुम भी इस प्रदर्शनी में भाग लो।"

महाराजा के परामर्श को रवि वर्मा ने मान लिया। उन्होंने इस प्रदर्शनी के लिए एक नायर स्त्री का चित्र चुना। उसके साथ एक और चित्र का भी चुनाव किया। ये दोनों चित्र प्रदर्शनी की प्रतियोगिता के लिए भेज दिये गये।

त्रावणकोर राज्य के राज-चित्रकार रामस्वामी नायकर ने भी इस प्रदर्शनी में अपने चित्र भेजे। उन्हें आशा थी कि उनके चित्रों को पुरस्कार मिलेगा। इससे खोयी हुई प्रतिष्ठा फिर मिल जाएगी। रवि वर्मा को मिले 'वीर श्रृंखला' सम्मान से वे प्रसन्न नही थे। उनका विचार था कि वे रवि वर्मा से वरिष्ठ चित्रकार हैं। यह अलकरण उन्हें ही मिलना चाहिए था।

मद्रास चित्र-प्रदर्शनी में कई चित्रकारों ने चित्र भेजे थे। उनमें कुछ विदेशी चित्रकार भी थे।

महाराजा तिरुनाल से आज्ञा लेकर रवि वर्मा मद्रास गये।

उन दिनों तिरुवनन्तपुरम् से मद्रास की यात्रा आज-जैसी सरल नहीं थी। मद्रास के लिए जिस स्टेशन से उन्हें ट्रेन मिलती, वह सौ मील दूर था। पर रवि वर्मा के मन में उत्साह था। फिर यात्रा करने में उन्हें आनंद भी आता था। कारण, यात्रा में नये-नये दृश्य देखने को मिलते थे। नये-नये लोगों से मिलने-जुलने का अवसर मिलता था। यात्रा से मिलने वाले लाभ कई थे। उनकी तुलना में यात्रा मे मिलने वाले कष्ट की कोई बिसात नहीं थी।

सो, एक दिन रवि वर्मा बैलगाड़ी में बैठकर रवाना हुए। सौ मील की यात्रा कर वे उस स्टेशन पर पहुंचे। वहां से रेल द्वारा मद्रास। मद्रास में वे दीवान बहादुर रघुनाथ राव के घर ठहरे। उन्होंने उनकी सुविधा का पूरा ध्यान रखा। नियत तिथि पर चित्र प्रदर्शनी शुरू हुई। एक से बढ़कर एक चित्र। कलाप्रेमियों की भीड़ लग गई।

फिर एक दिन चित्र-प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा हुई। सब सांस थाम कर बैठे थे। निर्णायक परिणामों की घोषणा के लिए उठे। सभा में सन्नाटा छा गया। किसे मिलेगा प्रथम पुरस्कार। सभी के मन में यह जानने की उत्सुकता थी। अंततः प्रतीक्षा की घड़ी समाप्त हुई। निर्णायक ने घोषणा की – 'प्रथम पुरस्कार रवि वर्मा को 'नायर स्त्री' के चित्र के लिए।'

सभा-स्थल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

इस पुरस्कार से रवि वर्मा का सम्मान और बढ़ गया। इस प्रदर्शनी से रवि वर्मा को एक और लाभ हुआ। उन्हें दूसरे चित्रकारों के बनाये चित्रों को भी देखने का अवसर मिला। चित्र-प्रदर्शनी में वे घंटों एक-एक चित्र को देखते। चित्रकारो के रंग-संयोजन पर उनका विशेष ध्यान था। उन्होंने देखा कि विदेशी चित्रकारों का रंग-संयोजन संतुलित है।

पुरस्कार-प्राप्त कर रवि वर्मा तिरुवनन्तपुरम् लौट आये। महाराजा तिरुनाल को सूचना मिल चुकी थी कि रवि वर्मा को प्रथम पुरस्कार मिला है। वे बेहद प्रसन्न थे। रवि वर्मा उन्हें प्रणाम करने गये। महाराजा ने स्नेह से उन्हें आशीर्वाद दिया। बोले, "रवि वर्मा, मुझे प्रसन्नता है कि तुम्हारी कला को पहचाना गया। पर यह पुरस्कार पाकर ही संतुष्ट मत हो जाना। तुम्हें अभी और आगे बढ़ना है। अपना विशेष स्थान बनाना है। जाओ, अपने कार्य में निष्ठापूर्वक जुट जाओ।"

रवि वर्मा फिर से काम में जुट गये। उनकी रंगशाला में चित्रकला-प्रेमियों की भीड़ लगी रहती। महाराजा ने एक व्यवस्था और करवा दी थी। रवि वर्मा के लिए 'माडलों' का प्रबंध करवा दिया था। कुलीन घरानों की सुंदर युवतियां, विवाहित स्त्रियां निस्संकोच रंगशाला में आतीं। उन्हें सामने बैठाकर रवि वर्मा उनका चित्रांकन करते।

सन 1873 में ही वियेना (आस्ट्रिया) में एक अंतर्राष्ट्रीय चित्र-प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। रवि वर्मा ने इस प्रदर्शनी के लिए भी चित्र भेजे। इस प्रदर्शनी

में भी रवि वर्मा को पदक मिला। 'श्रेष्ठता का प्रमाणपत्र' देकर भी उन्हें सम्मानित किया गया।

सन 1874 मे मद्रास मे फिर एक चित्र प्रदर्शनी आयोजित हुई। इसमें रवि वर्मा ने भी एक चित्र भेजा। यह चित्र एक तमिल युवती का था। उसे एक वाद्य-यंत्र बजाते हुए चित्रित किया गया था। इस चित्र को भी गवर्नर के स्वर्णपदक से सम्मानित किया गया। बाद में महाराजा त्रावणकोर ने यह चित्र इंग्लैंड के प्रिंस ऑव वेल्स को भेंट किया। आगे चलकर यही प्रिंस ऑव वेल्स राजा एडवर्ड सप्तम बने।

दिन इसी तरह बीतते रहे। अब रवि वर्मा ने पौराणिक प्रसंगों को चित्रित करना शुरू किया। उन्होंने कालिदास के नाटक 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' का एक प्रसंग चुना। कालिदास का यह नाटक सारे संसार में प्रसिद्ध हो चुका था। उसका अंग्रेजी और दूसरी भाषाओं मे भी अनुवाद हो चुका था।

रवि वर्मा ने 'शाकुंतलम्' का जो प्रसंग चुना, वह मर्मस्पर्शी था। इसमें शंकुतला को दुष्यंत के लिए प्रेम-पत्र लिखते हुए दिखाया गया था। यह चित्र सुंदर बन पड़ा। 'शाकुंतलम्' से प्रेरित रवि वर्मा का यह प्रथम चित्र था। रवि वर्मा ने इस चित्र को भी एक चित्र-प्रतियोगिता में भेजा। वहां इस चित्र को गवर्नर जनरल का स्वर्णपदक मिला।

यह चित्र अनेक विदेशी विद्वानों ने भी देखा। इनमें एक थे – सर मोनियर विलियम्स। उन्होंने 'शाकुंतलम्' का अंग्रेजी में अनुवाद किया था। उन्हें भी यह चित्र बहुत पसंद आया। उन्होंने रवि वर्मा से अनुरोध किया। कहा कि वे इस चित्र को प्रकाशित करने की अनुमति दें। सर मोनियर विलियम्स अपने अनुवाद के साथ मुखपृष्ठ पर यह सुंदर चित्र प्रकाशित करना चाहते थे। रवि वर्मा इससे सहमत हो गये। सर मोनियर विलियम्स की पुस्तक खूब बिकी। इसमे प्रकाशित रवि वर्मा के चित्र की भी खूब प्रशंसा हुई। इस चित्र से उन्हें अंतर्राष्ट्रीय ख्याति मिली।



मालाबारी युवती

(साभार : श्री जयचामराजेद्र कला दीर्घा, जगन मोहन पैलेस, मैसूर)

पर जीवन में सदैव सुख नहीं मिलता। कभी-कभी परिस्थितियां अकारण परेशानी पैदा कर देती हैं। रवि वर्मा के साथ भी यही हुआ।

राजमहल में मतभेद उभर आये थे। महाराजा आयिल्यम तिरुनाल और उनके छोटे भाई विशाखम के संबंध कटु हो गये थे। कुछ लोग महाराजा तिरुनाल के साथ थे। कुछ विशाखम के।

संदेह आत्मीय संबंधों में दरार पैदा कर देता है। अपने संबंधी, हितैषी, मित्र ही शत्रु लगने लगते हैं।

त्रावणकोर राज्य के दीवान टी. माधवराव युवराज विशाखम के गुरु थे। यों महाराज उन्हें बहुत मानते थे। पर विशाखम के गुरु होने के नाते वे भी संदेह के घेरे में आ गये। टी. माधवराव को लगा, अब यहां रहना ठीक नहीं। जहां संबंधों में दरार आ जाए, वहां क्या रहना? संबंधों को और क्यों कटु किया जाए? उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। टी. माधवराव योग्य थे। विद्वान थे। एक कुशल प्रशासक के रूप में उनकी ख्याति थी। त्रावणकोर से हटते ही उन्हें बड़ौदा के महाराजा ने अपने यहां बुलवा लिया।

टी. माधवराव की भांति केरल वर्मा पर भी संदेह किया जाने लगा। यह भ्रम फैला गया कि वे भी महाराजा तिरुनाल के विरुद्ध षडयंत्र कर रहे हैं। उन्हें पहले एलेप्पी जाने को कहा गया। फिर वहां से हरिपाद भेजा गया।

रवि वर्मा पर भी आक्षेप किये जाने लगे। वे केरल वर्मा के साढू भाई थे। केरल वर्मा की पत्नी रानी लक्ष्मीबाई थीं। उन्हीं की छोटी बहन पुरुतार्थी से रवि वर्मा का विवाह हुआ था। अतः वे भी केरल वर्मा के संबंधी थे।

रवि वर्मा को इन मिथ्या आरोपों से बेहद कष्ट हुआ।

वे महाराजा तिरुनाल का हृदय से आदर करते थे। महाराजा तिरुनाल ने ही इनके जीवन को दिशा दी थी। उनके विरुद्ध जाने की तो वे कल्पना भी नहीं कर सकते थे। लेकिन वे यह भी जानते थे कि लोग उनके विरुद्ध

भी महाराजा के कान भर रहे हैं। यद्यपि, महाराजा ने उनसे स्वयं कभी कुछ नहीं कहा। पर रवि वर्मा को यह खबर दी गयी थी कि महाराजा उनसे भी नाराज है।

रवि वर्मा ने तय किया, तिरुवनन्तपुरम् छोड़ना ही ठीक रहेगा। इस समय महाराजा को सफाई देने से भी कोई लाभ नही होगा। उचित है, षड्यन्त्र और संदेह के इस वातावरण से दूर चले जाए।

और एक दिन महाराजा की अनुमति लेकर रवि वर्मा मावलेकिरा लौट गये। वहा पत्नी पुरुतार्थी थी। उनके अपने बच्चे थे। अब मावलेकिरा ही उनका कार्य-क्षेत्र था। वे पत्नी तथा बच्चो के साथ समय बिताते और अपनी रंगशाला मे चित्राकन करते।

धीरे-धीरे एक वर्ष बीत गया। संदेह के बादल छंट गये। अब रवि वर्मा ने पुनः तिरुवनन्तपुरम् लौटने का निश्चय किया। तिरुवनन्तपुरम् में महाराजा तिरुनाल स्नेह से उनसे मिले। रवि वर्मा को देखकर उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई।

रवि वर्मा ने देखा, महाराजा तिरुनाल कुछ दुबले हो गये हैं। रुग्ण से लग रहे हैं। उन्होने अपने मन की बात महाराजा से कही भी। पर महाराजा ने हंस कर उनकी बात टाल दी। बोले, "रवि, अब मैं बूढ़ा हो गया हूं। पता नहीं कब बुलावा आ जाए!"

और 30 मई, 1880 को महाराजा तिरुनाल का प्राणांत हो गया।

रवि वर्मा को उनके निधन से गहरा झटका लगा। उन्हें लगा, जैसे वे अनाथ हो गये हैं। महाराजा तिरुनाल उनके संरक्षक थे। उनके प्रोत्साहन पर ही रवि वर्मा ने चित्रकला अपनायी थी। महाराजा ने रवि वर्मा की सुख-सुविधाओं, आवश्यकताओं का पूरा ध्यान रखा था। पर अब स्थितियां बदलने लगी थीं।

नये महाराजा विशाखम तिरुनाल से उनके कभी घनिष्ठ संबंध नहीं रहे। इसका कारण भी था। विशाखम राज-चित्रकार रामस्वामी नायकर पर विशेष स्नेह रखते थे। पर रवि वर्मा ने प्रतीक्षा करना उचित समझा। उन्होंने सोचा, व्यर्थ की आशंकाएं करने से क्या लाभ! आशंकाएं संदेह को जन्म देती हैं। संदेह संबंध बिगाड़ता है। फिर नये महाराजा विशाखम ने कोई अनुचित बात भी नहीं की थी।

विशाखम स्वयं लेखक थे। ललित कलाओं से उन्हें भी प्यार था। वे भी त्रावणकोर राज्य में ललित कलाओं को संरक्षण देना चाहते थे।

एक दिन उन्होंने रवि वर्मा से कहा, "आपने पौराणिक प्रसंगों पर चित्र बनाने का कार्य शुरु किया था न! मैंने आपका शकुंतला वाला चित्र देखा है। मैं चाहता हू कि आप रामायण के प्रसंगों पर भी चित्र बनाएं। मैंने आपके लिए एक प्रसग भी सोचा है। मैं चाहता हूं कि आप सीता का भूमि प्रवेश वाला प्रसंग चित्रित करें।"

"जैसा आपका आदेश!" रवि वर्मा ने उत्तर दिया।

अपनी रंगशाला लौटकर रवि वर्मा ने रामायण निकाली। सीता के भूमि प्रवेश का प्रसंग बार-बार पढ़ा। धीरे-धीरे उनके मन में चित्र की कल्पना उभरने लगी। फिर रवि वर्मा ने चित्र-फलक पर इस कल्पना को आकार देना प्रारंभ किया।

राम की राज-सभा का दृश्य।

सभी सभासद उपस्थित हैं। ऋषि हैं, मुनि हैं, मंत्री हैं। राम के पुत्र लव-कुश भी हैं। उन सबके सामने सीता पृथ्वी माता की गोद में बैठी हुई हैं। पृथ्वी माता उन्हें अपने लोक ले जा रही हैं।

आकृतिया बन गयीं। अब उनमें रंग भरने का कार्य शुरू हुआ। रवि वर्मा ने प्रत्येक के चेहरे के भावो का अंकन किया। राम के मुख का, सीता के मुख का, लव के मुख का। सीता के मुख की पीड़ा व्यथित करने वाली थी।

एक दिन चित्र पूरा हुआ। रवि वर्मा ने महाराजा विशाखम को उसे दिखाया। क्षणभर के लिए उन्हें महाराजा आयिल्यम तिरुनाल की याद आयी। महाराजा चित्र देखकर कितने प्रसन्न होते! रवि वर्मा को दीवान टी. माधवराव की भी याद हो आयी। वे भी कला के पारखी थे। पर महाराजा तो अब इस लोक मे नहीं थे। टी. माधवराव भी बड़ौदा में थे।

नये महाराजा विशाखम ने चित्र देखा। वे रवि वर्मा की कला का लोहा मान गये। उन्होने चित्र की हृदय से प्रशंसा की।

xxx xxx

कुछ दिनो बात एक घटना घट गयी।

मद्रास के गवर्नर ड्यूक ऑव बकिंघम तिरुवनन्तपुरम् की यात्रा पर आये। वे रवि वर्मा के प्रशंसक थे। कारण, सन 1878 में रवि वर्मा ने उनका पोट्रेट बनाया था। अपने इस पोट्रेट से वे बहुत प्रसन्न हुए थे। ड्यूक ऑव बकिंघम ने एक विदेशी चित्रकार से भी अपना पोट्रेट बनवाया था। पर उसमें इस चित्र जैसी बात नहीं थी। उन्होंने कहा भी था, "मैंने उस चित्रकार को अठारह सिटिंग दी थीं। पर उसका बनाया पोट्रेट तो इस पोट्रेट का आधा भी नहीं है।"

इसीलिए वे जब तिरुवनन्तपुरम आये तो रवि वर्मा से भी मिले। उन्होंने रवि वर्मा से कहा, "मै आपका स्टूडियो देखना चाहता हूं।"

रवि वर्मा चिंता में पड़ गये। अब स्टूडियो कहां था? उसे तो नये महाराजा ने बंद करवा दिया था।

रवि वर्मा ने युक्ति से काम लिया। बोले, "आप क्यों कष्ट करेंगे! मै स्वयं आपके आवास-स्थल पर चित्र लेकर उपस्थित हो जाऊंगा।"

ड्यूक ऑव बकिंघम ने उनका सुझाव मान लिया।

नियत समय पर रवि वर्मा अपने चित्र लेकर पहुंचे। उस समय ड्यूक ऑव बकिंघम महाराजा विशाखम से वार्तालाप कर रहे थे।

रवि वर्मा ने ड्यूक और महाराजा का अभिवादन किया

ड्यूक ने उन्हें बैठने के लिए कहा।

पर रवि वर्मा खड़े रहे।

महाराजा के सामने कैसे बैठें! रवि वर्मा दरबार के रीति-रिवाज जानते थे। वे उनका पालन भी करते थे। वे नहीं बैठे। ड्यूक चित्रकारों की, कलाकारों की कद्र करना जानते थे। यह कैसे हो सकता है कि एक श्रेष्ठ चित्रकार खड़ा रहे। और वे बैठे-बैठे उससे बात करें!

ड्यूक खड़े हो गये।

अब तो महाराजा विशाखम को भी उठना पड़ा। उनका बैठे रहना सौजन्यता नहीं होती।

ड्यूक ने रवि वर्मा के चित्र देखे। उनकी प्रंशसा की। खड़े-खड़े तीनों वार्तालाप करने लगे।

रवि वर्मा ने महाराजा की ओर देखा। उनके मुख पर क्रोध का भाव था। एक चित्रकार के लिए उन्हें उठना पड़ा। वे इसे सहन नहीं कर पा रहे थे। उनके लिए अपने भाव छिपाना भी कठिन हो रहा था।

रवि वर्मा ने उसी क्षण निश्चय किया। अब तिरुवनन्तपुरम् छोड़ देना ही उचित है। महाराजा का कोप-भाजन बनकर रहने मे क्या लाभ! इससे उनका अपना मन भी सदैव अशांत रहेगा। अशांत मन से वे चित्रकला की साधना नही कर पाएंगे।

अतः शीघ्र ही उन्होने तिरुवनन्तपुरम छोड़ने की तैयारी शुरू कर दी। महाराजा विशाखम से अनुमति लेकर वे पहले किलिमानूर चले गये। वहां से मावलेकिरा जाने का कार्यक्रम था।

रवि वर्मा के जाते ही उनकी रंगशाला बंद हो गयी।

राजकीय रंगशाला बद होने के बाद उन्होंने अपनी नयी रंगशाला बनायी थी। यह रंगशाला उनके कृष्ण विलासम् पैलेस में थी। जब तक रवि वर्मा तिरुवनन्तपुरम् में रहे, कृष्ण विलासम् पैलेस कलातीर्थ बना रहा। दूर-दूर के चित्रकार वहां आते। दक्षिण भारत जाने वाले उत्तर भारत के कला-प्रेमी भी वहा अवश्य जाते। उनका आकर्षण होता-कृष्ण विलासम् पैलेस। वहां रवि वर्मा के चित्र देखकर वे प्रसन्न होते। कहते, 'राजा रवि वर्मा की जय!'

मलयाली भाषी लोगों को यह समझ नहीं आता। वे सोचते, प्रशंसा का यह कौन-सा तरीका है?

पर अब कृष्ण विलासम् पैलेस सूना हो गया था।

रह गयी थीं केवल कुछ स्मृतिया।

रवि वर्मा के चरित्र की स्मृतियां। उनके स्वभाव की स्मृतियां।

रवि वर्मा स्पष्ट वक्ता तो थे ही।

तिरुवनन्तपुरम् के कला-प्रेमी एक घटना को भुलाये नही भूलते।

उन दिनो यहां पर बालामणि नामक एक अभिनेत्री थी। बड़े-बड़े लोग उसके चाहने वाले थे। वह चाहती थी कि रवि वर्मा उसका भी एक पोर्ट्रेट बनाए। उसने उनसे अनुरोध किया। पर रवि वर्मा तो किसी और धातु के

बने थे। वे बालामणि का चित्र नहीं बनाना चाहते थे। इसका भी एक कारण था। उसे देखकर उन्हें चित्र बनाने का चाव ही नहीं होता था। उन्होंने बालामणि से कहा, "बुरा न मानना। तुम्हारे चेहरे पर कोई भाव ही नहीं हैं। तुम अभिनय भी नहीं कर सकतीं। फिर तुम्हारा चित्र बनाने के लिए मुझे महाराजा से भी अनुमति लेनी पड़ेगी।"

बालामणि समझ गयी। रवि वर्मा चित्र बनाना ही नहीं चाहते। उसने हठ नहीं किया। पर मन ही मन वह रवि वर्मा से नाराज हो गयी। अपनी इस नाराजगी की उसने औरों से चर्चा भी की। शीघ्र ही यह बात फैल गयी।

इस घटना से रवि वर्मा की प्रतिष्ठा ही बढ़ी।

लोगों ने कहा, 'वे सच्चे कलाकार हैं। स्वाभिमानी भी हैं। लोभ लालच उन्हें डिगा नहीं सकता।'

रवि वर्मा के तिरुवनन्तपुरम् छोड़ने से कई लोगों को दुःख हुआ। पर वे कर भी क्या सकते थे?

उधर किलिमानूर पहुंच कर रवि वर्मा बहुत प्रसन्न थे। किलिमानूर की रंगशाला को देखकर उन्हें बहुत अधिक खुशी हुई।

इस रंगशाला मे उनकी बहन मंगला चित्रकारी करती थी। रवि वर्मा के छोटे भाई राज वर्मा ने मद्रास में चित्रकारी सीखी थी। वे भी इसी रंगशाला में चित्र बनाते थे। मामा राजा राज वर्मा उनके संरक्षक थे। अब रवि वर्मा भी आ गये थे।

किलिमानूर में रवि वर्मा के दिन खुशी से बीतने लगे। यहां का वातावरण मुक्त था। तिरुवनन्तपुरम् राजघराने के बंधन नहीं थे।

रवि वर्मा सुबह घुड़सवारी करते। सारा दिन रंगशाला में बिताते। शाम को मां के साथ भजन-कीर्तन करते।

कभी-कभी वे पत्नी पुरुतार्थी और अपने बच्चों से मिलने मावलेकिरा चले जाते। उनके दो पुत्र थे। एक का नाम था - राम। दूसरे का नाम था - केरल।

XXX XXX

एक दिन की बात है।

रवि वर्मा मावलेकिरा से किलिमानूर लौटे थे। अपने निवास के सामने एक सजी-धजी बैलगाड़ी देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ। तभी छोटे भाई राज वर्मा आ गये।

रवि वर्मा ने उनसे पूछा, "कोई अतिथि आया है क्या?"

राज वर्मा ने उत्तर दिया, "हां, दीवान माधवराव आये हैं।"

"दीवान माधवराव!"

रवि वर्मा प्रसन्न हो उठे। पूछा, "कहां हैं वे?"

"मामाजी के पास!"

"अच्छा! मामाजी से कहो, मैं आ गया हूं। यात्रा में वस्त्र गंदे हो गये हैं। उन्हें बदल कर उनके पास पहुंचता हूं।"

कुछ देर बाद वे दीवान माधवराव के पास थे। माधवराव उन्हें देखकर बहुत प्रसन्न हुए। लबी अवधि के बाद दोनों की भेट हो रही थी।

वे लोग काफी देर तक बातें करते रहे।

अगले दिन माधवराव ने रवि वर्मा से कहा, "रवि, मैं चाहता हूं कि तुम किलिमानूर छोड़ दो।"

"क्यों?" रवि वर्मा ने चौंक कर पूछा।

माधवराव बोले, "रवि, अब किलिमानूर ही नहीं, तिरुवनन्तपुरम् भी तुम्हारे लिए छोटी जगह है। मैने कई विदेशी चित्रकारों के चित्र देखे हैं। वे यहा आते हैं। राजा-महाराजाओ के पोट्रेट बनाते हैं। पर उनके चित्रों में तुम्हारे चित्रो-जैसी बात नहीं। लेकिन किलिमानूर मे तुम्हारी स्थिति जंगल के मोर-जैसी है। जंगल मे मोर नाचा किसने देखा! यह एक कहावत है! किलिमानूर मे तुम्हारी प्रतिभा संकुचित हो जाएगी। मै चाहता हूं कि तुम बड़ी जगह में रहो। ऐसी जगह, जहां राजा-महाराजा आते हैं।"

"ऐसी जगह कौन-सी है!" रवि वर्मा ने उत्सुकता से पूछा।

"बंबई! तुम और राज वर्मा बंबई (मुंबई) चलो। वहां मेरे पास एक बंगला है। तुम लोगों को कोई कष्ट नहीं होगा। बंबई में तुम्हें नया वातावरण मिलेगा। वह महानगर है। राजा-महाराजा देशी और विदेशी बड़े-बड़े लोग वहां आते



चांदनी रात में महिला
(साभार : श्री जयचामराजेंद्र कला दीर्घा, जगन मोहन, पैलेस, मैसूर)

हैं। मेरा भी कुछ राजा-महाराजाओं से परिचय है। मेरी सलाह मानो। बंबई चलो। दो दिन में तैयारी कर लो। मै भी तुम्हारे साथ बंबई चलूंगा। तुम्हारी सारी व्यवस्था करके बड़ौदा चला जाऊगा।"

दीवान माधवराव का सुझाव रवि वर्मा को जंच गया। उन्होंने मामा राजा राज वर्मा, माता-पिता, भाइयों से परामर्श किया। सबकी राय बनी कि यह एक अच्छा अवसर है। इसका लाभ उठाना चाहिए।

जीवन में अच्छे अवसर कम आते हैं। पर हम उसमें छिपी चुनौतियों से घबरा जाते हैं। हम जानी-पहचानी जगह, सुख-सुविधाभरी जिंदगी छोड़कर जाना नहीं चाहते। तरह-तरह के संदेहों में घिरे रहते हैं। इसी उहापोह में अवसर हाथ से निकल जाता है। बाद में हम पछताते हैं। पर तब क्या लाभ!

समझदार, साहसी लोग नये अवसरो का लपककर स्वागत करते हैं। वे चुनौतियों से घबराते नहीं।

रवि वर्मा साहसी थे। उन्होंने माधवराव की बात मान ली।

किलिमानूर सुदूर दक्षिण का एक कस्बा।

बंबई—भारत की एक महानगरी। उद्योग-व्यापार का केंद्र।

किलिमानूर —शात, जंगल के बीच स्थित एक सरोवर की तरह।

बंबई—निकट के सागर की तरह ही कोलाहलपूर्ण। चारों ओर गहमा-गहमी। भाग-दौड़। यों, उन दिनों की बंबई आज-जैसी न थी। फिर भी, किलिमानूर की तुलना में तो यह भीड़ भरी ही थी।

किलिमानूर से बंबई की यात्रा भी आसान नहीं थी। पर्वतों, घने वनों, गहरी नदियों को पार कर ही बंबई पहुंचा जा सकता था। यात्रा कठिनाइयों भरी थी।

रवि वर्मा अपने दोनों भाइयों राज वर्मा और गोदा वर्मा के साथ बंबई रवाना हुए। मामा राजा राज वर्मा ने दो सेवक भी साथ भेज दिये थे। कई दिनों की यात्रा के पश्चात रवि वर्मा बंबई पहुंच गये। दीवान टी. माधवराव ने उन्हें निवास-स्थान का पता दे दिया था। वे सब इसी स्थान पर पहुंचे।

वह एक भव्य बंगला था। दो मंजिला। सामने छोटा-सा बगीचा था। यह बंगला आरामदेह था।

बंगले की ऊपरी मंजिल के एक कक्ष में रंगशाला बनायी गयी। अन्य कक्षों को भी सुसज्जित कर दिया गया।

अब बंबई ही रवि वर्मा का नया कार्यक्षेत्र था।

माधवरावजी ने रवि वर्मा का अनेक लोगो से परिचय करवा दिया। चित्रकला के प्रेमी उनका नाम सुन चुके थे। अब वे बंबई मे रहेंगे, यह जानकर उन्हें प्रसन्नता हुई।

एक दिन माधवरावजी ने रवि वर्मा को बीकानेर के महाराजा से मिलवाया। वे चित्रकार से मिलकर प्रसन्न हुए।

दूसरे दिन माधवरावजी महाराजा बीकानेर के साथ बीकानेर चले गये। रवि वर्मा को अब स्वयं स्थान बनाना था।

बंबई मे बालकेश्वर का मदिर है। रवि वर्मा प्रायः इस मदिर मे जाते। इस मंदिर मे भी उनका अनेक लोगों से परिचय हुआ। कुछ महिलाओं से भी वे मिले। उनमे से कुछ महिलाओ ने उनसे चित्र बनवाये।

इसी बीच पूना में एक चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। माधवरावजी ने इस प्रदर्शनी मे रवि वर्मा का बनाया चित्र भी भिजवाया। यह वही नायर युवती का चित्र था। इसे ही मद्रास की प्रदर्शनी में गवर्नर का पदक मिला था। साथ ही उन्होंने 'सीता भूमि प्रवेशम्' चित्र भी भेजा था। तिरुवनन्तपुरम्-यात्रा के दौरान माधवरावजी ने वह चित्र बड़ौदा दरबार के लिए खरीद लिया।

पूना की प्रदर्शनी में ये दोनों चित्र बेहद पसंद किये गये। 'नायर युवती' पर तो उन्हें बड़ौदा के महाराजा का स्वर्णपदक मिला।

स्वयं माधवरावजी उन्हें यह पदक देने आये। उन्होंने रवि वर्मा को एक और सूचना दी। बतलाया कि बंबई के गवर्नर सर जेम्स फर्ग्युसन भी प्रदर्शनी देखने आये थे। उन्हें भी यह चित्र बहुत पसंद आया। उन्होंने अनुरोध किया है कि इस चित्र की एक अनुकृति उन्हें भी दी जाए।

रवि वर्मा ने इस चित्र की दो अनुकृतियां पहले ही तैयार कर रखी थीं। उन्होने उनमें से एक अनुकृति माधवरावजी को दे दी। माधवरावजी रवि वर्मा की सूझ-बूझ से बहुत प्रभावित हुए।

कुछ दिनो बाद की बात है।

माधवरावजी ने रवि वर्मा को बड़ौदा आने का निमंत्रण दिया। बड़ौदा में सयाजीराव गायकवाड़ का राज्यारोहण समारोह था। माधवरावजी ने उन्हें राजकीय अतिथि के रूप में निमंत्रित किया था।

नियत तिथि पर रवि वर्मा अपने भाइयों के साथ बड़ौदा गये। यह यात्रा आसान थी।

बड़ौदा मे राज्यारोहण-समारोह की धूम थी। चारों ओर उत्सव का वातावरण था। रवि वर्मा ने बड़ौदा नगर देखा। उनका कई नये लोगो से परिचय हुआ। बड़ौदा के नये महाराजा भी उनसे स्नेह से मिले। उम्र में वे छोटे थे, पर ललित कलाओ से उन्हें प्यार था। वे संगीत, चित्रकला के पारखी भी थे।

बड़ौदा में कुछ दिन बिताने के बाद रवि वर्मा बंबई वापस आ गये। पर वे बंबई में अधिक दिन नहीं रह सके। उन्हें किलिमानूर जाना पड़ा। उनके मामा राजा राज वर्मा अचानक बीमार पड़ गये थे। रवि वर्मा अपने मामा को बहुत चाहते थे। वे उनके मामा ही नहीं थे, वे उनके गुरु भी थे। राजा राज वर्मा संन्यासियों-जैसा जीवन व्यतीत कर रहे थे। रवि वर्मा चाहते थे कि जितनी जल्दी हो, किलिमानूर पहुंच जाएं।

बबई से कई ट्रेनें बदलकर तिनेवली पहुंचना था। फिर वहां से किलिमानूर। कई दिनों की यात्रा के बाद आखिर वे तिनेवली पहुंच गये। अब किलिमानूर तक बैलगाड़ी से सफर करना था।

अंत में एक सुबह वे किलिमानूर पहुंच ही गये। सबका मन आह्लाद से भर गया। घर पहुंचने पर किसे प्रसन्नता नहीं होती? और जब कई कष्ट झेलकर पहुंचा जाए तो आनंद की सीमा ही नहीं रहती।

घर पहुंचकर रवि वर्मा मामा से मिले। गेरुए वस्त्रों में उनका व्यक्तित्व और भव्य हो गया था। वे अपने माता-पिता और बहन से भी मिले।

किलिमानूर में कुछ दिन रहने के बाद वे मावलेकिरा गये। वहां उनकी पत्नी पुरुतार्थी थी। दोनों बेटे राम और केरल थे। रंगशाला भी ज्यों की त्यो थी।

पर मावलेकिरा मे भी रवि वर्मा अधिक दिन नहीं रह पाये। एक दिन उनके छोटे भाई राज वर्मा मावलेकिरा पहुंचे। उन्होंने रवि वर्मा को बताया कि मामाजी की तबीयत ज्यादा खराब है।

रवि वर्मा किलिमानूर पहुचे। रास्ते भर मामा के स्वास्थ्य को लेकर वे परेशान थे।

घर पहुंचते ही वे तत्काल मामा के पास गये। वे लेटे हुए थे। बहुत कमजोर दिखाई दे रहे थे। रवि वर्मा को लगा, मामा अब जीवन-यात्रा पूरी करने ही वाले है। उन्होने उनका एक पोट्रेट बनाया। राजा राज वर्मा चित्र देखकर हंस पड़े। बोले, "कोच्चू, तू तो बहुत कुशल चित्रकार हो गया। पर बेटा, लगता है, मेरी जीवन-यात्रा समाप्त होने वाली है।"

सचमुच राज वर्मा का अंतिम समय निकट आ गया था। वे भी इस बात को जानते थे। वे रवि वर्मा को अपने पास बैठाते। तरह-तरह की शिक्षाएं देते।

और एक दिन उनके प्राण-पखेरू उड़ गये।

सारा घर शोक में डूब गया।

मां उमा भी भाई के निधन से बहुत दुखी हुईं। पर सबसे ज्यादा दुख तो रवि वर्मा को हुआ। उन्हें लगा, माता-पिता के रहते हुए भी वे अनाथ हो गये हैं। आज वे जो भी थे, केवल मामा के कारण।

रवि वर्मा दिन-रात शोक में डूबे रहते। यह देख उनकी मां उमा ने उन्हें समझाया। बोली, "कोच्चू, जन्म के साथ तो मरण जुड़ा हुआ है। तेरे मामा ने अपना सारा जीवन कर्मठता के साथ जिया। उनकी उम्र भी हो चुकी थी।

एक न एक दिन तो सबको जाना है। मै भी चली जाऊंगी। जो होने वाला है, उस पर अधिक शोक क्यो? अब तुम्हें अपने काम में मन लगाना चाहिए।"

पिता ने भी उन्हें समझाया। वे तो विद्वान थे। वेदो के ज्ञाता। उनकी बातों से रवि वर्मा के मन को शाति मिली। अब उन्होने रंगशाला की ओर ध्यान दिया। पर साथ ही उन्होंने एक वर्ष तक शोक मनाने का निश्चय किया।

एक वर्ष तक शोक मनाने का समय उन्होंने पुराणों के अध्ययन में व्यतीता किया। कभी वे किलिमानूर में रहे। कभी पत्नी और बच्चों के पास मावलेकिरा चले जाते। वहां भी रामायण, महाभारत, भागवत का अध्ययन करते रहते।

दीवान माधवराव ने भी पुराणों के अध्ययन की सलाह दी थी। उन्होंने यह भी कहा था कि इन ग्रंथों के प्रसंगों पर चित्रांकन किया करो। रवि वर्मा को उनकी सलाह याद थी। मावलेकिरा में उनके पास समय ही समय था। वे पौराणिक प्रसंगों का चित्रांकन करते। अन्य विषयो के भी चित्र बनाते।

रवि वर्मा एक अच्छे घुड़सवार थे। उन्होंने महाराणा प्रताप और शिवाजी के भव्य चित्र बनाये।

दिन इसी तरह बीत रहे थे। एक दिन उनके छोटे भाई राज वर्मा मावलेकिरा आये। उन्होंने उन्हें बताया कि मैसूर के महाराजा ने उन्हें निमंत्रित किया है। स्वय दीवान पत्र लेकर आये है। अतः आपका किलिमानूर चलना आवश्यक है।

रवि वर्मा तो मावलेकिरा छोड़ना ही चाहते थे। उनका मन वहां नही लग रहा था। वे यात्रा की तैयार करने लगे। पत्नी ने थोड़ी नाराजगी प्रकट की। पर उन्होंने उसे समझा दिया।

किलिमानूर पहुंचकर उन्होंने मैसूर के दीवान साहब से भेंट की। उनका नाम था—राघवन।



श्रीकृष्ण और बलराम

(साभार: श्री जयचामराजेंद्र कला दीर्घा, जगन मोहन पैलेस, मैसूर)

दीवान साहब ने बड़े आदर के साथ महाराजा मैसूर का पत्र रवि वर्मा को दिया। कहा, "महाराजा चामराज वाडियार ने आपको निमंत्रित किया है। वे चित्रकला के प्रेमी हैं। वे जानते हैं कि आपको देश में ही नहीं, विदेशों

मे भी पुरस्कार मिले है। महाराजा की इच्छा है कि आप राज-परिवार के सदस्यो के चित्र बनाए।"

रवि वर्मा ने विनम्रता से कहा, "हम महाराजा साहब की कृपा के लिए आभारी हैं। आप मैसूर चलिए। हम भी यात्रा की तैयारी पूरी कर पहुचते है।"

दीवान साहब राघवन प्रसन्न होकर चले गये।

कुछ दिनों बाद रवि वर्मा भी अपने भाई राज वर्मा के साथ मैसूर पहुंचे। मैसूर में उनका भव्य स्वागत किया गया। महाराजा चामराज वाडियार भी बड़े स्नेह से मिले। रवि वर्मा और उनके साथ आये लोगो के रहने के लिए एक विशेष हवेली का इतजाम किया गया।

रवि वर्मा दो माह तक मैसूर में रहे। इस बीच दिन में राजघराने के सदस्यो के चित्र बनाते। सध्या को सगीत-नृत्य की सभाओं मे भाग लेते।

अब मैसूर मे उनका कार्य समाप्त हो गया। महाराजा चामराज वाडियार चित्र देखर प्रसन्न हुए।

किलिमानूर प्रस्थान का दिन निकट आता जा रहा था। रवि वर्मा तेजी से शेष कार्य पूरा करने में लगे हुए थे। एक दिन दीवान राघवन ने रवि वर्मा को महाराजा का संदेश दिया। दूसरे दिन प्रातः उन्हें राजमहल में बुलवाया गया था।

दूसरे दिन प्रातः दोनो भाई राजमहल पहुचे। महाराजा उनसे स्नेह से मिले। फिर दोनो भाइयो को अपने साथ आने को कहा।

महल के बायीं ओर एक विस्तृत आंगन था। उसमें शाही हाथियो की कतार लगी थी।

महाराजा ने रवि वर्मा से कहा, "राजा रवि वर्मा, इन हाथियो मे से दो हाथी पसंद कर लीजिए।"

रवि वर्मा ने दो नन्हें हाथियों को पसद किया। फिर वे अपने आवास लौट आए। चाहते थे कि शेष कार्य पूरा कर किलिमानूर लौट जाए। जब वे अपना कार्य समाप्त कर लौटने लगे तो महाराजा ने पारिश्रमिक स्वरूप एक बड़ी धनराशि दी।

मैसूर से एक दिन रवि वर्मा अपने भाई के साथ किलिमानूर लौट आए। हाथी भी उनके साथ थे। माता-पिता को उनके सम्मान का विवरण पाकर प्रसन्नता हुई। गर्व भी हुआ।

सतान का यश बढने से माता-पिता को प्रसन्नता तो होती ही है।

उसी वर्ष अर्थात् सन् 1885 मे तिरुवनन्तपुरम् मे एक घटना घटी।

महाराजा विशाखम का भी निधन हो गया। अब मूमल तिरुनाल नये महाराजा बने। उन्हें ललित कलाओ से विशेष प्यार नही था। पर वे रवि वर्मा का आदर करते थे। वे जानते थे कि रवि वर्मा के साथ अन्याय हुआ है। उन्होने इस अन्याय के निराकरण का निश्चय किया। उन्होने रवि वर्मा को तिरुवनन्तपुरम् निमत्रित किया।

महाराजा मूमल तिरुनाल ने रवि वर्मा से पूछा, "आपको स्वर्गीय नरेश से कोई शिकायत तो नही थी?"

"नही महाराज, शिकायत कैसी? मेरे मन मे उनके प्रति कोई दुर्भावना नही। मैने सदा उनका आदर किया है।" रवि वर्मा ने उत्तर दिया।

इस उत्तर से महाराजा मूमल तिरुनाल को संतोष हुआ।

अनुकूल अवसर पाकर एक दिन रवि वर्मा ने महाराजा मूमल तिरुनाल को एक सुझाव दिया। कहा, "यहां पर एक कला-दीर्घा की स्थापना की जाए। इससे चित्रकला को बढ़ावा मिलेगा।"

महाराजा मूमल तिरुनाल यह सुझाव टाल गए। कहा, "देखेंगे। अभी और भी कई जरूरी कार्य हैं। कला-दीर्घा की स्थापना में अभी समय लगेगा।"

रवि वर्मा समझ गए। महाराजा की कोई विशेष रुचि नहीं है। फिर उन्होंने यह सुझाव दोबारा नहीं रखा।

समय के पंख होते हैं। वह उड़ता ही जाता है। कभी किसी के लिए नहीं ठहरता। समय को कोई पकड़ नहीं पाया है। हाँ, समय के साथ-साथ चला जा सकता है। पर समय के साथ चलना आसान भी नहीं होता।

रवि वर्मा समय के साथ चल रहे थे।

कभी तिरुवनन्तपुरम्

कभी किलिमानूर

कभी मावलेकिरा

इन तीनों स्थानों में उनका समय बीतता। इसी बीच वे चित्र भी बनाते। देश और विदेश में आयोजित प्रदर्शनियों में भाग लेते।

लेकिन इसी बीच रवि वर्मा को एक और आघात सहना पड़ा।

मामा तो चले ही गए थे। अब उनकी माँ उमा भी बीमार रहने लगी थीं।

रवि वर्मा आशंका से काँप उठे। क्या माँ भी साथ छोड़ देंगी!

पर पूरे जीवन कौन किसका साथ देता है? कभी-न-कभी तो जाना ही पड़ता है। बिछुड़ना ही होता है।

उमा की जीवन-यात्रा भी समाप्त हो गई।

उमा का सभी आदर करते थे। वे कवयित्री थीं। आयुर्वेदिक चिकित्सा भी जानती थीं। अपने इन्हीं गुणों के कारण वे उमा नहीं, गुणवती नामपुली के नाम से जानी जाती थीं।

माँ के निधन से रवि वर्मा को अपार दुख हुआ। वे सदैव उनकी याद किया करते। पुत्र को व्याकुल देखकर पिता ने उसे समझाया। एक बार फिर कहा कि जन्म-मरण तो चक्र है। यह चक्र तो पूरा होना ही है। कोई इसे रोक नही सकता। रोकना भी नहीं चाहिए। यह प्रकृति के विरुद्ध होगा। ईश्वर के विधान के विपरीत होगा। पिता ने कहा, "बेटा, कामकाज में मन लगाओ। तुम्हारी माँ ने जीवन भर अपने कर्तव्य पूरे किए। तुम भी अपने कर्तव्य पूरे करो। शोक से कभी कुछ नहीं मिला है।"

पिता की बातों से रवि वर्मा को सांत्वना मिली।

सन् 1888 की बात है। बड़ौदा के महाराजा गायकवाड़ गरमी मे उटकमंड आए। श्री माधवराव के जरिए उन्होंने रवि वर्मा को भी वहाँ बुलवाया। महाराजा गायकवाड़ बड़ौदा मे एक नया राजमहल बनवा रहे थे। उसके दरबार को वे तैल-चित्रो से सुसज्जित करना चाहते थे। उनकी इच्छा थी कि वे चित्र रामायण, महाभारत और पुराणो के प्रसगो पर आधारित हो। रवि वर्मा से उपयुक्त और कोई चित्रकार उन्हे नजर नही आ रहा था।

उन्होने रवि वर्मा से अपनी यह इच्छा व्यक्त की। कहा कि आप नये राजमहल के लिए चित्र बनाएँ।

रवि वर्मा ने पूछा, "महाराज, मै अवश्य यह कार्य करूँगा। कितने चित्रो की आवश्यकता होगी?"

"यही कोई बारह से चौदह।"

"ठीक है, महाराज, पर एक बात है। इसमे समय लगेगा।"

"कोई बात नही। मैं चाहता हूँ कि चित्र सुदर बने।"

"ईश्वर की कृपा होगी तो अवश्य सुंदर बनेगे। एक निवेदन है, महाराज! मै चित्र बनाने के पूर्व सारे देश का भ्रमण करना चाहता हूँ। इच्छा है कि इस देश के विभिन्न स्थलों का, वहा की वेशभूषाओं का तथा जन-जीवन का अध्ययन करूँ।"



दूत के रूप में श्रीकृष्ण

(साभार : श्री जयचामराजेंद्र कला दीर्घा, जगन पैलेस, मैसूर)

ठीक है। यह तो अच्छा सुझाव है। हम इसकी व्यवस्था कर देंगे।"

महाराजा गायकवाड़ से विदा लेकर रवि वर्मा किलिमानूर लौट आए। फिर सारे देश के भ्रमण की तैयारी करने लगे।

एक दिन वे देश-व्यापी यात्रा पर निकल पड़े। भाई राज वर्मा भी साथ थे। दोनों भाइयों ने राजपूताना, दिल्ली, लाहौर, आगरा, अवध, काशी, कलकत्ता आदि की यात्रा की। फिर वे दक्षिण के भी कई स्थलों पर गए—जैसे मायावरम्, चिदाम्बरम्, श्रीरंगम्, मदुरई।

रवि वर्मा को लगा, यह देश कितना विशाल है! कितना विविध है! पहनावा अलग, बोली अलग, खान-पान अलग। पर इस विविधता में भी एकता है। सबकी कला, संस्कृति एक है।

यात्रा कर वे किलिमानूर लौट आए।

किलिमानूर आकर उन्होंने व्यास, वाल्मीकि, कालिदास की रचनाओं का फिर से अध्ययन किया।

इसके बाद उन्होंने चित्र बनाना आरंभ किया।

राज वर्मा और मंगला भी उनकी सहायता करने लगे।

रवि वर्मा ने अनेक चित्र बनाए। बाद में ये चित्र बहुत लोकप्रिय हुए। ये सभी चित्र पौराणिक प्रसगों पर थे।

'विश्वामित्र-मेनका', 'अर्जुन और सुभद्रा', 'द्रौपदी चीर-हरण', 'हरिचंद्र-तरामती', 'शांतनु-गंगा'. 'कीचक-सैरंध्री', 'सीता-स्वयंवर', 'देवकी-कृष्ण'—जैसे शीर्षकों वाले चित्रों की उन्होने रचना की।

सन् 1890 में उन्होंने इन चित्रों का कार्य पूरा किया।

अब ये चित्र बड़ौदा भेजे जाने थे। रवि वर्मा चाहते थे कि तिरुवनन्तपुरम् के कला-प्रेमी भी इन चित्रों को देख लें। उन्होंने बड़ौदा महाराजा से अनुमति माँगी। उन्होंने सूचना भिजवाई, 'अवश्य, वे चित्र प्रदर्शनी में रखे जाएँ।'

तिरुवनन्तपुरम् में इन चित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। बड़ी संख्या में कला-प्रेमी इन चित्रों को देखने आए। सब ने रवि वर्मा की कला की प्रशंसा की।

तिरुवनन्तपुरम् में इस चित्र प्रदशनी के आयोजन का एक उद्देश्य था। रवि वर्मा चाहते थे कि लोगों की चित्रकला में रुचि पैदा हो। इसमें वे सफल रहे।

इस प्रदर्शनी की खबर बंबई भी पहुँची। चित्रों को बंबई होते हुए ही बड़ौदा भेजा जाना था। बंबई के कुछ लोग चाहते थे कि वहाँ भी इस प्रदर्शनी का आयोजन हो।

रवि वर्मा को क्या आपत्ति होती!

हाँ, बड़ौदा के महाराजा से अनुमति लेना आवश्यक था। उनकी अनुमति से बंबई मे भी इन चित्रों की प्रदर्शनी की गई। वहाँ भी लोगों ने इन चित्रों की प्रशंसा की।

आखिर, एक दिन चित्र बंबई से बड़ौदा पहुँच ही गए। रवि वर्मा और राज वर्मा भी साथ थे।

बड़ौदा में भी इन चित्रों की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई। एक उद्यान में स्थित विशाल भवन में ये चित्र रखे गए।

चित्र देखने के लिए कितने लोग आए, इसे जानने के लिए एक उपाय खोजा गया।

भवन के द्वार पर दो घड़े रखे गए। इनमें से एक घड़ा खाली था। दूसरे में छोटे-छोटे कंकड़ रखे थे, जो दर्शक प्रवेश करता, वह एक कंकड़ उठाकर खाली घड़े में डाल देता।

पहले दिन ही छह सौ लोगों ने ये चित्र देखे। रवि वर्मा प्रसन्न हुए। महाराजा गायकवाड़ को इसकी सूचना मिली, तो वे भी खुश हुए।

अगले दिन एक विचित्र घटना घटी।

लोगों ने इन चित्रों को देखकर हाथ जोड़ने शुरू कर दिए। उनके पास पैसे भी चढ़ाने लगे। यह देखकर रवि वर्मा को आश्चर्य भी हुआ। थोड़ा दुख भी हुआ लोगों की अज्ञानता पर। पर वे क्या कर सकते थे! यह लोगों की

भावना का प्रश्न था। फिर भी उन्हें संतोष था। चलो, किसी बहाने तो लोगों ने चित्र देखे। कुछ के मन मे तो जरूर कला के प्रति चाव उत्पन्न हुआ होगा।

प्रदर्शनी समाप्त होने के पश्चात ये चित्र दरबार-भवन मे लगा दिए गए। स्वय रवि वर्मा ने सारी व्यवस्था की देखभाल की।

उनका कार्य पूरा हो चुका था। अब घर लौटने का समय आ गया था।

रवि वर्मा ने महाराजा गायकवाड़ से वापसी की अनुमति माँगी। महाराजा गायकवाड़ उनसे बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने दरबार का आयोजन किया। उसमें सभी सरदार उपस्थित थे। बड़ौदा के विशिष्ट नागरिक भी निमंत्रित थे। महाराजा गायकवाड़ ने स्वयं रवि वर्मा का सम्मान किया। उन्हे और राजा वर्मा को मान-वस्त्र भेंट किए। धनराशि भेट की।

दरबार समाप्त हुआ।

दूसरे दिन रवि वर्मा भाई के साथ बंबई रवाना होने वाले थे। प्रस्थान के पूर्व महाराजा गायकवाड़ उनसे मिलने आए। उन्होने उन्हें एक अनोखी भेट दी।

यह भेंट क्या थी?

देखने में साधारण, पर किसी चित्रकार के लिए महत्वपूर्ण! दो बड़ी तश्तरियों में एक बड़ी कंपनी के बने विविध रंगों के ट्यूब सजाकर रखे गए थे। तीसरी तश्तरी में विभिन्न आकार की कूचियाँ थीं। यह भेंट पाकर रवि वर्मा गद्‌गद हो उठे। उनकी आँखो मे आनंद के आँसू छलक आए।

महाराजा ने विदा ली। रवि वर्मा भी भाई के साथ स्टेशन रवाना हुए। स्टेशन पर दीवान ने उन्हें एक पत्र भेट किया। यह पत्र महाराजा गायकवाड़ का था। पत्र अंगरेजी में था—केवल दो पंक्तियों का। महाराजा गायकवाड़ ने लिखा था—

डियर राजाजी,

यू. आर प्रिंस अमंग पेटर्स एंड पेटर अमंग्स प्रिंस।

यूवर्स लॅविंग

सयाजी

अर्थात्,

प्रिय राजाजी,

आप चित्रकारों मे राजुकमार हैं और राजकुमारों मे चित्रकार।

आपका स्नेही

सयाजी

इस प्रकार रवि वर्मा चित्रकारो में राजा यानी सर्वश्रेष्ठ हो चुके थे। उन्होने अपने राजा नाम को भी सार्थक कर दिया था।

रवि वर्मा अपने भाई राज वर्मा के साथ बड़ौदा से बंबई पहुँचे। बंबई पहुंचने पर वे पुराने बंगले में ठहरे। उनके मन मे एक योजना बन रही थी। वे चाहते थे कि बंबई में एक छापाखाना स्थापित किया जाए। इस छापेखाने मे उनके बनाए चित्र छापे जाएँ। इससे चित्रकला का भी प्रचार होगा।

बंबई में उनके अनेक मित्र थे। इनमे कई प्रतिष्ठित लोग थे—जैसे, दादाभाई नौरोजी, न्यायमूर्ति रानाडे। रवि वर्मा ने उनसे भी परामर्श किया। उनके पास थोड़ी पूँजी थी। महाराजा गायकवाड़ ने उन्हें पचास हजार रुपये दिए थे। पर इतनी राशि से प्रेस नहीं खुल सकता था। किसी को भागीदार बनाना आवश्यक था। अंत मे बंबई के एक उद्योगपति पूँजी लगाने के तैयार हो गए। उनका नाम था—गोवर्धनदास माखन जी!

अब क्या था! रवि वर्मा और राज वर्मा छापाखाना खोलने की तैयारी में जुट गए। अपने निवास स्थान की निचली मंजिल में ही उन्होंने छापाखाना खोलने का निश्चय किया। उन्होंने पास का एक मकान भी किराए पर ले लिया। छापेखाने के यंत्र विदेश से मँगाए गए थे। उनके साथ चार जर्मन विशेषज्ञ भी आये थे। इनमें से एक का नाम स्लायसर था। वह थोड़ी-बहुत संस्कृत भी जानता था।

उन दिनो आज की भाँति छपाई नहीं होती थी। तब लिथोग्राफी से छपाई होती थी। इसमें पहले बड़े-बड़े पत्थरों पर चित्र अंकित किया जाता, फिर



शकुंतला : पैर में कांटा लगने के बहाने दुष्यंत को देखती हुई

(साभार : श्री चित्र कला-वीथी, तिरुवनन्तपुरम्)

जर्मन विशेषज्ञ उन पर खुदाई करते। यह बहुत कठिन कार्य था। समय भी बहुत लगता था। पर छपाई बहुत सुंदर होती थी।

शीघ्र ही छापाखाना शुरू हो गया। छापेखाने में देवी-देवताओं के चित्र छापे जाते। बाजार में जाते ही वे चित्र हाथोंहाथ बिक जाते। छापाखाना आर्थिक दृष्टि से सफल हो रहा था।

इसी बीच एक दिन रवि वर्मा को एक जरूरी संदेश मिला। यह संदेश बड़ौदा के महाराजा सयाजी गायकवाड़ ने भिजवाया था। शिकागो में एक चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा था। महाराजा गायकवाड़ चाहते थे कि रवि वर्मा इस चित्र प्रदर्शनी के लिए अपने चित्र भेजें।

रवि वर्मा ने महाराजा को सूचना भिजवा दी कि वे नये चित्र बनाकर भेजेंगे। पर प्रश्न यह था कि किस विषय पर चित्र भेजें जाएँ। काफी सोच-विचार के बाद निर्णय किया गया। भारतीय जीवन पर आधारित चित्र ही भेजे जाएँ। अब रवि वर्मा ऐसे चित्र बनाने में जुट गए।

इसी बीच एक दिन श्री गोपालकृष्ण गोखले रवि वर्मा से मिलने आए। गोपालकृष्ण गोखने को गांधीजी अपना राजनीतिक गुरु मानते थे।

रवि वर्मा ने बड़े चाव से गोखलेजी को अपना प्रेस दिखाया। फिर अपने बनाए चित्र भी दिखाए।

xxx xxx

बंबई में रवि वर्मा की ख्याति दिनों-दिन बढ़ती जा रही थी। उन्हें शिकागो की प्रदर्शनी मे भी पदक मिला था। उन दिनों स्वामी विवेकानंद शिकागो में ही थे। वे भी इस प्रदर्शनी में गए थे। उन्होंने भी रवि वर्मा के चित्रों को देखा था। उन पर संतोष व्यक्त किया था। इस प्रदर्शनी में रवि वर्मा ने दस चित्र भेजे थे। वे सभी चित्र प्रदर्शन के लिए स्वीकृत कर लिए गए थे।

xxx xxx

एक दिन की बात है।

एक दिन स्वामी विवेकानंद रवि वर्मा के निवास स्थान पर आए। रवि वर्मा के आनंद का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने बड़े आदर के साथ स्वामी जी को अपनी रंगशाला, अपना प्रेस दिखलाया। स्वामीजी बहुत प्रसन्न हुए। वे शाम तक वहीं रहे। इसी बीच आसपास के इलाके मे स्वामीजी के आने की खबर फैल गई। लोग उनके दर्शन के लिए आने लगे।

शाम को स्वामीजी ने रवि वर्मा से विदा ली। स्वामीजी के दर्शन से रवि वर्मा में नया उत्साह जागा। वे और मन लगाकर नये चित्र बनाने लगे।

xxx xxx

सन् 1898 का वर्ष था। यह बंबई और पूनावासियों के लिए महामारी बन कर आया। बंबई और पूना में प्लेग फैल गया। अनेक लोगो की मृत्यु हो गई। इसका असर रवि वर्मा के छापेखाने पर भी पड़ा। उसमे घाटा होने लगा। रवि वर्मा का भागीदार घबराया। कहीं पैसा न डूब जाए। उसने रवि वर्मा से अपने रुपये वापस माँगे। रवि वर्मा स्वाभिमानी थे। वे नहीं चाहते थे कि कोई उन पर शंका करे। कोई अगुली उठाए।

सौभाग्य से उनके पास रुपये थे। उन्होंने उसी समय वे सारे रुपये भागीदार को दे दिए। अब वे अकेले प्रेस के मालिक थे। कुछ देर बाद उनके पास स्लायसर आया। रवि वर्मा ने उसे बताया कि अब वे अकेले प्रेस के स्वामी हैं। इस खबर से स्लायसर भी प्रसन्न हुआ। अब वह अपनी रुचि के साथ चित्र छाप सकता था। अब कोई तगादा करने वाला नहीं था।

उसने रवि वर्मा को एक सुझाव दिया। कहा कि प्लेग के कारण मजदूर कम हो गए हैं। प्रेस को दूसरी जगह कुर्ला ले चलें। वहाँ मजदूर मिल जाएँगे।

रवि वर्मा ने कहा, "ठीक है, तुम जगह पक्की कर लो। मुझे राज वर्मा के साथ मेवाड़ भी जाना है। मेरे लौटने तक नए स्थान पर प्रेस लगा देना।"

इधर स्लायसर नई जगह की तलाश में लग गया। उधर एक दिन रवि वर्मा भाई और पुत्र के साथ मेवाड़ चले गए।

कुछ दिनों बाद जब वे लौटे तो प्रेस नयी जगह स्थापित हो गया था। अब उसके फिर से शुरू होने की देर थी।

इसी बीच एक घटना घट गई। रवि वर्मा को गवर्नर की ओर से एक समारोह मे आने का निमंत्रण मिला। उन्होंने समारोह में जाने की तैयारी शुरू कर दी।

पर ऐन वक्त पर उनका कोचवान बीमार पड़ गया। रवि वर्मा ने राज वर्मा को आवाज़ दी। दोनों भाई उसे बग्घी में बैठाकर अपने पारिवारिक चिकित्सक के पास ले गए। इसी कारण रवि वर्मा उस समारोह में भी न जा सके। पर इसका उन्हें कोई दुख नहीं था। उन्हें संतोष था कि उनके कोचवान को सही समय पर दवा मिल गई। उसका ठीक से उपचार हो गया। समारोह तो होते ही रहते हैं।

पर समारोह में उनकी अनुपस्थिति का बुरा मान लिया गया। गवर्नर के सचिव ने उन्हें पत्र भेजा। पूछा कि वे समारोह में क्यों नहीं आए? इसका तुरत स्पष्टीकरण दें।

रवि वर्मा ने वस्तुस्थिति लिखकर भेज दी। सचिव को सूचित किया कि उनका कोचवान एकाएक बीमार पड़ गया। इसीलिए वे नहीं आ सके।

चार दिन बाद उन्हें सचिव की ओर से फिर एक पत्र मिला। लिखा था– "क्या आपको गवर्नर के समारोह की अपेक्षा कोचवान की बीमारी ज्यादा महत्वपूर्ण लगी।"

रवि वर्मा ने केवल एक शब्द में उत्तर भिजवाया–'हाँ।'

कुछ दिनों बाद रवि वर्मा से मिलने एक पारसी युवती आई। उसका नाम फ्रेना था। फ्रेना को रवि वर्मा और सचिव के बीच हुआ पत्र-व्यवहार मालूम हो गया था। वह रवि वर्मा की मानवीयता से प्रभावित हुई थी। वह उनके लिए पाश्चात्य चित्रकारों के चित्रों के दो एलबम भी लाई थी।

रवि वर्मा उसे जानते न थे।

फ्रेना ने उन्हें अपना परिचय दिया। बताया कि उनके निर्भीक उत्तर से वह कितना प्रभावित हुई है। उसने कहा, "मैं आपके लिए एक छोटी-सी भेंट लाई हूँ।"

रवि वर्मा ने उससे भेंट ली। कागज खोलकर देखा तो एलबम निकले। चित्र देखकर वे अभिभूत हो उठे। उन्होने फ्रेना को धन्यवाद दिया।

इसके बाद फ्रेना अकसर उनसे मिलने आने लगी।

xxx xxx

कुर्ला में प्रेस का काम ठीक से चलने लगा था। पर अब रवि वर्मा का मन ऊब गया था। वे बंबई छोड़ देना चाहते थे।

अब छापेखाने की भाग-दौड़ उनके बस की नहीं रही थी।

पर यह छापाखाना उन्होंने बड़े चाव से लगाया था। किसी अपरिचित को बेचना भी नहीं चाहते थे। अतः उन्होंने अपने जर्मन विशेषज्ञ स्लायसर को बुलवाया। उसे सारी समस्या बतलाई। कहा कि अगर तुम छापाखाना खरीदना चाहते हो, खरीद लो। कम-से-कम तुम चित्रकला के प्रशंसक तो हो। छापाखाना लगाने में तुम्हारी भी मेहनत लगी है। अगर तुम इसे खरीदोगे तो मुझे संतोष रहेगा।

स्लायसर के लिए यह मुँहमांगी मुराद थी। वह रवि वर्मा का बहुत आदर करता था। उनके मन की व्यथा समझ रहा था। पर उसके पास अधिक रुपये न थे। उसने रवि वर्मा को अपनी विवशता बतलाई।

रवि वर्मा ने कहा, "स्लायसर, तुम जानते हो, मैंने रुपयों को कभी महत्व नहीं दिया। तुम इस प्रेस की जितनी कीमत देना चाहते हो, दे दो।"

स्लायसर क्षणभर के लिए सोच में पड़ गया, उसके पास केवल पच्चीस हजार रुपये थे। प्रेस की यह कोई कीमत न थी। उसने हिचकते हुए कहा, "राजा साहब, मेरे पास कुल पच्चीस हजार रुपये हैं। यही मेरी जमा-पूँजी है।"

"बहुत हैं। स्लायसर, आज से यह प्रेस तुम्हारा। यही नहीं। आज तक जितने भी मेरे चित्र इस प्रेस में छपे हैं, उन्हें छापने का अधिकार भी तुम्हें देता हूँ।" रवि वर्मा ने स्नेह से कहा।

स्लायसर उनकी उदारता से अभिभूत हो गया। वह कुछ बोल नहीं पाया। उसका गला रुँध गया।

रवि वर्मा ने कहा, "स्लायसर, अब देर मत करो। जल्दी से लिखा-पढ़ी करवा लो। नहीं तो मुझ पर तरह-तरह के दबाव आएँगे।"

उनकी आशंका सच थी। रवि वर्मा द्वारा प्रेस बेचने की खबर आग की तरह फैल गई। कई ग्राहक आने लगे। पुराने भागीदार भी आए। पर रवि वर्मा ने सबसे कहा, "मैंने स्लायसर को प्रेस बेच दिया है। अब वही उसका मालिक है। वह बेचना चाहे तो मुझे कोई आपत्ति नहीं। और मेरी आपत्ति का मूल्य भी क्या! अब तो मैं इसका मालिक नहीं हूँ।"

छापाखाना बेचकर रवि वर्मा को जैसे मुक्ति मिली। अब वे किलिमानूर लौटना चाहते थे। बंबई से उनका मन ऊब गया था।

एक दिन रवि वर्मा अपने भाई राज वर्मा और पुत्र के साथ किलिमानूर वापस लौट आए। अब वे ही घर के बड़े थे। उन पर ही सबका भार था।

राज वर्मा ने रंगशाला का पुनरुद्धार शुरू कर दिया। वह फिर से जीवंत हो उठी।

रवि वर्मा को अकसर अपने माता-पिता और मामा की याद आती।

दिन कैसे बीत जाते हैं।

इसी किलिमानूर में उनका जन्म हुआ। यहीं वे पले-बढ़े। बड़े हुए। यहीं उन्होने चित्रकला सीखी। कथकली सीखा। माँ से संगीत सीखा। फिर जाने कहाँ-कहाँ घूमे। और अब फिर वही किलिमानूर।

रवि वर्मा प्रातः उठते। स्नान-ध्यान, पूजा-पाठ के बाद अस्तबल में घोड़ों के बीच कुछ समय बिताते। अब उनका परिवार भी बड़ा हो गया था। राज वर्मा की पत्नी। गोदा वर्मा की पत्नी। उनके बच्चे। इनके बीच समय बिताकर वे रंगशाला में जाते। वहाँ कुछ चित्रांकन करते। धीरे-धीरे आठ माह बीत गए। उन्हें पता ही नहीं चला।

रवि वर्मा के पास अनेक स्थानों से निमंत्रण आ रहे थे। अतः एक बार उन्होंने फिर बंबई जाने का निश्चय किया। और एक दिन राज वर्मा के साथ वे पुनः बंबई में थे। वे अपने पुराने बंगले में ही ठहरे। उनसे मिलने अनेक लोग आने लगे। एक दिन स्लायसर भी उनसे मिलने आया। वह उन्हें कर्ला ले गया। छापाखाना पहले की तरह अच्छा चल रहा था। स्लायसर ने उसका नाम नहीं बदला था। वही पुराना नाम था 'रवि वर्मा चित्रशाला।'



सैरंध्री
(साभार : श्री भवानी चित्र संग्रहालय, औंध, सतारा)

यह देखकर रवि वर्मा हँस पड़े।

बंबई में रवि वर्मा ने पुनः अपनी रंगशाला शुरू की। नये-नये विषयों पर चित्र बनाने लगे। इसी बीच मद्रास में फिर चित्र प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। रवि वर्मा ने भी उसमें एक चित्र भेजा। शीर्षक था—'हुसेन सागर तालाब।' इस चित्र को 'रजत कीर्ति मुद्रा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। एक बार फिर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई।

xxx xxx

एक दिन की बात है। दादा भाई नौरोजी रवि वर्मा से मिलने आए। उन्होंने उन्हें एक खुशखबरी दी। बताया कि अंग्रेज सरकार उन्हें 'केसरे हिंद' की उपाधि से अलंकृत करने जा रही है। यह सन् 1904 की बात है। दो-तीन दिनों बाद समाचार-पत्रो मे भी यह खबर छप गई। रवि वर्मा को 'केसरे हिंद' की उपाधि से सम्मानित किया जाएगा।

कुछ मास बाद सरकार ने रवि वर्मा को 'राजा' की उपाधि से सम्मानित किया। रवि वर्मा पहले चित्रकार थे, जिन्हें यह उपाधि दी गई थी।

रवि वर्मा शांत रहे। उन्होंने इतना ही कहा, "यह मेरा नहीं, चित्रकला का सम्मान है। मै तो एक साधारण व्यक्ति हूँ। चित्रकला ने ही मुझे इस कीर्ति के शिखर तक पहुँचाया है।"

इस क्षण रवि वर्मा को एक बार फिर अपने माता-पिता, मामा और महाराजा तिरुनाल की याद आ गई। अगर वे सब जीवित होते तो कितने प्रसन्न होते!

लेकिन कुछ दिनों बाद एक दुखद घटना घट गई। रवि वर्मा के छोटे भाई गोदा वर्मा का निधन हो गया। किलिमानूर से बंबई तार आया था। गोदा वर्मा वीणावादक था। बहुत अच्छी बीणा बजाता था। उसके असामयिक निधन से रवि वर्मा टूट से गए। वे राज वर्मा के साथ किलिमानूर जाने की तैयारी करने लगे।

छोटे भाई के बिना किलिमानूर सूना हो गया था। पहले मामा गए, फिर माँ, फिर पिता और अब छोटा भाई। कितनों का विछोह बदा है भाग्य में, रवि वर्मा अकसर सोचते।

किलिमानूर में वातावरण बहुत बोझिल हो गया था। रवि वर्मा हरदम उदास रहा करते थे। राज वर्मा उनकी मनोदशा समझते थे।

इसी बीच एक दिन उन्हें मैसूर के नये महाराजा का निमंत्रण मिला। वे मैसूर में एक नया महल बनवा रहे थे। नाम रखा गया था - जगन मोहन पैलेस। नये महाराजा चाहते थे कि रवि वर्मा इस राजमहल के लिए चित्र बनाएँ। वे अपना पोट्रेट भी बनवाना चाहते थे।

यह सन् 1904 की ही बात है। राज वर्मा भाई की व्यथा जानते थे। वे सोचते थे, मैसूर जाने से भाई का मन बहल जाएगा। रवि वर्मा भी यही सोच रहे थे। उन्होंने महाराजा का निमंत्रण स्वीकार कर लिया।

मैसूर में दोनों भाइयों का भव्य स्वागत किया गया। उन्हें शेषाद्रि हाउस नामक एक हवेली में ठहराया गया। उनकी सेवा के लिए अनेक सेवक रखे गए। राजमाता प्रतिदिन दोनों भाइयों के लिए फलों की टोकरी भेजा करतीं।

रवि वर्मा दिन में चित्र बनाते। शाम को संगीत-नृत्य की सभाओं में जाते। कभी-कभी दोनों भाई चामुंडा पहाड़ी की ओर घूमने निकल जाते। एक दिन वे टीपू सुलतान की राजधानी श्रीरंगपट्टनम् भी गए।

रवि वर्मा ने जगन मोहन पैलेस के लिए जो चित्र बनाए। ये चित्र रामायण, महाभारत और भागवत के प्रसंगों पर आधारित थे।

रामायण के प्रसंगों के आधार पर रवि वर्मा ने चित्र बनाए—

'धनुष-भंग', 'जटायु-युद्ध', 'इंद्रजीत-विजय' और 'सेतु-बंधनम्'।

महाभारत के आधार पर बने चित्र थे— 'दमयंती और हंस', 'भीष्म प्रतिज्ञा', 'सैरंध्री' और 'दूत के रूप में श्रीकृष्ण'।

भागवत के आधार पर उन्होंने 'वसुदेव और देवकी की मुक्ति' का चित्र बनाया।

लेकिन इन चित्रों के चित्रांकन में एक बहुत बड़ी बाधा भी आ गई।

हुआ यह कि अचानक राज वर्मा की तबीयत खराब हो गई। पता चला, उनके पेट में ट्यूमर है।

रवि वर्मा घबरा गए। उनकी आँखों में आँसू बहने लगे। राज वर्मा से उन्हें अत्यधिक स्नेह था। वह उसे बेटे की तरह चाहते थे।

उन्होंने मैसूर के महाराजा को अपनी परेशानी बताई। वे बोले, "राजा साहब, घबराइए नहीं। आप मद्रास जाइए। वहां मेरे परिचित एक कुशल सर्जन हैं। वे आपरेशन कर देंगे। मैं मद्रास में आपके ठहरने की सारी व्यवस्था करवा दूँगा।"

"पर आपके चित्र!"

"चित्र तो बाद में भी बन जाएँगे। पहले आप अपने भाई की चिकित्सा कराइए।"

xxx xxx

रवि वर्मा बीमार राज वर्मा को लेकर मद्रास पहुंचे। डॉक्टर से मिले। डॉक्टर ने राज वर्मा को देखा। वह चिंतित हो उठा। बीमारी साधारण न थी। फिर भी उसने राज वर्मा को ठीक करने की पूरी कोशिश की। पर बीमारी बहुत बढ़ चुकी थी। राज वर्मा को बचाया नहीं जा सका।

रवि वर्मा पर तो जैसे दुख का पहाड़ टूट पड़ा। राज वर्मा का निधन उनके लिए अपूरणीय क्षति थी। एक वही तो शेष बचा था।

रवि वर्मा स्वयं को असहाय समझने लगे।

मद्रास में उनके अनेक परिचित थे। सबने उन्हें सांत्वना दी। कहा, "राजा साहब, धैर्य रखिए। अब सारे परिवार का भार आप पर ही है। आप हिम्मत हारेंगे तो कैसे काम चलेगा!"

रवि वर्मा ने भारी हृदय से भाई की अंत्येष्टि की। फिर उसका अस्थिकलश लेकर किलिमानूर रवाना हुए।

वहां उनसे अपने भाइयों की विधवा पत्नियों का दुख देखा नहीं जाता था। फिर मैसूर में महाराजा के महल के चित्र भी अधूरे पड़े थे। किलिमानूर में एक मास रहकर वे फिर मैसूर लौटे। इस बार उनके पुत्र राम वर्मा साथ थे।

रवि वर्मा ने दो महीने में सारे चित्र पूरे कर दिए। सभी चित्र प्रभावपूर्ण बन पड़े थे। पता ही नहीं चलता था कि इनके चित्रकार को कितनी पीड़ा से गुजरना पड़ा है।

कार्य पूरा करने के बाद रवि वर्मा ने किलिमानूर लौटने की तैयारी शुरु कर दी।

एक दिन महाराजा ने उनसे कहा, "राजा साहब, कुछ समय बाद सम्राट पंचम जॉर्ज आ रहे हैं। वे यहाँ कुछ समय रहेंगे। हाथियों को पकड़ने का कार्यक्रम 'खेड़ा' भी देखेंगे। मेरी इच्छा है कि इस अवसर पर आप भी रहें।"

रवि वर्मा ने उत्तर दिया, "महाराज, मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। फिर भी प्रयत्न करूँगा कि आऊँ।"

रवि वर्मा स्वय कष्ट उठाकर भी दूसरों की बात रखते थे। यद्यपि उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था। मन भी नहीं था। भाई के विछोह का दुख अभी भी उन्हें व्यथित किए दे रहा था। पर महाराजा का आग्रह था, वे अपनी व्यक्तिगत पीड़ा भूल गए। नियत तिथि पर वे मैसूर पहुँच गए।

महाराजा ने रवि वर्मा की सुख-सुविधा का पूरा ध्यान रखा। उन्होंने विदेश से एक कार मँगवाई थी। यह कार उन्होने रवि वर्मा की सुविधा के लिए दे दी।

मैसूर में सम्राट पंचम जॉर्ज आए। उनका भव्य स्वागत किया गया। महाराजा ने उनसे रवि वर्मा का परिचय कराया।

फिर वे सब एक दिन हाथियों का खेड़ा देखने निकल पड़े।

सम्राट पंचम जॉर्ज के प्रस्थान के बाद रवि वर्मा भी किलिमानूर लौट आए। वे बुरी तरह थक गए थे। शरीर भी जैसे जवाब दे रहा था। उन्हें मधुमेह की शिकायत थी। इसके लिए वे आयुर्वेदिक औषधि ही ले रहे थे।

सन् 1906 में रवि वर्मा की बड़ी पौत्री का विवाह त्रावणकोर राजघराने में हुआ। उसका नाम था—रानी सेतु लक्ष्मी बाई। उन्होंने बीमारी के बावजूद विवाह-समारोह में भाग लिया। तिरुवनन्तपुरम् में वे तीन मास रहे। इसके बाद वे कोटोल्लम गए। वहाँ वे एक आश्रम बनाना चाहते थे।

अपनी 57वीं वर्ष गाँठ पर ही उन्होंने एक घोषणा कर दी थी। 60 वर्ष पूरे करने के बाद वे संन्यास ले लेगे। एक आश्रम बनाकर उसमें रहेंगे। पर उनकी बीमारी बढ़ती गई।

इसी बीच उनके बायें कांधे में कारबंकल का फोड़ा निकल आया। दरबार के चिकित्सक ने उसमें चीरा लगाया। उससे उन्हें थोड़ा आराम मिला। पर फोड़ा पूरी तरह ठीक नहीं हुआ।

इसी बीच रवि वर्मा की बीमारी का समाचार सारे देश में फैल गया।

अंतर्राष्ट्रीय समाचार एजेंसी रायटर ने तो उनकी बीमारी का हाल देने ले लिए किलिमानूर में शिविर ही स्थापित कर दिया।

रवि वर्मा के प्रशंसकों और हितैषियों में चिंता व्याप गई। सब उनके स्वास्थ्य-लाभ की कामना करने लगे।

रवि वर्मा के एक मित्र श्री एम. केशव जोशी बंबई से आ गए थे। वे भी रवि वर्मा की देखभाल करते।



बंजारे

(साभार : श्री चित्रकला दीर्घा, तिरुवनन्तपुरम्)

रवि वर्मा हँस कर उनसे कहते, "जोशी, चिंता मत करो। बस, यह फोड़ा ठीक हो जाए। मैं तुम्हारे साथ ही बंबई चलूँगा। तुम्हारे प्रेस का उद्घाटन करूँगा।

बीमारी से ध्यान हटाने के लिए उन्होंने फिर से चित्रांकन का सहारा लिया।

वाणभट्ट सस्कृत के महान कवि थे। उनकी प्रसिद्ध रचना है– कादम्‍ री! रवि वर्मा कादम्बरी के कुछ प्रसंगो पर चित्र बनाना चाहते थे।

उन्होने चित्र-फलक पर कैनवास लगाया। फिर आकृतियाँ खींचीं। नमे रंग भरने के लिए कूची उठाई। पर कूची उनके हाथ से गिर पड़ी।

ऐसा कभी नहीं हुआ था।

क्या यह कोई संकेत था!

शायद!

कारण रवि वर्मा की दशा तेजी से बिगड़ती गई। अब उनका अंत समय आ गया था।

उन्होंने परिवार वालों से कहा, "अब विदा लूँगा। मुझे दूर्वा पर लिटा दो।"

उनकी इच्छा पूरी की गई।

ब्राह्मण आ गए। वे वैदिक मंत्रों का उच्चारण करने लगे।

रवि वर्मा ने भी मंत्रोच्चार की कोशिश की। पर स्वर निकल नहीं पाए।

यह 2 अक्तूबर, 1906 की दोपहर की बात है।

इसी दिन रवि वर्मा ने संसार से सदा-सदा के लिए विदा ले ली। पर वे अमर हैं!

अपने चित्रों के रूप में वे सदा जीवित रहेंगे।

राजा रवि वर्मा के कुछ रंगीन चित्र

इस पुस्तक में बीच-बीच मे रवि वर्मा के प्रतिनिधि चित्रों को छापा गया है। छपाई की सुविधा की दृष्टि से उन चित्रों को उनके मूल रंगों में न देकर श्वेत श्याम छवि के रूप में मुद्रित किया गया है। यथास्थान चित्रों का सक्षिप्त परिचय भी दे दिया गया है।

पाठकों को रवि वर्मा के रंग-संयोजन की एक बानगी देने के लिए और मूल चित्रों का रसास्वादन कराने की दृष्टि से यहाँ उनके छह चित्रों को रंगीन छवि के रूप में पुनर्मुद्रित किया जा रहा है। इसका मुद्रण मूल पेंटिंग से कर पाना संभव न था इसलिए हमने मुद्रित चित्रों को यहाँ पुनर्मुद्रित किया है। इस द्रविड़ प्राणायाम के कारण छोटे आकार मे छपे इन चित्रों को देखकर वह आनंद तो नहीं प्राप्त हो सकता जो बड़े आकार में बनी मूल पेंटिंग को निरख कर मिल सकता था। फिर भी इनसे रवि वर्मा की चित्रकला की सराहना में सहायता मिलेगी।

राजा रवि वर्मा ने रामायण, महाभारत, भागवत् एव पुराणों का विधिवत अध्ययन किया था। उनके मन में बार-बार यह बात आती कि इन ग्रंथों में चित्रांकन के लिए अपार विषय हैं। क्यों न यूरोपीय चित्रांकन शैली का उपयोग कर इन विषयो पर चित्र बनाए जाएँ।

और उन्होंने पौराणिक प्रसंगों को चित्रों में उतारना शुरू कर दिया। उन्होने कालिदास के 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' का एक प्रसंग चुना। शकुंतला अपने आप में खोई हुई दुष्यंत को प्रेम-पत्र लिख रही है। 'शाकुंतलम्' से प्रेरित उनका यह पहला चित्र था। इस चित्र को एक प्रतियोगिता में गवर्नर जनरल का स्वर्णपदक मिला।

सर मोनियर विलियम्स ने 'शाकुंतलम्' को अंग्रेजी में रूपांतरित किया था। उन्हें यह चित्र इतना अच्छा लगा कि इसे उन्होने अपनी पुस्तक में छाप दिया। इस प्रकार इस चित्र को अतर्राष्ट्रीय ख्याति मिली।

राजा रवि वर्मा में धार्मिक संस्कार बड़े प्रबल थे। वे श्लोकों और मंत्रों का पाठ भी करते थे। जब वे वंदना करते तो उन्हें लगता कि देवी-देवता उनके पास आ गए हैं। अपने ध्यान में रवि वर्मा इन देवी-देवताओं के रूप-स्वरूप की कल्पना करते। उन्होंने अनेक देवियों का चित्रांकन किया विशेष कर सरस्वती और मुकुम्बिका देवी का।

तरुणाई के दिनों में एडवर्ड मूर की एक पुस्तक रवि वर्मा के हाथ लगी। उसमें बाल्य लीलावतार श्रीकृष्ण का भी एक चित्र था। इस चित्र को देखकर वे अत्यधिक पुलकित हो उठे। आगे चलकर उन्होंने श्रीकृष्ण के जीवन से संबंधित अनेक प्रसंगों पर अपनी शैली में चित्र बनाए। यहाँ दिया गया चित्र राधा के मान को दर्शाता है।

कहते हैं कि चित्रकला के प्रसिद्ध सिद्धांत *'प्रिंसिपल ऑफ पर्सपेक्टिव'* की शुरुआत रवि वर्मा ने ही की। उनके अधिकांश चित्रों में यह सिद्धांत परिलक्षित होता है।

पौराणिक प्रसंगों के साथ-साथ मध्यकालीन वीरों की गाथाएँ भी रवि वर्मा को बहुत रोमांचित करती थीं। यथार्थवादी शैली में बना शिवाजी का चित्र प्रभावित तो करता ही है साथ ही अनेक सूक्ष्म विवरणों को भी प्रस्तुत करता है।

रवि वर्मा की रंगशाला में देवियों और स्त्रियों के चित्रों की भरमार थी। विशेषकर नायर जाति की स्त्रियों के अनेक सुंदर चित्र उन्होंने बनाए थे। सन् 1873 की चित्र प्रतियोगिता में रवि वर्मा को जो स्वर्णपदक मिला था वह 'एक नायर स्त्री' चित्र के लिए ही था।

सन् 1874 में उन्हें पुनः चित्र प्रतियोगिता में स्वर्णपदक मिला। इस बार यह पुरस्कार उन्हें 'वाद्य यंत्र बजाती हुई तमिल युवती' के लिए मिला था।



शकुन्तला



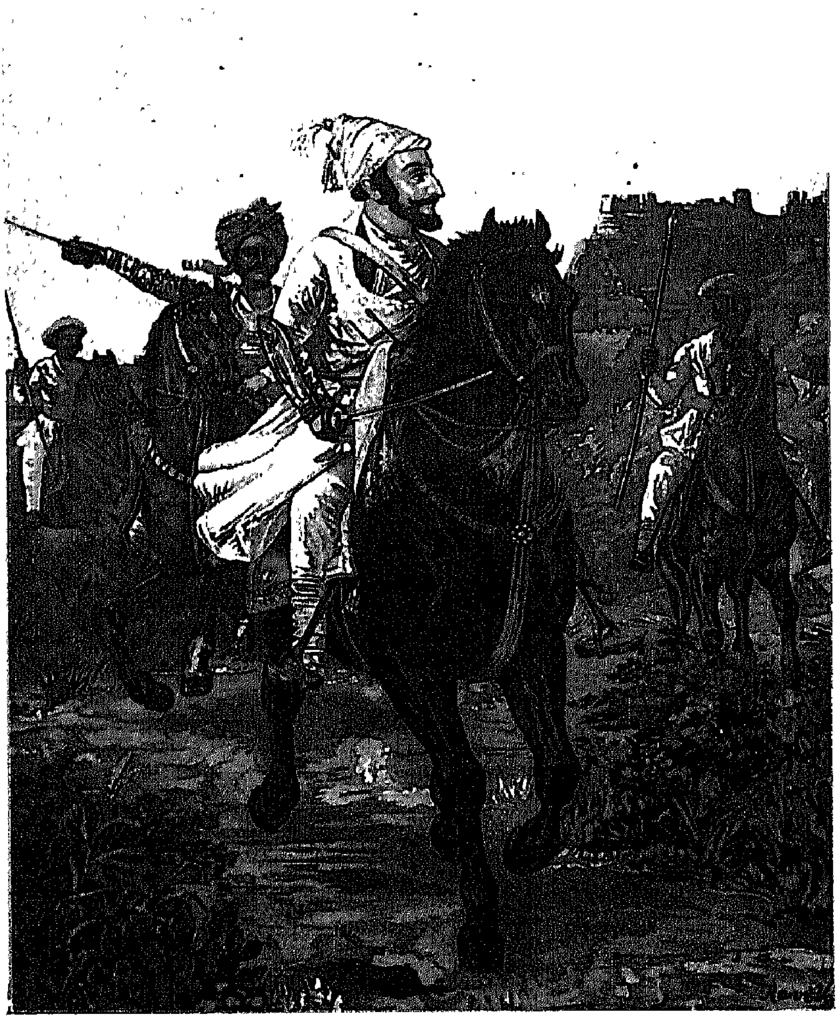
सरस्वती



मानिनी राधा



मन्थोवरी



शिवाजी



कादम्बरी

3. He has poor expressive-vocal ability (disorganised thought, inadequate syntax, and dearth of ideas for expression).

4. He manifests expressive-motor difficulties (spellin disorders, drawing disorders, omission and reversal of letters, omission of whole words).

Disorders of Attention :

1. The child cannot sustain his attention for the required amount of time.

2. He is unable to attend to the relevant and ignore the irrelevant. He may be attracted to every stimulus that surrounds him.

3. He can be diverted easily from one topic to another.

4. He may provide excessive attention to unimportant details while disregarding the essentials (attends to the page number than to the printed matter or the picture on the page).

Disorders of Memory :

1. Disorders of memory involve difficulty in the assimilation, storage, and retrieval of information and may be associated with visual, auditory, or other learning processes.

2. The LD child has difficulty in reproducing rhythm patterns, sequence of digits, words, or phrases.

3. He has difficulty in revisualising letters, words or forms.

4. Both the short-term and the long-term memory of the LD child are poor.

5. He fails to see the relationship between his present and past experiences.

IDENTIFICATION :

1. Near average, average, or above average in intellectual ability.

2. Disinhibition (impulsive talk and/or action).

3. Inattention (inability to focus on one activity).
4. Distractability (attention disturbed by noise, movement, visual stimuli, or one's thoughts).
5. Perseveration (inability to shift easily from one activity to another).
6. Quick mental fatigue for sustained performance on tasks.
7. Social misperception (immature or inappropriate responses in social encounters).
8. Reversing, rotating, and/or transposing letters or words in reading and writing.
9. Spatial difficulties (problems with orientation and directionality).
10. Difficulty in understanding and/or remembering oral messages.
11. Difficulty in interpreting and/or remembering visual messages.
12. Language difficulties (problems with word-finding and word-organising ability.
13. Confused or disorganised approach to task performance, employing an inefficient trial-and-error method.
14. Thinking problems (difficulty with abstract organisation of ideas).
15. Generally poor fine motor coordination
16. Clumsiness.
17. Hyperactivity (unusually high rate of purposeless motor activity).
18. Hypoactivity (unusually low amount and rate of motor activity).

INSTRUCTIONAL TECHNIQUES : (Understanding & Remembering) :

1. Use short, brief directions
2. Use consistent language
3. Write directions or steps on the chalkboard or a poster.
4. Alternate the use of colors for each step in a series of directions.
5. Record directions on a cassettee tape.
6. Use diagrams or pictorial illustrations.
7. Provide a completed example.

Providing Structure :

1. Have the pupil keep a daily record of everything(s) he does with the amount of time engaged in the activities.
2. Have the pupil list all future events that need to scheduled. Provide a hypothetical list to suggest possible events.
3. After the pupil has an idea of how time is spent and future events that must be planned, it is time to develop a weekly schedule.
4. Once the weekly schedule is being planned and implemented successfully, the pupil can begin to keep a monthly schedule.
5. Pupils in the upper grades may find useful a schedule from that provides for specific subject matter assignments and various types of activities.

Thinking Skills :

1. Have the student collect data by reading, listening, and observing.
2. Have the student discriminate differences and similarities in the data. Teacher questioning can be used to prod the pupil until the ability to make these discriminations improve.
3. Have the pupil categorise and classify the data. Labelling is important during this stage.

4. Have the pupil recategorise and classify the data in other ways. This continuous reorganisation and restructuring is necessary to integrate new information and new experiences into the pupil's mental structures.

5. Have the pupil make predictions based on the data.

6. Have the pupil generate alternative predictions using the same data.

7. Have the pupil evaluate the alternative predictions by comparing and contrasting possible outcomes and their effects.

Improving Memory :

1. Have pupils repeat telephone numbers and street addresses of emergency service facilities (police, fire, etc.).

2. Have pupils learn songs by listening to the words and tunes.

3. Play games in which the first pupil makes a statement, the next pupil repeats that and adds a statement, the third pupil repeats those statements and adds one, and so on.

4. Have pupils make up rhymes related to subject matter, such as, 'In 1492 Columbus sailed the ocean blue".

5. Have pupils repeat oral directions.

6. Have pupils resequence cartoon strips (without words) that have been cut apart. This forces them to observe details in the pictures.

7. Have pupils describe configurations of words that are similar. By comparing then with them, pupils would be forced to discriminate that them is slightly longer than then because it has one more hump.

8. Have pupils repeat the sequence for a recipe that they have read.

9. Use tachistoscopic devices.

10. Have the pupil practise attending to larger units at one time. For instance, some try to copy one syllable at a time. Encourage the pupil to increase the length of the visual stimulus that she holds in her mind as she writes it down.

11. Help the pupil to practise internal auditorisation as an adjunct to visual memory; that is, have the pupil say the letters or words to herself while she is translating the written information.

12. Write every other item on the chalkboard with a different colour chalk. This helps the pupil to "find her place".

13. Allow the pupil to copy another pupil's work. Some of these pupils perform better with paper-to-paper copying than with chalkboard-to-paper copying.

Arithmetic :

1. Establish routines for arithmetic instruction.
2. Use consistent language until the process is mastered.
3. Provide numerous opportunities to apply new skills.
4. Ensure the meaningfulness of the material.
5. Employ concrete, manipulative learning materials.

Spelling :

1. Have pupils correct their tests under the supervision of the teacher.
2. The pre-test-study-test method is best.
3. Words presented in single-column print are most effective.
4. Learning words by syllables is less effective than a synthetic word approach.
5. Proof reading skills improve spelling achievement.
6. Review and/or reteaching on a consistent basis improves retention.
7. A systematic technique to study unknown spelling words must be taught.

TABLE - 1

Reading Approach	Advantages for Learning Disabled pupils	Disadvantages for learning Disabled Pupils
Basal	1. Comprehensive 2. Controlled vocabulary 3. Sequential introduction of skills 4. Reinforcement of skills 5. Diagnostic and evaluative material usually provided.	1. Limited flexibility in teaching style. 2. Individualized instruction not encouraged. 3. Lack of depth of material necessary for skill mastery. 4. Lack of provision for processing deficits. 5. No choice of analytic or synthetic phohics instruction. 6. Subject to repetition of the same stories and methods resulting from failure.
Phonics	1. Effective decoding technique for pupils with good additory abilities	1. Not effective for pupils with auditory deficits 2. May be taught in isolation 3. Comprehension neglected 4. Invariance in English language may cause confusion.
Linguistic	1. Contool for irregular spelling in initial stages 2. Gradual introduction of phonics 3. Extensive repetition	1. Little emphasis on comprehension in initial stages 2. Vocabulary controlled for regular elements and does not utilize spoken language of pupil.
Language experience	1. Motivates with personal stories 2. Uses pupils' oral language. 3. Can incorporate specific skill development. 4. Can include language arts skills. 5. Good for pupils with good visual-motor abilities	1. May be limited by pupils' language level 2. Lacks structured, systematic, approach to skill development.

Reading Approach	Advantages for Learning Disabled pupils	Disadvantages for Learning Disabled Pupils.
Programmed	1. Small sequential steps 2. Immediate feedback	1. Lacks direct instruction 2. May be confusing format 3. May be borring because of consistency.
Multi-sensory	1. Uses more than one sensory input to get messages to the brain. 2. Can use an analystic approach (Frenald) or a synthetic approach (Gillingham-Stillman)	1. Lack of sequential skill development in some programs. 2. Sensory overload experienced by some pupils.
Rebus	1. Uses a rebus (picture) instead of a word to simplify initial stages of reading 2. Well-structured materials. 3. Provides for transition to traditional print materials	1. Format appearing immature for older pupils.

Handwriting :

1. Tape alphabet forms to the floor. Have pupils walk or hop around the form. Have them reproduce the form with coloured yarn.

2. Have pupils use a stick (broom handle) and their bodies to form the letters.

3. Write each letter in a paper plate with a red marker. Cover with cornmeal. Have pupils write the letter with their fingers. The red letter will provide feedback for correct formation.

4. Coat cooked spaghetti with vegetable oil. Have pupils form letters with the spagnetti. Coloured letter forms can be used as a guide.

5. Spray shaving cream can be used to form large letters. Butcher paper provides a suitable surface.

6. Have pupils use a flashlight beam to trace letters on a chalkboard.

7. Have pupils form letters in wet fingerpaint.

8. Use coloured directional cues such as green arrows and red dots.

9. Teach manuscript letter forms that are oval and slanted slightly. This will encourage left-to-right progression and will facilitate transition to cursive writing.

10. Teach pupils to start all lower-case cursive letters from the line.

11. Help pupils to form an association for a letter they have difficulty remembering. (A=Indian tepee, W=crown).

12. Have pupils orally describe their movements as the letter is being written. This provides auditory reinforcement.

SELECTED READINGS ON LEARNING DISABILITY :

1. Bateman, B. (1967) Learning Disabilities - Yesterday, To-day and Tomorrow. In E.C. Friarson and W.B. Barbe (eds). Education Children with Learning Disabilities, Meredeth Co.

2. Blackhurst, A.E. and Berdine, W.H. (1984) An Introduction to Special Education. Little Brown & Co. Boston.

3. Bruechner, I.J. and Lweis W.D. (1947) Diagnostic Test and Remedial Exercises in Reading. Halt, Rinehart and Winston, N.Y.

4. Chalfant, J.C. and Scheffelin, R.A. (1969) Central Processing Dysfunction in Children. A reviewof research. U.S. Govt. Printing Office, Washington D.C.

5. Hallahan, D. and Kauffman, J. (1976) Introduction to learning disabilities. Prentice Hall, XxM N.J.

6. Johnson, D. and Myklebust, H. (1967) Learning Disabilities : Educational Principles and Practices. Grune and Stratton, N.Y.

7. Kephart, N.C. (1971) Theslow learner in the classroom. Charles, Meril Publishing Co.

8. Kirk, S.A. (1972) Educating exceptional children. Houghton Mifflin Company, Boston.

9. Kirk, S.A. and Kirk, W.D. (1971) Psycholinguistic Learning Disabilities : Diagnosis and Remediation.

10. Larry, F.A. (1976) Learning Disabilities - A competency Based Approach. Houghton, Mifflin Co.3.

11. Ramna, S. (1985) Diagnosis and Remediation of Dyslexia - an attempt. Ph.D. Dissertation, University of Mysore.

12. Srivastava, P.A. and Srivastava, A. (1983) On bringing up weak and slow learning children. Research findings and know how the learning laboratory. New Delhi, 1983.

13. Valett, R.E. (1970) Effective Teaching : A guide to Diagnostic and Prescriptive Task analysis. Fearsow Publishers. Belmont, California.

14. Vallet, R.E. (1980) Dyslexia, A neuropsychological approach to educating children with severe Reading Disorders Costello Educational.

15. Wallace, G. and Kauffman, J.M. (1973) Teaching children with learning problems. Charles E. Merril, Columbus, Ohio.

16. Wilg, E.H. and Semel, E. (1984) Language Assessment and Intervention for the Learning Disabled Children, Columbus, Ohio.

MAINSTREAMING EDUCATION OF THE HEARING IMPAIRED CHILDREN

.....

Mr.Purushottam Sahu,
Lecturer in Special Education,
R.C.E., Bhubaneswar.

Introduction

Integrated education for the special needs children is a major concern of educators in recent years. The Education Act 1981, the Warnock Report, 1978 of England, Act 118 of Italian legislation, PL 94-142 of United States and NPE of its POA, 1986 described the topic as "the central contemporary issue in special education". In Indian context, mainstreaming education for the hearing impaired individual too requires a war footing efforts. Because at present the coverage for education is less than 5 percent. In order to achieve the goal of universalisation of elementary education, it requires to adequately meet the education of the hearing impaired children in mainstreaming system.

Mainstreaming education of the hearing impaired children (HIC) is a debatable issue. When we think of their integration, some basic questions come to our mind- "Why should we educate them with the normal peers?" "What benefit will they derive?" "How will it be possible?" "What are its requirements?" Is mainstreaming an alternative or compulsory? and so on.

This paper examines some of these issues.

The Concept of mainstreaming Education of the Hearing Impaired Children.

The term mainstreaming in United States, integration in UK and normalisation in Scandanavian countries have the common denominator of educating children with special need, as far as possible,

in ordinary schools. In its widest use "mainstreaming" means combination of different elements into a unity. It is an act of combination of a segregated group with the united whole. In relation to the special needs children, integration means educating these group of children in an ordinary school in a least restrictive environment'. That means it is a process and product of interaction of hearing and hearing impaired children (HIC) in the normal school environment when ever possible. It is a process of education of handicapped and non-handicapped children together within the 'natural' environment in which they can have the maximum association of increasing participation in the educational and social life or school.

In order to achieve the integration in full measure, it must be viewed comprehensively. Warnock(1987) distinguishes three main forms of integration in terms of association, locational; social; and functional, locational integration for the hearing impaired children exists where special units or classes are set up in ordinary school. The social integration is a form where special needs children attend a special class to share their out of classroom activities with other children. Functional integration is the fullest form of integration. A similar form of integration is offered by a Swedish thinker Doder in 1980. He offered four different forms of integration: physical, functional social and societal. These forms of integration model are closely related with Warnock's model of integration.

From the above discussion it can be viewed that integration does not mean the establishment of locational or physical model alone. Integrated education is primarily concerned with the individual development as a whole. It provides numerous opportunities for interaction between children with special needs and their peers at the different stages for the school day; before and after school; assembly; classroom; lunch break; public places like temple etc.

Benefits of mainstreaming

In social and emotional dimension, there is a broad consensus among teachers, parents and children themselves that they have benefited in terms of these developments. They develop the self confidence and independence, integrated education promotes a realistic acceptance for the individuals handicapping condition. Friendly relationship between hearing and hearing impaired children develops and negative relationships such as teasing are comparatively rare. The incidence of unto ward behaviour and odd mannerisms is considered to have greatly lessened.

The hearing impaired children becomes increasingly self-sufficient as they experience exposure to hearing classmates, and normal hearing children learn to accept the fact that some people are handicapped and a persons disability is not the most important concern, but that human beings learn to live comfortably with individual differences.

The regular children will come to understand and accept handicapped children in a normal manner.

Parental involvement becomes more possible. Many parents can take an active part in educating the children in their local ordinary schools. Contact between home and school could be possible and can be organised in various ways.

In nutshell the following benefits are derived in the integrated education process.

* benefit mutual interaction.
* modelling 'good' social benefit and linguistic model.
* comply with normalisation.
* raise expectation
* encouraging parental involvement
* sharing expertise
* maximum benefit of social normalization

Keeping in view of the above advantages, the movement of total integration was initiated by the Italian legislation one decade before. Italian ligislation Act 118 of 1971 made a clear departure from segregation with its requirement that education must take place in ordinary schools except where the child suffers from severe intellectual deficiency'. In recent years the enactment of legislation many countries like Norway, Sweden, Denmark. US, UK and France have taken place to further the integration of children with special needs. In Britain this has taken the form of an amendment to the 1944. Education Act. In United States legislation there had far reaching effect on every aspect of special education with regard to integration. The Education for all Handicapped Children Act (PL 94 - 142) was enacted in 1975. With

its provisions coming into force over a period of years beginning in 1977. This is major piece of legislation which mandates national commitment to educating all children and youth people with special needs and place them in the 'least restrictive environment'.

Disadvantages of mainstreaming Education

The approach of integrated education for the hearing impaired children is no double good. But what about the learning outcome ? Can the regular teachers profitably spare their time for the hearing impaired children with their limited expertise and knowledge ? Could it possible to meet the individual needs inthe ordinary classroom ? These issues are to be considered carefully before putting the hearing impaired children in the ordinary school.

1) The assumption of increasing 'social interaction', 'social acceptance' and ' imitation of behaviour of normal peers' is objected by some proponents of mainstreaming. Goodman, Gottieb and Harrison,1972 and Iano et al. (1977) found that non-integrated handicapped children are better accepted by their peers than integrated handicapped children. In this situation, if mainstreamed handicapped children are more poorly accepted by their peers, then it follows that mainstreamed classrooms are more restrictive environments than non-integrated classrooms.

2) There is a wrong notion that integration means making the hearing impaired children 'normal'. But in reality integration is a means, not an end itself.

If the residual cognitive ability of the children is properly regenerated even in special schools, they may feel comfort. Because their needs are unique.

3) The teacher pupil ration in most of the schools of the developing countries including ours is about 1:25 to 1:40. Since the size of the class is very big, the regular classroom teacher may not give individual attention to these special need children. As a result the hearing impaired children may feel bored inthe regular classroom and may create nuisance.

4) Most of the regular teachers of the ordinary schools have little or no knowledge about the needs of the hearing impaired children. In this situation integrated education may not be suitable for these group of children and it is also possible that the teachers may develop negative attitude toward these children.

5) A broad, balanced and relevant curriculum or national curriculum is going to be implemented in our country shortly. When hearing impaired children are educated along with the normal children in ordinary school, the rate of input inthe class is comparatively lower and expected learning outcome of is also lower. In this situation the parents of the bright normal children may not be inclined to send their children to the integrated school. 'Limited academic progress of the ordinary children' may be one of the major cause for which Government of U.S.S.R. have developed negative attitude towards integrated education and till today it is not in operation there.

In this contest several fundamental questions arise. Whether integrated education for the hearing impaired children should be made compulsory or it should be an optional or alternative placement? Can the hearing impaired children be able to face the challenge ? These doubtlets will be cleared if we could able to compare their intellectual ability and reading level with the same age group hearing peers.

Conclusion

The World Programme of Action concerning disabled persons, 1983, the International League of Society,1987. The Education Act. 1981 of England, the commitment of IYDP, 1981 declared the 'equality of oppertunity' of handicapped people. They should not be segregated because of their impairement.

Every system has certain limitations. Integration of children with hearing impairement may create certain problem, but the benefit of coverage of large percentage of children can not be achieved unless integrated education is started. Integrated education is a viable solution for the developing countries like ours. Because establishment of special schools for the hearing impaired children in rural areas is impossible and educating the mild group of hearing impaired children in special schools is not profitable. It also requires a lot of financial involvement and resources.

Our NPE-PA 1986 says that there are about 800 to 100 special schools for special needs children including the hearing impaired groups in our country. The NSSO, 1981 indicates that there are about 12 million disabled

persons in our country, out of this, at least 4.3 million disabled persons are of school going age and 1.27 million of school going population is of speech and hearing impaired group. Hence integrated education is required to be started without further delay so as to provide free and compulsory education to one and all. Otherwise the purpose of UNIVERSALISATION OF PRIMARY EDUCATION would be defeated.

As stated previously, integrated education is a means not an end itself. It should be a preferred placement rather than a compuslsory one. That means it is not required that all children are to be educated in integrated schools. Education provision must be 'appropriate' as well as being non-restrictive. If placing a child in integrated school were to result in harmful effects or to reduce the quality of education, segregated placement might be required for that children.

Placement of children in integrated schools requires careful consideration. Hence before placing a child in ordinary school, a couple of points is to be considered carefully.

1. School and Classroom organisation:

i) To ensure satisfac tory integration programme for the hearing impaired children, certain organisational activities are necessary for adoption. e.g. 'class teachers basic understanding' they should be aware, for example, that hearing impairement leads to delay in reading, speech and language development and that will influence the child's ability to develop other communicative skills.

ii) The teachers should able to check the functioning of hearing aids and should keep extra battery/cord inthe classroom.

iii) The teachers should introduce the classmates to the consequences of hearing impairment and to helpful techniques to improve communication.

iv) Seating arrangement is to be made properly for hearing impaired children where they can hear and lip-read best. Because speech reading or lip-reading beyond 8-10 feet is difficult for the children.

v) To aid speech reading, the speaker should always face the hearing impaired children and avoid standing with their backs to a window or light sources. That means there should be sufficient light to the face of the speaker not to the hearing impaired child.

vi) Exaggerated mouth movement and incomplete sentences while teaching can mislead to the hearing impaired children and it should be avoided.

vii) Gestures, if used, should be natural, not exaggerated as excessive movement can be distracting.

viii) It is helpful to use as many visual cues as possible. Because hearing impaired children are benefited to use eyes instead of ears to receive information.

2. Adjustment of Curriculum:

Where ever necessary, the curriculum is to be adopted and adjusted according to the individual need of the child. Because the objectives of education of both hearing and hearing impaired children will be the same. The means by which objectives are achieved may vary considerably.

3. Teaching strategies:

Suitable teaching methods is to be followed through systematic activities. Whether it may be manual, aural or oral, speech reading approach. LRS approach or multi-sensory approach, it should be followed according to the individual needs.

Integration of hearing impaired children does not mean squeeze of special schools. There should not be any competition or comparison of achievement between the special schools and integrated units. Rather it should be a preferred placement. Both special schools and mainstreaming education will exist to meet the needs of children. The hearing impaired children those who are not benefited from integrated units may be shifted to special schools. The resource of the special schools may be used according to the demand of the integrated schools. Obviously it is a difficult task, but can be possible if it is properly planned, and prepared from the beginning.

....

LOCOMOTOR DISABILITY

Locomotor Disability - Locomotor

Locomotion- move
or
Ability to move
place to place
independently.

Disability - (Noun) - Render legally incapacity, inability while discussing the disability condition we should consider two other words Impairement, handicap as prefix and suffix.

Impairment - This word is applied at that time when a part of body is not able to perform its function to its fullest extent.
Example - Burn hand.

Disability - Impairments leads to disability. This word is applied at that time where a part of body or organ is not able to perform the function for which it is meant in a normal way.

Handicap - If the disability is not checked by medical or other means, it leads to handicap.

LOCOMOTOR DISABILITY

It is a type of disability where movements of our body are affected due to disease, injury, any absence of part or deformities in the joints, bones and muscles or an injury of nerves, spinal cord or brain.

Locomotor disability arises due to

Congenital deformities,	Cerebral palsy	Stroke,	Paraplegia,	Amputation, Polio.

Example - C.D.H.

How to identify Locomotor disability -

a) Ask the person to walk few steps.

b) Ask the person to lift the arm.

c) Ask the person to pick-up any object lying infront of him.

d) Ask the person to run a short distance.

Any person shows inability in performing one or more of these test can be consider as locomotor disable. In cases of Children these are not enough grown-up to catch-up the command in their cases motor skill check list help a lot for identification of locomotor disable.

For an example:- 1 Year child be able to do

a) Reaches for object puts objects in the mouth.

b) Pulls unto siting position holding adults finger and sit with support.

c) Transfer an object from one hand to another.

But child is not doing above activities then first of all wait for some more days, if he/she still unable them you can consider the child as a locomotor disable.

Course-VII

DISFUNCTION OF LIMBS DUE TO POLIO

a) Polio is a crippling disease. In the year 1834 it became established as a clinical entity, it is caused by a virus.

VIRUS: It is a submicroscopic pathogen consisting a core of single nucleic acid surrounded by a protein coat having the ability to replicate only inside a living cell.

POLIO: Poliomyelitis, myelitis = Inflammation of spinalcor

Acute anterior polio myelitis = Infantile paralysis Inflammation of the anterior horn cell due to some viruses, of spinal gray matter give rise to a flaccid type of paralysis and it is named as above.

Polio virus is a neurotropic virus, this means the virus has a special affinity to nerve tissue. It also attack the grey matter of brain stem and motor cell of cerebral cortex. The virus is epidemic and sporadic by nature. The virus is water borne by nature and incubation period is 7 to 14 days.

Acute Stage	Signs & symptoms Convalescent		Chronic
Pre-paralytic stage	Paralytic	________	__.. ____
Acute symptoms Stage	Fever Headache Malaise Diarrhoea Pain in back muscle		
Signs of Acute stage	Pyrexia Neck rigidity Kernig sign (Positive)	(Hip flexed to 90 and knee extended if pain indicates meningeal irritation)	
	Movements of limbs very painful with increases muscle pain & tenderness		

In acute stage fever comes first for 2 to 3 day, it subsides, reoccur and remain for 4 to 7 days. In second phase of fever muscle paralysis occur, may be one muscle, whole limbs or Motor paraplegia. 48 hours is maximum time of extent of paralysis. The paralysis is typical assymetrical lower motor type of paralysis without sensory loss.

Treatment in acute stage. a) Good Nursing

b) Symptomatic treatment for pain with sidation.

c) Paralysis become worse if any injection, operation, massage or exercise gave in acute phase so every thing is contrainedicated.

Upper limb: Child lie on his back

1. Lift arm over the head & bring it back
2. Move the arm side- ays, retate the arm and bring to side of bed.
3. Keeping shoulder fixed tell to the child to bebd the elbow, if muscle power is grade-3 then allow progressive resistive exercises using different damb bells.
4. Rotation of arm and tell to the patient to make first and open it also.

CHRONIC STAGE: Most of chronic polio require reconstructive surgery and then physical treatment.

PREVENTION

Immunisation process is best method to prevent polio at the age of 2 month - O.P.V.(Oral Polio Vaccine) given first.

5 doses with one month interval is given. At the age of 18 months the booster dose is given. If the child is having

a) Mild fever	
b) Cough	O.P.V. should not be given at
c) Diarrhoea	the time of these condition.

PARALYSIS

Paralysis: When we can not move our limb completely to our desires.

Paraparasis:- When we move our limb partly on desire. In both the cases full range of otion is concerned in paralysis R.O.M. is complately damage and in paraparasis R.O.M. partially damage.

Cause:- Diseases of muscle, brain and spinal cord Trauma to muscle, brain and spinal cord.

Name of some paralysis condition:

Excluding Polio:

a) Hemiplegia

b) Paraplegia

c) Quadriplegia

Hemiplegia: Involvement of one side of body

Example: Stroke

Paraplegia: Involvement of both legs

Quadriplegia: Involvement of 4 limbs

Example Trauma to spine.

Diplegia: Involvement of 4 limbs with the leg more affected than arm.

Triplegia: Involvement of 3 limbs

Monoplegia. One limb affected

JOINT PAINS OTHER CAUSES

Basically we see pain in joints as a result of injuries (FRACTURE) Disease (Tuberculosis of spine, Hip etc.)

SPRAINS:

Incorrect position of weight bearing (Flat foot) undue stress over joint also produce pain in joint, it may be due to synovitis.

Synovitis: Inflammation of synovial membrane of joint repeated injury or strains also cause synovitis. Arthritis also produce pain in joints. It is a Inflamatory condition of whole

Rheumatrid Arthritis	Osteo-arthritis
It is more common in case of women. It is thought to be a toxic or a bacterial condition. A fully metabolism also produce Rheumatoid arthritis infact its mature of occurance is not fully understood till yet.	It is a disease of old age May be due to strains to which joints have been subjected in the course of life.

DYSFUNCTION OF LIMBS DUE TO AMPUTATION

A person who loses a part or whole of a body is called an amputee.

An amputation usually a unavoidable result of accident or disease. It is a treatment not a tragedy.

Indication for Amputation Based on Three 'D':

1. Dead or Dying
   a) Severe trauma
   b) Burns or frost bite
2. Dangerous
   a) When some thing will produce malignancy.
   b) Crush injury.
3. Damn Nuisence
   a) Condition worse than no limb of an, example:-Peripheral vascular disease like Burger disease.
   b) Gas gangrene

Implications of dysfunction caused by problems of movement of limbs or absence of limbs for education and teaching.

Disable persons are of two types, some are hypersensitive to their disability thinking that they are objects of bad comment in the society some feel guilty themselve for their disability and become depress, that mean in other words these peoples mind is not well prepared to accept the condition as they are. For the former one that is hypersensitive quality can be

removed by removing spoken and unspoken comment of society by virtue of social workers. The second type of thought can be removed if the disable can be taken to group work, where he/she can s e meet with others who have already undergone the same catastrophe.

Physical disability tends to disrupt the equilibrium of once life and removes the individual from normal social experience and from work situation, due to two major factor; 1) Self-satisfaction, 2) Self-esteem. Encouragement quality therapists, teachers help a let to locomotor disable in learning self care activities and other subjects also. Removing conditioned things like steps infront of college, schools also help in learning to locomotor disable.

Locomotor disable in ellect and personality are some like normal man so after full filling Physical needs like shelter, food, opportunity for activity, rest and mental health such as Affection, security, sense of belonging of personal worth, encouragement to learn from experience, opportunity to achieve success in some field of endeavour they can be well educated and they can also teach others.

In case of a bilateral amputee if up right posture and locomotion can be maintained by means of any orthosis and prosthesis and physical, mental health is maintained then infinite variety of effective attitudes and activities will come out. The positive attitudes towards learning can be also establish if we envourage the disable workin capacity, brought an awareness of Government facilities such as concessions, scholarships etc. and follow-up disable

Some architectural modification to bring integration in the society as well as community. For example somebody is constructing a house. During the construction he should construct steps as well as ramps fairly levelled, just not to make any locomotor disable felt the frogotten physical loss. If the house is without ramp the locomotor disable may feel that he is not self-supporting and self-reliant of todays first moving society.

Orthopaedic handicape intellect and personality are same like normal man. Every handicape can learn everything by intellectual and emotional processes. Suppose a bilateral upper limb amputee can not gather the sense of crystal or amorphous quality by hand but he can know it by other means, that means by other part of body. As we know audiovisual factual system of learning is more effective in comparision to verbalizing learning process, so this can be applied to orthopaedic handicap, or amputee.

But as far as laboratory experiments are concerned the orthopaedic handicap may face some difficulties as because artificial limbs may not be able to give firm grip etc. so here experimental apparatus and work table requires some modification. The handicap may be provided with thick holder which will help to grip firmly with artificial limbs and a low work table may be allowed for the experiments etc. So with minimal modification many orthopaedic handicap can read in normal schools with science subjects also, and they will be not deprive of, they can be supplied with equal lesson plan as that we provide to normal students.

COURSE - VII

Unit-3

PHYSICAL EDUCATION & GAMES FOR CHILDREN WITH LOCOMOTOR DISABILITY

Physical education is aimed to develop body and muscle power for healthy life. Physical education also help to develop tissues and other organs of body. Physical education and games provide proper circulation and help to acquire nutritive value. It also help to lungs and heart in functioning well.

Physical education and games helps in removal of waste product of body in the form of sweat and other elements. Physical education also help to the functioning power of kidney that which is responsible for the excretion of toxic waste.

Physical Education and Games	Produce corrective benefits such as: i) Mental strain is removed and the body and mind become fresh. ii) Deformities of bodies caused by wrong postures such as currature of spine are removed.
Physical Education and Games.	It also helps in development various mental faculties such as: i) Power of judgement ii) Power of tolerance iii) Power of determination
Moral benefits of Physical Education and Games.	It teaches us: i) Discipline ii) Self-control and self-confidence. iii) Mutual helpfullness iv) Courage.

Everybody should think about following factor before allowing any game to locomotor disability.

GAME   How   Weight(strong, light, heavy)
               Time (Rhythm, Quick, Slow)
               Flow (Continuous, broken)
        What   (Body awareness)
        Where (Sphere of movements)

Capacity of playing depends upon

Brain and the spinal cord
Motor nerves functioning ability
Muscles and joint function.

Fatigue:- It is nothing but a sum of total of those factors that are responsible for diminishing the working capacity or physical efficiency.

Physical exercise may be in forms of games and physical drill, physical limitations of the disable should always be kept in mind before suggesting any sorts of game or exercise.

Throwing a ball and receiving it is a best game for a paraplegics to maintain trunk and arm health locomotor disable can be allowed to play table tenis with wheel-chair. The wheel chair must very heavily padded with rubber with the same wheel-chair position a locomotor disable can play basket ball or not ball play as a out-door game. Archery is also on of the best activities for a paraplegic or locomotor disable. It provide to stimulus to develop the shoulder girdle muscle.

Throwing Javelin is also a good game for locomotor disable like paraplegics which help to develop the upper limb muscles. Hammer throw, Ring-ball play are best games

of out-door type for locomotor disable. He can play with a wheel-chair very well. Chess, playing cards can be choised for indoor. Locomotor disable who are confind to wheel chair among them if any school want to conduct any sorts of sports they can select games like "Thread and needle race, Tug of war, cricket ball throw etc. It is a prime duty that before conducting any sports or allowing the locomotor disable to play any game his/her physical limitation should always kept in mind and lot of preventive measure should also be taken everytime.

.....

PHYSIOTHERAPY

A.G.Dhandpani
Head (Physiotherapy Dept.
NIRTAR, OLATPUR.

Definition: Treatment of patients utilising physical agencies in order to improve efficiency of muscle, joint mobility, co-ordination gait etc.

Physical agencies

Internal
Patients
- a) Existing muscle power
- b) Existing joint mobility
- c) Sensation etc.

External
- a) Electricity
- b) Water
- c) Sun rays etc.

Methods of Physiotherapy: The methods used in physiotherapy to treat patients are a) Exercise therapy b) Electrotherapy, c) Hydrotherapy, d) Massage etc.

a) Exercise therapy: It is a method in which various techniques of exercises are given.

It can be active or passive exercises. Active exercises are those exercises which patient himself can do ac-tively. Further it can be classified as follows:

a) Free exercises - Patient himself doing the exercises in a said pattern using his muscular effort without any external assistance or resistance except that of gravity.

b) Assisted exercises: When the patients does the movement himself partially, an external forces is given to assist the working muscle.

c) Resisted exercises: Externa force is given to the working muscle to improve the strength of the muscle.

Passive Movement: When a patient could not do exercises or movements himself, an external force is applied to perform the movement.

Uses: Active exercises help to maintain or improve the muscle power, joint mobility, balance, and posture .

Passive exercises help to maintain or improve joint mobility.

b) <u>Electrotherapy</u>: In this method of physiotherapy, various electrical gadgets are used.

(e.g.) Electrical stimulation - to activate a muscle which losts its nerve supply, when a muscle can not work actively due to lack of nerve supply.

Heat treatments: Shortwave Diathermy, Waxbath, etc, These are given to improve circulation, to releive pain and obtain relaxation.

k) Massage	k) improve circulation
l) Physiothera hy	l) Patient's muscle powe

7) Say true or false

a) Physiotherapy is treatment using chemical agencies

b) Water is an internal agency used in physiotherapy

c) Existing or available joint mobility is an inter agency.

d) Exercise therapy is a method of treatment by electrical means .

e) Active exercises are done by external force.

f) Free exercises are the exercises done by patient himself.

g) Assisted exercises are given to maintain the muscle power.

h) Assisted exercises are done using some external force to assist the working muscle.

i) Resited exercises are to improve muscle power.

j) Heat treatments are given to improve circulation.

k) Electrical stimulation is given to a muscle which losts its nerve supply.

l) Massage is given to improve muscle power

m) Massage is given to improve circulation, relaxation etc.

c) Hydrotherapy: Exercises are given inside water tank or pool.

d) Massage: Scientific moulding of various tissues of of the body in order to improve circulation to obtain relaxation, to relieve pain etc.

Model Questions:

1. Define physiotherapy
2. What are the physical agencies used in physiotherapy
3. List the methods used in physiotherapy.
4. Write short notes on exercise therapy.
5. What are the uses of electrotherapy
6. Match the following:

a) Internal agency	a) Scientific moulding of tissues
b) External agency	b) External force assisting movement.
c) Hydrotherapy	c) Water tank
d) Massage	d) Electricity
e) Free exercises	e) Exercise in water
f) Assisted exercises	f) External force producing movement.
g) Resisted exercises	g) Patients' own muscular work.
h) Passive movement	h) Denervated muscle
i) Electrical stimulation	i) Improve muscle strength
j) Hydrotherapy	j) Physical agencies.

Course-II

Unit-4.

Crutches and Walking aids

Walking aids fall into three categories.

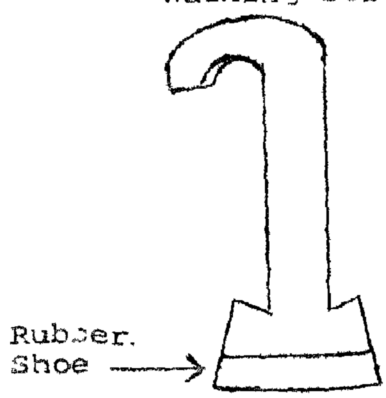
1. Sticks
2. Crutches
3. Frames

The walking aids are used to give more stability while walking or standing, during weakness or paralysis of lower limbs.

a) Sticks: When the assistance to be given is at lowest level walking sticks are given

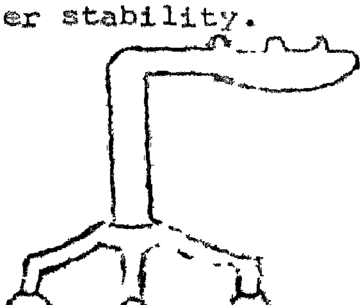
Types of Sticks: i) Ordinary Walking Stick.

Walking Stick



While using single walking stick, it should always be given to the opposite side of the effected lower limbs i.e. if a patient has some problem in his Right leg, and the stick must be given to left side.

ii) Tripod stick: This has 3 point ground contact for better stability.



Three point ground contact

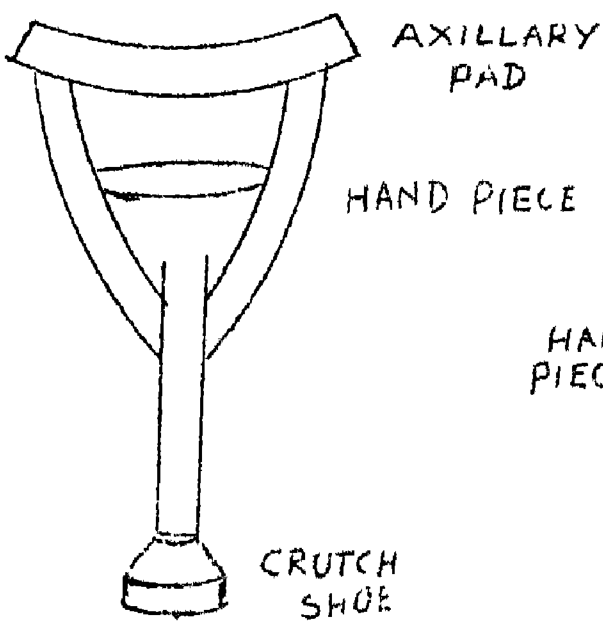
B) <u>Crutches</u>: Crutches are given for the patient who is an amputee (a person whose part of the body has removed by surgical means) and those who are fitted with braces.

Types of Crutches: a) Axillary Crutches

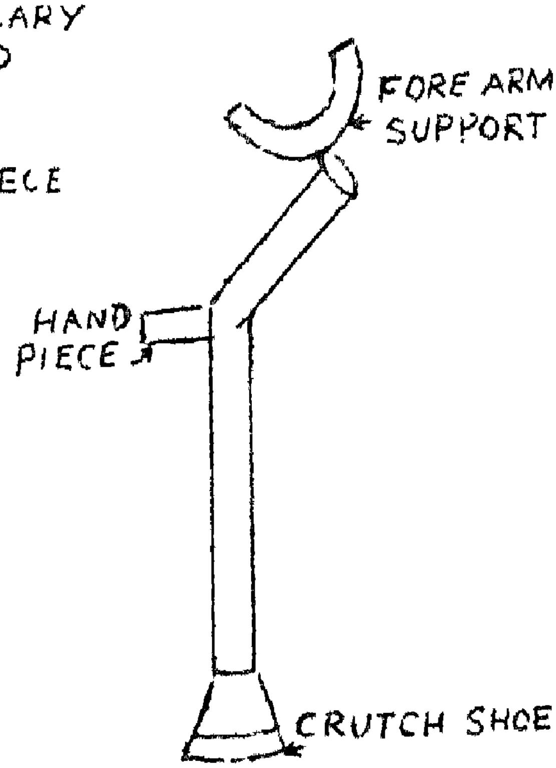
b) Elbow Crutches

a) Axillary Crutches: The person uses the axillary crutches rests the upper part (axillary pad) of the crutches under his axilla and walks.

While given crutches, always give two crutches. Never give one crutch only. All the crutches must have crutch tip/crutch shoe.



AXILLARY CRUTCH



ELBOW CRUTCH

CURRICULUM AND TEACHING - PRINCIPLES AND PRACTICE

Dr. [illegible] Das

1. Principles of Curriculum:

By 'Curriculum', we mean the sum total of learning experiences given/planned to be given to the learners. Courses of Studies refer only to the context of Knowledge/information to be imparted to the learners. The curriculum is more than the courses of studies, it includes the objectives of teaching in terms of expected outcomes of education, the methods of transaction of teaching-learning process, and the evaluation of learning. The evaluation should indicate whether the expected outcomes have been achieved. In planning Curriculum, the objectives, the content, the methods of teaching and evaluation - all have to be specified in detail. Curriculum planning is based on certain principles; some of the important ones are:

- Relevance to environment
- Relevance to Child's need
- Relevance to subject discipline
- Flexibility.

We shall consider these principles in relation to planning the curriculum for the disabled children.

(1) Relevance to Environment:

The Curriculum should be relevant to the environment. This means that the Curriculum should enable the child to deal effectively with his environment. The Child's environment not only includes the natural and physical environment, but also the social, political and educational environment.

The natural and physical environment includes the plants and animals, as well as houses, vehicles, instruments and other objects used in the child's environment. The child should understand his role in relation to these aspects of his environment and deal effectively with them.

The social environment includes the home and members of the family, the school including its personnel, the community and its people. The child should understand his duties and responsibilities in relation to all members of his social environment. He should know what help he can expect from them and what help he can give to them.

The political environment includes the government and how it functions at different levels - local, state and federal. It includes the processes of election, administration and justice. The child should know his rights and priveleges as a citizen and how he can exercise them and at the same time his responsibilities towards the government. He should particularly know what provisions there are for the welfare of the disabled.

The educational environment includes the knowledge and its development in the world and how it affects our daily lives. It also includes the provisions for education and information, both formal and informal including the role of the press, the radio and TV.

(2) Relevance to Child's needs:

The Curriculum should be relevant to the needs of the child. The needs of the child may be classified as physical, intellectual, emotional - social and vocational.

The Curriculum should take into account the physical growth and development of the child. For this purpose it should provide appropriate health education as well as physical education. While doing so it should consider the age and ability of the child. In case of the disabled child, the child should be given instructions to take care of its disability while at the same time taking part in such physical activities which he can do with or without mechanical aids/appliances. While some activities can be common for the disabled and normal children, other activities/games can be organised for special groups of disabled children. Special physical and medical care should however provided to the disabled so that they can perform all activities without much difficulty. Architectural barriers should be removed for movement of orthopedically handicapped. Glasses and hearing aids given to the partially sighted and hard of hearing.

Except mentally retarded children, other disabled children are intellectually as good as normal children. So their intellectual needs are same as those of normal children. They will have the same curiosity to know all about their environment and to find solutions to problems that they face. So the content of the curriculum for these children need not be different for the disabled from those for normal children. However some supplementary instructional materials may be prepared for each category of the disabled. In case of the educable mentally retarded, their intellectual level is same as those of children younger to them by 2 or 3 years; so they should be placed in a class with children

younger to them by 2 or 3 years. They should be taught more slowly, with more concrete aids, and with more repetition of same information. They should be continuously encouraged to learn and never scolded.

Every child has emotional needs. Every child, more so the disabled child, needs to be loved, needs company, needs praise and needs feeling of security. The curriculum and the school environment should provide for these emotional needs. The child's development is hampered if it feels unloved and unwanted, considered inferior to others and feels threatened by his peers or teachers. The child has social needs. So the Curriculum should provide for group activities by children group activies in which children and adults take part. In case of disabled children, the school should special ly arrange for their social activities. The school should also help parents in taking care of their life at home.

The children have also vocational needs. When they complete school education, they should have some vocational skills so that they would not be dependent on on others. Apart from intellectual skills of reading, writing, and arithmetic, the children should also be given some manipulative skills which they can do. If needed, the disabled child can be given more intensive training in some manipulative skill and vocationally employ.

(3) <u>Relevance of subject discipline:</u>

In planning curriculum, first the objectives of education are specified. Both immediate objectives and long term objectives are determined and these are so

chosen and stated that they are observable measurable. They are usually stated in terms of knowledge and understanding, skills and abilities that the student should acquire and changes in his personality, attitudes, appreciations etc. that are to be effected. The content of the curriculum is chosen so as to achieve these objectives. The content is generally organised in the form of subjects of study such as Language, Mathematics, Social Studies, Science etc.

Since the Curriculum is developed around some subjects of study, while dealing with each subject, it should be relevant to the subject discipline. Each subject of study has its own discipline which is expressed in its logical sequence, systematic method in its processes, its own rules and applications in daily life. In developing the curriculum, all these aspects of the subjects should be taken into consideration.

In teaching a subject, the logical sequence in which the constituent units of the subject should be developed should be noted. If this sequence is not followed, the subject loses its continuity and appears disjointed. The student will not see the relationships between the different parts of the subject unless they are dealt logically. Further if the logical sequence is not followed, those units, which are taught without teaching the earlier units on which they are based, will not be understood by the students, for example; if you teach multiplication before teaching addition, the student will not understand, for multiplication is logically based on addition.

A subject has its own systematic method. This method should be explained and followed. For example addition of numbers is done in a particular method, multiplication has its own method. In language an essay is written in one way, a letter to a friend in a different way. In the curriculum, all these methods should be learnt in relation to the subject.

A subject has its own rules. In language, the rules of grammer are to be learnt and followed. In Mathematics, various formulae have to be learnt and used in solving problems. Rules express the relationships between different concepts and ideas in the subject.

A subject has its own applications in life. In learning the subject the student should learn how he can use what he has learnt in his daily life. Language he uses in communication of his thoughts, mathematics in shopping, measuring and solving problems involving numbers, science he uses for healthy living as well as in leading a comfortable life, social studies helps in understanding his role in society.

(4) Flexibility:

Flexibility of the curriculum means the degree to which the curriculum can be varied to suit to particular conditions. If everything in the curriculum is fixed and common to all pupils for all places over a period of years, the curriculum is not at all flexible. Flexibility in the curriculum gives the teacher the freedom to make variations in the content, method of teaching and evaluation procedure to make it more suitable to particular conditions.

A flexible curriculum gives only broad guidelines regarding objectives, content, method of teaching and evaluation. Within these guidelines, it gives much freedom to the teacher develop the details of the curriculum. Flexibility can be considered in relation to 'time', place, pupils and school facilities.

A flexible curriculum should cater to individual differences among pupils. For this purpose often the curriculum is made of two parts core curriculum common to all pupils and an optional curriculum which the pupil chooses depending on his own interest. To provide for flexibility over space the N.P.E. prescribes a national curriculum consisting of a core curriculum which is common all over the country and another part which varies from place to place. In this way the curriculum can preserve the national unity and culture and at the same time, the local state culture can be given its due place in the curriculum. Flexibility should also allow differences in the physical and natural environment to be reflected in the curriculum.

Flexibility should not only allow for differences in interests of pupils but also for their abilities - both physical and mental. Although content may be same for visually auditory and orthopaedic disabled children as for normal children, the methods of teaching will vary. Also supplementary instructional materials which differ from one disability to another should be prepared and used. The mentally retarded has to be given a much lower level of curriculum. Evaluation should take into consideration the nature of disability. For visually disabled children, the curriculum should provide more

audio experiences using audiotapes and cassettes. Also tactile experiences are given. For auditory disabled (hearing impaired) children., more visual experiences through models, pictures etc. should be provided. While providing practical activities and extra-curricular activities, the disability of the children should be considered and such activities as the children can do should be are assigned/provided to them.

Flexibility should take into account differences in physical facilities of the school. A school can implement a curriculum for which it has necessary facilities. So the flexibility in curriculum should be provided so that the school can make adjustment of the curriculum to suit its facilities. A curriculum should also change with time. Flexibility should be provided so that the curriculum is re-examined every year and desired changes are brought about to make the curriculum suitable to the changing conditions of the society/country. The curriculum should also present upto data knowledge about places, people and things mentioned in the curriculum.

Unit-2

Curriculum Adjustment and Adaptation to Special Needs.

The curriculum in the school is generally prepared keeping the normal child in view. The principle of flexibility of the curriculum should allow suitable modifications in the curriculum to suit to special needs. We have also seen that children with sight hearing or orthopedic disability have the

same level of intelligence as normal children and can be given the same level of curriculum. Children with learning disability can also follow the same curriculum provided remedial action is taken to overcome their learning disability. Educable mentally retarded children however are less advanced mentally and should be placed in a class two/three years lower than their age. However some curricular adaption have to be made to the curriculum for each of the kinds of children with disablement. The nature of adaptation depends on the nature and level of disability. The following principles should be considered for adapting the curriculum for the disabled studying in regular schools.

- the adaptation should not change the Original concept of the curriculum.
- Compensatory activities should be planned in such a way that the child gets a wholistic picture of the concept taught in regular classes.
- modification in the instructional material should not disturb the majority of normal children studying in IED classes.

A possible strategy of adjustments in the instructional material can be:

- outlining the proposed teaching and learning points,
- analysing the needs and type of adjustments at various levels,
- planning the adaptation in instructional material and methodology,
- preparation of supportive materials, and
- planning of group activities in the general classrooms.

Adjustment of instructional material and methodology can be made in the following ways:-

(1) Without change in regular teaching
(2) With supportive aids, and
(3) With resource teaching.

(1) Adjustment without change in regular teaching:

Here the teacher only makes adjustments in the physical environment, such as:-

Hard of hearing children are asked to sit in the front benches,

Partially sighted are given large print materials and magnifying glasses,

Braille script is given to the blind child,

Adjustable furniture provided for orthopaedically handicapped,

Correction of specific earning problems of learning disabled children is done through participation of normal children.

(2) Adjustment with supportive aids:

Here the teacher provides appropriate supportive aids to each kind of disabled children to teach the same concepts as taught to normal children.

Recorded tapes can be used to correct speech problems of hearing impaired. The sounds should be recorded in minimum phonetic pairs. In addition the teacher can give visual materials to match the given sound. Thus the teacher can help the hard of hearing in learning the alphabet and the normal children in learning correct pronunciation.

The blind child can be given tactile material to match the sound.

The orthopaedically handicapped do not require supportive aids for learning the concepts taught to normal children. The child with upper limb impairment is given prosthetic aids and physiotherapy for

adaptation of limbs. Thick pencils or pens are provided for easy holding.

The educable mentally retarded is given additional workbooks for repetitive exercises.

(3) <u>Adaptation with resource teaching:</u>

The teacher should identify the learning difficulty of the disabled subject wise and suggested remedial exercises, but these exercises should be organized by the resource teacher outside the class, by a special arrangement of the time table within the normal school hours.

For example, if the hearing impaired is unable to learn speaking the sounds "Oh," "th," "dh" etc., the resource teacher can arrange corrective exercises to teach a particular sound. If a blind child is a poor braille reader due to faulty movements of the finger tips, the regular teacher should take the help of the resource teacher for correcting his problem.

Guidelines for adaptation in instructional material and methodology disability wise is given below:

<u>Hearing Impaired:</u>

Due to improper hearing inputs or lack of them, such children have more deficits in acquisition and retention of language. They have problems in learning correct articulation and in acquiring speech and language skills at the initial stages. But if they are given adequate training in speech correction, their speech and language acquisition and retention is like normal.

For teaching the hearing impaired in a regular class, the teacher needs to adapt the curriculum on the basis of the following points.

- More visual cues should be provided to compensate for auditory deficits. Writing the letter, showing how the correct sound of pronunciation is made, making the child touch the vocal chords while pronouncing, and practice is minimum phonetic pairs are some of the methods used for teaching correct pronunciation and spelling. Additional work book can be given to them for writing and learning spelling and pronunciation.
- The hearing impaired require a wholistic perception for understanding any concept. A list of all features and objects given in a particular lesson should be given to them earlier, so that they can see and observe the differences in the objects/concepts to be taught in IED class.
- Substitute the activity which does not provide same learning experience. If the child can not articulate a word correctly but knows its meaning and can use it in written sentence correctly do not emphasize on correct articulation.
- Wholistic method should be used to teach language skills.
- Language teaching should be related to child's experiences. New words and phrases should be taught by associating them with concrete objects and situations.
- Emotional concepts and difficult phrases should be taught using action oriented situation.
- Abstract concepts are taught using visual aids, role playing and dramalization.
- Short question - answer method should be used for oral participation.
- Poems should be taught for rhythm. Usage of similies confuses them.
- Supporting exercises are given for learning correct reading and writing.

Visually Impaired:

Visual impairement restric s a child's learning environment to auditory and other senses. For learning about size, colour, weight and emotional expressions, the blind may face more difficulty than the partially sighted. The teacher has to provide learning experiences in smaller units. For example, the essential attributes of a 'beautiful' flower' can be for this child, the pleasant smell of the flower, the freshness of the flower and the thickness of the flower.

The guidelines in adapting the instructional material for visually impaired children in IED are:-

- More auditory and tactile aids should be given to compensate for visual deficits.
- More verbal cues should be provided for explaining concepts.
- Three dimensional aids should be provided to children to provide a whole experience of the concept.
- The child should be allowed to manipulate the learning aids.
- Essential attributes of the concepts should be determined in the light of the child's limitation and taught one by one.
- Compensatory aids like care for mobility, braille slate and stylus for learning to read and write, abacus to learn numerical concepts and brailler for taking dictation in class should be provided.
- A multisensory approach should be used to provide complete learning experience to the child.
- The adaptation of the instructional material should be in terms of verbal instruction.
- The use of additional and supportive material should not disturb other children in the class.

- The teacher should avoid the use of instructions like 'see', 'look' etc. which require the use of vision.
- The teacher should ask the resource teacher to prepare additional and supportive material in braille and large print before taking the lesson. Normal children can also help in preparing tactile aids in IED settings.

Mentally Retarded:

- Mentally retarded children require plenty of rest between instruction as they have short attention and memory spans. School time table should be adjusted so that periods of rest and play are provided in between.
- The learning activities should be organized through games, physical activities and music which form a permanent impression on their minds.
- The teachers should follow a strict development sequence for teaching basic skills. Sufficient practice should be given to them in learning the basic skills.
- Adaptation of instructional material and methodology should be in terms of developing cognitive abilities and muscular coordination.
- Activities requiring coordination of hand and eye movements.
- Activities which help in memory skills.
- Activities in developing sound discrimination.
- Activities which promote linguistic competencies, completing sentences, reading, writing skills, developing perceptual ability.
- Encourage children to choose learning activity of their interest.
- Provide necessary aids and supportive materials to learn the concept adequately.
- Environment of the class should be conducive to allow development of their potential to the maximum degree.
- Help them in developing socially accepted behaviours.

Orthopaedically handicapped.

These children require prosthetic aids and appliances and physiotherapy. They can be taught in the general classroom. They require adaptation in physical environment.

- Arrange seating in such a way that their movement does not disturb the class.
- Children with lower limb problems need crutches, wheel chairs, braces, hand rails etc.
- Children with upper limb problems need to have their books fixed on lap boards, require page-turner, thick pens, pen holders for reading and writing purposes.
- As the child grows, the artificial limb or brace used need to changed. (They rarely fit for more than a year). Recommend help of a prosthesist.
- The height of furniture used should be adjusted so that it does not interfere witht he function of prosthesis used.
- Postural habits should be observed so that children do not develop wrong postures.
- Children with health problem like athritis, cardiae diseases should not be given prolonged activities like writing.
- Normal children should be told not to tease the children or hide their prosthestic aids.
- Adapt physical exercises to provide proper muscular exercises.

Learning Disabled:

These children make some kind of mistakes repeatedly either in writing, reading or arithmatic.

- Give exercises to the child in identifying the letter or number, which he has difficulty in writing, speaking or recognizing.

- Give exercises which provide feed back of the same letter in different shapes, sizes and colours.
- Letters or words which resemble each other, either visually or auditorily should not be taught together.
- Sensory experience should be provided to copy letters correctly and verbalize differences.

  For example on, no; saw and was.
- Ensure that the child is continually busy and interested in the task during teaching session.
- Give easier exercises first which the child can master.
- Learning tasks should be divided into small groups so that the child feels he has mastered the task.
- Give the child a paragraph in which he has to underline a particular letter or word as quickly as possible.
- Encourage the child to perceive the words as a whole rather than through identification of individual letters.
- For a child having difficulty in memorising time tables help him to memorise by explaining number relationship clearly.
- For improving reading and writing skills, give dictation of words of graded difficulty and exercises in single words, simple sentences and gaps in paragraphs to fill.

.....

INSTRUCTIONAL RESOURCES

Dr.Tapati Dutta,
R.C.E.,Bhubaneswar.

Instruction involves a number of factors like the teacher, the taught and the text through which the instructional objectives are to be achieved. Therefore, effective transaction of the texts are very important for successful teaching in the class. Hence the question arises should we have the same textual materials for normal as well as handicapped children ?

Textual Material for all students:

Instructional objectives and learning outcomes for both normal as well as handicapped children are similar in a classroom setting. Usually the text books are designed for the normal children. The text books as such can not be used by the handicapped children effectively. The textual materials used by the normal children are inadequate to achieve the instructional objectives by the handicapped children. They are also insufficient to bring learning outcomes of the handicapped children on par with normal children. As a result of this, the material adaptations and adjustment of instructional Materials become inevitable in the educational process of handicapped children.

Textual materials for unique needs of children with special needs:

The learning experiences ordinarily planned for normal children may not be relevant and/or adequate for the children with special needs. They need different type of learning experiences according to their disabilities. Hence little modification of the content, method of display and response expectations are very essential for effective transsaction of the texts. Here comes the

concept of Adjustment Instructional Material. The adjustment material refers to special approaches and presentation styles required for providing optimal learning experiences to the handicapped children in the regular classroom. It is the process of making necessary changes such as modification alteration, substitution compensation etc., without changing instructional objectives and learning outcomes. The adaptation may be in terms of teaching mathodology, special approaches, teaching aids, presentation styles, evaluation, enriching assignments etc. Children learn through various sense experiences like by seeing, hearing, touching and smelling etc. The handicapped children are deprived by one or more of these sense organs which limits their sense experiences consequently their learning is affected. Hence, multisensori approach has to be followed in order to compensate their limited sense experiences due to their disabilities. Adjustment of instructional material and methodology is planned according to the need of the children belonging to various categories of handicaps. However, the adjustment is planned in various ways.

A. Adjustment of Instructional Material and Methodology <u>without any change in regular classroom teaching</u>.

Simple modification of physical environment of the classroom enable the handicapped children to participate in classroom activities equally with normal children.

- Asking partially hearing child to sit onthe front bench, so that he can hear better.

- Providing large print and magnifying glasses to help partially sighted.

- Braille script and sl... can be provided to the blind children.
- Adjustment furniture enables the orthopaedically handicapped c... to function normally.

B. Adjustment of Instructional m... rial for hearing impaired children.

They generally have misarticulation problem. They commit spelling mistak s as they write in the way they speak, e.g., 'tigar' for 'tiger'. The hearing impaired children require a wholistic perception for understanding concepts. Therefore some precautions has to be taken while adapting the m... rials and methods while teaching hearing impaired children.

Guide-line for adaptation:

- More of visual cues ... to be provided to compensate hearing deficits.
- Models and charts has to be used more frequently for more clarity.
- For teaching emotional concepts, the teacher has to take the help of action oriented situations e.g., dramatize the expression of happiness and unhappiness, crying shouting etc.
- Hearing impaired chil... en have more problem in learning language. The phonology, semantics and structure of a language should not be taught in isolation. If there is a problem in learning a particular component of language, then remedial adapted lesson should be planned e.g. use substitution table and struc... ral approach.
- Role playing and dramatization help the hearing impaired to understa... abstract concepts.
- Single word question ... answer method should be followed for oral pa... ... ation of hearing impaired in IED class.

- The hearing impaired require supporting exercises for learning correct reading and writing skills, in the beginning.

C. Adjustment of Instructional Material and Methodology for Visually Impaired Children:

A lot of adjustment of instructional material and methodology is required in order to integrate the partially sighted and blind children. Partially sighted have to be provided with large print materials, magnifying glasses and adjustable furnitures. However, integration of completely blind needs learning the braille script and use of abacus.

Guidelines for adaptation:

- More of auditory and tactile aids should be used to compansate visual deficits.
- Three dimensional aids, embossed maps and charts should be used to concretise the abstract concepts.
- More of verbal cues should be provided while explaining concepts in the class.
- Compensatory aids like care for mobility braille slate and stylus for learning to read and write braille, abacus to learn numerical concepts and brailler to cope up with speed of taking dictation in general classroom.
- The teacher should avoid the use of instructions like 'see' 'look' etc. which needs use of vision.
- The resource teacher should beasked to prepare additional and supportive material in braille and large print.

D. Adjustment of Instructional Material and Methodology for Mentally Retarded Children.

Integration of mentally retarded children is more difficult than that of their blind and deaf children. Integration of Educable Mentally Retarded

(EMR) is proposed only at the primary level. Moreover these children go to the school unidentified as having any problem as the disability is not obvious and can not be observed directly. Hence they need more careful observation and alertness by the parents and the teachers while dealing with them.

Guide line for adaptation:

- Instructional material and methodology has to be adapted according to the development of cognitive abilities and muscular coordination.
- Adequate rest between the instructions has to be provided as the mentally retarded children have very short attention span school time table should be flexible enough to adjut the periods of rest and play alongwith the instructions.
- The learning activities should be organized through games, physical activities, music which help to form permanent, impression on their minds.
- The teacher should follow a strict developmental sequence and task analysis for teaching basic skills.
- Sufficient drill and prac tice should be given to them because they need over learning for proper retention and implimentation of the skills they learn.
- Activities requiring coordination of eye and hand movement, has to be included.
- Activities which help attention and memory skills, should provided.
- Activities which improves linguistic competencies like, readingl writing, comprehension, have some place.
- Encourage children to choose learning activities of their own interest.

- Provide necessary aids and supportive materials to concretize the concepts.
- Help them to develop socially accepted behaviours.

E. Adjustment of Instructional Material and Methodology for Orthopaedically Handicapped Children:

These children can be taught in regular classroom as they are mentally just like normal children. They require some prosthetic aids and appliances and physiotherapy in order to compensate their disabilities. They do not require any adjustment of textual material or methodology rather some adaption of physical environment is essential.

- Seating arrangement should be such that their movement will not disturb the class.
- Children with lower limb problems, need crutches, wheel chairs, braces, hand rails etc.
- Children with upper limb problems need to have their books fixed on lap boards, required page-turner, thick pens, pen holders for reading and writing purposes.
- As the child grows, the artificial limb or brace used need to be changed. (They rarely fit for more than a year). Recommend help of a prothesist.
- The height of furniture used should be adjusted so that children do not develop wrong postures.
- Children with health problem like arthritis cardiac diseases should not be given prolonged activities like writing.
- Normal children should be told not to tease the children or hide their prosthetic aids.
- Adapt physical exercises to provide proper muscular exercises.

Learning Disabled:

These children make some kind of mistakes repeatedly either in writing, reading or arithmatic.

- Give exercises to the child in identifying the letter or number, which he has difficulty in writing, speaking or recognizing.
- Give exercises which provide feedback of the same letter in different shapes, sizes and colours.
- Letters or words which resemble each other, either visually or auditorily should not be taught together.
- Sensory experience should be provided to copy letters correctly and verbalize differences. For example on, no; saw and was.
- Ensure that the child is continually busy and interested in the task during teaching session.
- Give easier exercises first which the child can master.
- Learning tasks should be divided into small groups so that the child feels he has mastered the task.
- Give the child a paragraph in which he has to underline a particular letter or word as quickly as possible.
- Encourage the child to perceive the word as a whole rather than through identification of individual letters.
- for a child having difficulty in memorising times & tables, help him to memorise by explaining number relationship clearly.
- for improving reading and writing skills, give dictation of words of graded difficulty and exercises in single words, simple sentences and gaps in paragraphs to fill.

DISABILITY-WISE INVENTORY OF EQUIPMENT AND MATERIAL

Disability	Individual	Aids and equipment sharing within school	Sharing amongst Schools	Instructional Material
Orthopaedic	Adjustable furniture, special writing material, thick pen.	Adjustable furniture provision for development of improvised prosthetics.		
Visually impaired blind	Braille slate & stylus abacus, Taylor frame, Mobility canes.	Brailler, Abacus, Taylor frame cassettes and Talking books, Maps, Embossed recreational materials.	Braille sheets, thermoform machine, Maintenance services for Brailler, embossed recreational materials.	Braille text books, material on cassettes and talking book.
Partially-sighted and low vivision children.	Special adaptive equipment like hand magnifiers to be used with spectacles portable reading lamps.	Specially designed desks with, adjustable magnifiers, white boards instead of black boards, aids for enlarged projection.	Special arrangements for producing large print materials.	Large print materials.
Hearing Impaired	Individual hearing aids.	Voice trainer, large mirror size 3'x6' for speech therapy, visual illustrations. Mirrors 10'X6' in each classroom. Group hearing aids and cells for hearing aids.	Audiometer, Voice trainer, maintenance facilities for hearing aids.	Special learning materials like flash cards, charts, educational games, handouts of classroom activities.
Mentally Retarded		Sensory apparatus kits prepared on the lines of Maria Montessori or kits produced by NCERT for early childhood Education Programme.		Meterial written on a lower reading level than average.

Exa pler-IV Teaching writing skill to Children with Upper limb Impairment Children in I D Settings.

Teaching Point	Teacher's Behaviour	Students' Behaviour	Adaptation
Teaching to write letters. For the orthopaedically handicapped child it is better to teach writing of letters with similar shape (Example of p and b has been taken).	The teacher provides cards with the letter be written in many colours aaying "this is the letter b".	Students will look at the cards and observe the letters b.	The card is adjusted to the height required by the orthopaedically handicapped so that he can touch and see it.
	The teacher provides another card with the letter P written on it.	Students observe the card.	

P	B

B	P

Instructional Resources from the resource room:

Resource Teaching is a pre-requisite of Integrated Education. Resource teaching bridges the gap between handicap and normal children. There are three basic requirements for effective resource teaching.

i. Congenial environment - positive attitude of parents, siblings, teachers and peers.

ii. Adequately prepared instructional materials for the child as well as for regular teachers.

iii. The child has to be properly motivated in order to be attentive and cooperative in the resource room teaching.

Aids and equipments for Visually Impaired:

Braille Duplication and Braille Writers.

Writing Aids.

Braille Paper

Talking Books and Tape Recorders.

Mobility

Low Vision Aids

Other Optical Aids

Educational Aids/Mathematical

Educational Aids/Geography

Teaching Aids

Intelligence Tests

Vocational Aids

Measurement

Clocks and Watches

Games and Puzzles

Sports

Kitchen Equipment

Personal Devices.

Aids and Equipments for Mentally Retarded:

1. Pegs

   Aim: To teach general awareness (number skill through play-way method).

2. Dominoes

   Aim: To teach colour concept

3. Sensorial Appratus

   Aim: To teach size concept.

4. Matching Cards.

   Aim : To teach how to match various types of figures.

5. Recreational Toys

   Aim : To teach motor ability.

6. Geometrical Shapes

   Aims: To teach share concept

7. Mathematical Signs

   Aim: To teach number skills.

8. Model Clock

   Aim: To teach time concept

9. Alphabets/Digits.

   Aim: To teach the child pre-reading.

Sand, water, colour, clay for perceptual motor training.

.....

C C - -

LEARNING AND TEACHING

Dr. T.Dutta,
R.C.E.,Bhubaneswar

Role of Teacher:

Teaching is a very complex task. Effective teaching depends upon the skill and competency of the teacher. An effective teacher has to keep a number of things in his mind.

A. Pupils are the pivot in teaching learning process. The success of teaching depends upon how the teacher is able to cater to the special needs of each and every child involved in the process. In order to understand the child the teacher shouud have the knowledge about their strengths and weaknesses in terms of their interests, aptitudes, mental abilities, their personal experiences and problems. The teacher has to depend on various testing and non testing techniques to collect the above information about the child. They are as follows:

Most commonly used Non testing techniques are:

Observation

Interview

Check-list

Rating Scales

Cumulative Record Card

Sociometric Technique

The teacher can also collect the information about the child's potentialities from the psychologists and counsellors where ever the facilities are available. The psychologists and counsellors give various psychological test to assess the intelligence, aptitude interest and personality of a child. On the basis of the knowledge of the strengths and weaknesses of the

child the teacher should organises his teaching plan and strategies. Hence the teacher has to take extra care to understand the special needs of the handicapped children before preparing any educational programme for them.

B. After understanding the special needs of the handicapped children, the teacher has to plan the learning activities in such a way, the students must feel that they are meaningful and necessary for them. In order to make the tasks meaningful, the teacher has to adopt and modify the tasks according to the need, interest and ability of the child. For example, modification and organization of physical arrangement of the classroom may be very essential for orthopaedically handicapped children. The teacher should be very flexible in choosing methods and materials which needs adjustment according to the disability. For example, Blind child has to be provided with braille slate and/or other special teaching aids in order to take part in the regular classroom. Similarly the teacher should keep a lot of scope for drill and practice in order to integrate a mentally retarded child in the regular classroom.

Sometimes the teacher has to involve the parents in the teaching process so that they can carry on the practice programme at home. Time Table has to be such that adequate rest may in serving in between two periods. This is very very essential for mentally retarded children. The teacher should also make provision for peer teaching and pairing to solve the problems of learning especially for mentally retarded children. Organisation, adjustment and adaption of

material and methodology bec s easier on the part of the teacher, if he answers r following questions:

Whom to teach - Pupil - Which category he belong to:

What to teach - Purpose, or instructional objectives.

How to teach - Supportive materials and methodology according the special need.

Hence conditions for su ssful teaching includes the following:

I. The teaching purpose s to be specified and speltout in terms of instructional objectives. The teacher must be clear both about general and specific objectives of teaching. For examples:-

General Objectives of t ching language supposed to be developing four skills like-reading, listening writing, speaking correctly and underst nding meaningfully. Specific objective will vary according to the topic. While teaching prose the teac r develops the skill of comprehension, correct use of some words and phrases etc.

II. Understanding pupils i the second important factor for successful teaching.

a. Pupil's interests, itudes, mental ability and personality.

b. Pupil's functional l vel and their knowledge.

c. Pupil's strengths and weaknesses.

III. Vatiety of Choice of ma rial and activities.

The teacher should use carefully a variety of activities and teaching aids according to the need and interest of the students. Di nt supportive teaching aids should be used for di nt categories of handi-capped children e.g., brail   abacus for blind. Colourful Cards, charts and ls for mentally retarded.

IV. Flexible use of resources.

a. Freedom: There should be enough scope and freedom for students to participate actively in the classroom activities. The teacher should encourage and invite the students to take part in classroom discussions and other activities.

b. Time: Duration of period and School should vary according to the need of the child. e.g., For mentally handicapped the duration of school and period has to be very short as they have very short attention span. Enough rest should intervine in between the periods.

c. Peer Teaching may be utilized to help the teacher. Peer may be selected as a leader of a small group and teach. Sometimes pairing or a normal good student is given the responsibility of teaching and clarifying the doubts of the handicapped peer.

d. Parents involvement in teaching handicapped children is a must. This reduces the work load of the teacher. Parents can carry on practice at home. They are more sincere in carrying out the programme than any body else. More over child's progress give a lot of moral strength and support to the parents.

V. Reflection and Review:

At the end of teaching the teacher should reflect, revise and review each and every teaching point. This revision helps the teacher to evaluate the efficacy of both teaching and learning process in the classroom. While teaching the handicapped children this reflection, revision and valuation should take place after each teaching point. So the continuous revision and evaluation is very essential in teaching the handicapped children.

Conditions of Effective Teaching:

The effective teaching depends upon a number of conditions. The first and the most important condition is that the teacher has to establish rapport or a good, friendly cordial relationship with the students, so that the children accept him and develop confidence on him.

The next condition is knowing the pupils in terms of knowledge, skills, interests and previous experience. The teacher working with the children with special needs has to

(1) Identify the special needs or locate what kind of problems the child has, e.g. whether the child has hearing problems or visual problems or intellectual problems. The children has to be categorised accordingly.

(2) Assessment of the functional level in different areas like, physical, motor, intellectual, social and emotional.

(3) The teacher should also find out the child's previous knowledge and experiences in various academic and non-academic areas for placement and educational planning.

(4) Simultaneously the teacher has to find out strengths and weaknesses for preparing Individualised Educational Programmes (IEPs) and utilize strengths and special abilities to facilitate teaching-learning process in the classroom and outside.

(5) The teacher should select appropriate equipments and prepare teaching aids according to the special needs of the children, e.g., prepare visual and tactile aids for Hearing impaired.

(6) The teacher should adopt adequate methods like activity method or multisensory approach to facilitate learning of the disabled children in the regular classroom.

(7) The teacher should try to relate the classroom teaching to the personal experiences of various disabled children to make the learning in the classroom more meaningful.

(8) The teacher should provide all types of support and remedial services to bring the handicapped children upto the level of their peers.

(9) Besides the teacher should create congenial classroom climate for the disabled children. There should be reciprocal postive attitudes among both handicapped and non handicapped children for having good personal-social adjustment, frequent interactions and efforts to help each other.

(10) Tasks and activities should be arranged in such a manner that both handicapped and non-handicapped children are equally interested and get equal opportunities to perform them.

(11) The teacher should encourage and initiate the activities, so that both normal and handicapped pupils can take part equally, in those activities.

(12) The teacher should involve both parents and peers in teaching handicapped children because they need lots of drill and practices for learning.

(13) The teacher has to be very flexible in selecting various methods which should vary according to the subjects, levels and the special needs of the children.

(14) The teacher has to be innovative in preparing teaching aids according to the special needs of the children.

.....

CLASSROOM AND BEHAVIOUR MANAGEMENT

Dr.(Miss)Tapati Dutta,
Sr.Lecturer,
RCE,Bhubaneswar.

The mentally retarded children show behaviours of various problems which may be categorised as:

a) Emotional Problems.

b) Mannerisms.

c) Attention problems.

In order to deal with these behaviours functional analysis is very essential. First identification of cause/ reason of the problem behaviour and then utilization of appropriate treatment. This is known as behaviour management or behaviour therapy.

a. Emotional Problems:-

Inferiority complex: The child feels that he/she is incapable of doing task or answering in the class which the normal children can easily do and often the teacher compare them infront of the whole class - results in inferiority complex.

Treatment: The teacher should simplify the task, if necessary prompt or ask probing questions which help to elicit the correct answer. When the child is able to give right answers with the help of the teacher, he gains self confidence which results in positive self concept and reduces inferiority complex. Thus the success experience is very essential for motivating the mentally retarded child and to enhance his self confidence and inculcate positive self concept.

II. Stress and Anxiety:

Inferiority complex and neglect by the teachers and peers leads to stress and anxiety on the part of the

Treatment: Acceptance, help and rapport by the teacher and avoidance of comparison in the class reduces the anxiety and stress of those children.

III. Anger and Tempertantrum:

If the teacher neglect and humilate the mentally retarded child in the classroom the child looses interest in studies, start hating the studies, teacher and peers. Many a times they become aggressive and inattentive in the class. Those children frequently utilise the aggressive behaviour and tempetantrum in order to draw attention of the teacher and the peers.

Treatment: Teacher has to ignore the aggressive behaviour and tempertantrum sometimes or reinforce the reverse behaviour i.e. reinforce the child when he does not show aggression or tempertantrum.

IV. Frustrations:

In ability to complete the task successfully leads to frustration. Frustration results in stress and anxiety.

Treatment: However the teacher can help the child to get rid of frustration by providing success experience in the class, helping them in setting realistic goal.

b. Manarisms:

Mentally retarded Children are after victims of various kinds of manarisms or odd behaviour, such as, pulling hair, producing monotonous sound, repeated steriotype behaviour.

Treatment: The teacher may have to utilize negative reinforcement or positive reinforcement technique according to the child.

c. Attention Problems:

Mentally r tarded child en su f r from short attention span. This result distraction, lack of concentration and poor retent n. Therefore in ord r to improve the memory of the M c ld, enhancem nt of concentration and improv ment f att ention is very essential.

Treatment: Arrangement f the classroom or physical arrangement. These c ildren as to be taught in a calm and quite place which i fr e from distractors. The walls should be clean, and free from distractions, sounds. If necessary such chil r n should be taught individually separated from the r st of the children. The matters has to be present d with the help of colourful aids which may attract and s s in their attention. They should follow distributed pr c ice in place of mass practice for better retention.

Regarding Problem beh viours like pulling hair, tempertantrum:

Date	Time	Frequency behaviour pulling h ir or Tempertantrum		Treat-ment	Freque-ncy in 60 nts.
1	2	3		4	5
15.4.90	10.30 to 11.30 A.M.	60 nts.	10 times	Reinforce when do not show temper-tantrum	

ROLE OF REGULAR AND RESOURCE TEACHERS IN INTEGRATED EDUCATION OF CHILDREN WITH SPECIAL EDUCATIONAL NEEDS

Dr.S.C.Chaturvedi,
Retd. Professor,
R.C.E., Bhubaneswar.

Education is the most powerful agency by which a person's individuality is developed. All those who have been concerned with the education system are fully aware that the schools should be capable of fulfilling the potential of all those who pass through it including children with special educational needs. There was a time when people believed that children with special educational needs could only be educated in special schools especially meant for them. Gradually, a new thinking has emerged, leading to the recognition that ordinary schools can and should accept children with special needs.

The scheme of Integration would be successful if the teachers and parents work as equal partners to the fullest extent. It involves proper procedures for advising parents and organizing 'Handicap Awareness sessions'. Teachers can hardly be expected to take on this responsibility in addition to their other commitments. In our country particularly in the rural areas they are the only professionals to undertake this job. So, the task will fall on to them by default.

Many teachers will have their own preconceived notion about children with special educational needs and will respond to their needs in various ways. The way the teacher perceives the new situation is important because this will have consequences for both the child's education and self conceptions.

A useful way of conceptualizing the level of acceptance is to use the term, "positive discrimination continum" and the amount of extra and special help the teacher is prepared to give to the child with special educational needs (SEN). At one end of the continum the teacher has no objection in accepting a disabled child in the regular classroom but is not prepared to offer more than what she/he perceives as a "normal" amount of attention. In other words they welcome the SEN child but on a "sink or swim" basis. The next point in the continuum gives us the teacher who is willing to accept the SEN child and s/he is also prepared to offer extra help. But s/he tends to classify them all together as those in need of extra help. This teacher may modify her/his teaching style for the benefit of the SEN child but in a very limited sense.

A further point in the continuum will give us the teacher who takes very seriously the responsibilities of an SEN child and is prepared to make carefully thought of modifications in her/his teaching in order to meet the special educational needs of the child. S/he prepares her/his lessons in such a manner that the SEN child marches ahead along with other children of the class. S/he also ensures that the interest of the other pupils of the class is not sacrificed.

The other end of the continuum is represented by the teacher who makes rather a "big production" of the presence of an SEN child in the classroom. In his zeal to do his/her best for such a child s/he makes concessions to the SEN child at the expense of other

The findings of the researches indicate that teachers can be made aware of these needs through inservice training programmes. These programmes can be organized to discuss methods and techniques for working with SEN children and other allied matters. The teachers must clearly understand their role in an integrated setting as they have to deal with mixed ability groups.

The effect of the Education of the Disabled in the main stream can be broadly divided into two major factors:

1) Firstly the children with special needs who can profit by attending classes with normal children should be rightly placed in ordinary schools.

2) Secondly the teachers should be skilled in recognising the pupils for whom adequate arrangements cannot be made in the ordinary schools.

The teachers of the ordinary schools therefore, must be prepared to face the new challenges. They can effectively play their role if they keep note of the following points before and during the IED(Integrated Education of the Disabled) programme.

The teachers must:

1) have a clear concept of special educational needs.
2) be determined to act as 'responsible persons' to ensure that the school fulfils its duties to identify and provide for those with special needs.
3) take active part in the identification of the children with special educational needs.

4) keep the parents informed of any problems their children have as well as the proposed action.

5) know the various external agencies in the locality available as support services.

6) keep all the records properly so that the action programme is properly executed.

7) be willing to introduce the system of mixed ability teaching.(more personalized teaching and learning)

8) workout a remedial teaching programme which may help all pupils especially the children with special educational needs.

9) try to know about the work of those who have the child before and after them.

10) prepare a plan to orient the normal children by providing informations regarding the children with special educational needs.

11) must attend in-service courses/seminars/workshop organized from time to time.

12) try to ensure that these children are integrated in the real sense of the term. These children should be assigned responsibilities they are capable of shouldering alongwith other children of the classroom. They should be encouraged to take active part in all the activities and programmes of the class as well as of the school.

13) be willing to cooperate with the Resource teachers for providing the best possible education to these children.

14) develop instructional materials to teach mixed ability groups.

15) monitor the level of the Group's acceptance of the child and integration into the various activities curricular as well as co-curricular.

In brief, it may be stated that sound principles of teaching apply to all students ~~normal as~~ well as disabled. Teachers have to shoulder a number of responsibilities and are required to play a number of roles.

The effective teacher in an Integrated setting is 1) One who involves the parents and all other members of the staff of the school as well as the people of the community who are able and willing todo their best for the education of the SEN Children, 2) always prepared to make use of a variety of methods, materials and media in her/his teaching, 3) a good transmitter of information, 4) a good receiver of information, 5) a conscientious evaluator, 6) a facilitator of learning who is willing to support other teachers including the resource teachers. S/he is always eager to provide all necessary help to students for having access to the learning materials.

The Resource Teacher:

It is necessary to discuss who is a resource teacher before a list of her/his responsibilities is prepared. A resource teacher is a teacher who has been specifically trained to assess, teach, and evaluate the performance of the children identified as being in need of special educational services. The resource teacher is also expected to work closely with the child's regular class teacher and his/her parents in order to provide the child with a consistent and integrated programme.

The resource teacher works in the resource froom but mostly s/he has to work out of a resource room.

What is a resource room ?

In the context of special education, any setting in the school to which as exceptional child may come to receive specific help (academic, behavioural, motoric, etc.) on a regular basis for specific periods of time. For the remainder of the school day, the child receives his educational programming in the regular classroom.

The flexible deployment of resource teachers is of utmost importance. The more flexibly those teachers can operate the greter likelihood of meeting the special needs of the children. Depending on the situation, a resource teacher may have to provide such attention within the regular classroom.

Role of the Resource Teachers:

1) The Resource Teachers (RT) are to assist the school authorities inthe identification and placement of children.

2) S/he has to organize inservice orientation programmes for the administrators and teachers of ordinary schools. Tteachers in ordinary school should be provided with basic information regarding the concept of "Special need", individual differences or the possible educational consequences of different physical or sensory conditions.

3) S/he is to provide expert advise to the class teachers regarding the possible approaches to teaching the children, with special needs.

4) S/he has to develop or provide assistance in developing instructional materials to supplement the next

5) S/he has to provide regular classroom teachers with the following information:

i) functional level of the child

ii) emotional, physical, intellectual and social factors of the child with special needs.

6) S/he has the responsibility of advising the classroom teachers about the new materials and new trends. The materials which can be adapted for the classwork should be shared by them. It need be the use may be explained.

7) S/he should be willing to provide individual supportive help in the regular classroom to the students with special needs.

8) S/he should take active interest in planning sessions,

9) S/he must Orient the students of the ordinary schools by providing appropriate information regarding children with with special educational needs.

10) S/he has to explain specialized equipment or apparatus required by integrated students.

11) S/he is also expected to work closely with the child's regular class teacher and his/her parents in order to provide the child with a consistent and integrated programme. S/he has to work as a specialist whose major responsibility would be to provide regular class teachers, parents, administrators, etc. with assistance or consultation regarding specific children with special educational needs and their educational programmes.

12) S/he must involve himself/herself in total school activities, for example by serving on various school committes.

The crucial question about integration is how the ordinary school teachers, the special school teachers and the resource teachers can be employed under the integration scheme. The success of the scheme depends on the dedication of all these teachers.

*****

APPENDIX- I
(i)

THE BLIND BOYS' ACADEMY, NARENDRAPUR, WEST BENGAL

Started in 1957, the Academy is an important link inthe chain of educational institutions run by the Ramakrishna Mission Ashrama of Narendrapur. It is engaged in carrying out a comprehensive plan for the education and training of blind boys so that some at least of India's about 9 million blind people may have the satisfaction of seeing fulfilled what is the chief aspiration of every normal human being.

To make this possible the Academy tries to;

(1) Educate those among the blind boys who appear to be intellectually sharp;

(2) Teach advanced music to the really talented among them;

(3) Train them to work as drill and press operators, capstan operators turners and other skilled craftsmen; and

(4) Teach scientific farming, specially poultry-keeping, dairy science, kitchen gardening, horticulture, floriculture, etc., to those who have a farming background or come from poor families of rural areas.

A beginning has already been made towards the implementation of the plan outlined above and the results so far achieved, if looked at from the point of view of REHABILITATION, are encouraging as may be seen from the table given below:

Profession	No.of blind men employed
School & College Teachers	30
Music Teacher	18
Industrial Worker	173
Workers inthe Sub-Contract Workshop	26
Agricultural workers resettled in their home	164
Miscellaneous	23
Total:	434

Demonstration Van:

A new project under the placement department of Academy has been introduced in 1976. It is a mobile exhibition which is installed in a demonstration van with an inside floor area of 12' x 6' and 5.5' height. The van is equipped with power driven mini lathe, grinding and drill machine and one hand-driven rubber band cutting machine. The students of our industrial Training (centre work on these machines in front of spectators to give them a practical idea about the blind person's capabilities. The demonstration van is often taken to the prospective employers to demonstrate what the blind, if they are properly trained, can do on power-driven machines. It is also sent to different fairs and gatherings in and around Calcutta to enlighten the public about the potentialities of the "light denied".

Agricultural Training:

It is a fact, the majority of blind population in India come from rural areas. It is, therefore, desirable that they should be trained in rural vocations, particularly in agriculture and animal husbandry.

For the last twelve years we have been running this project in an attempt to train blind youngmen in scientific farming.

Although it was an experimental project initially, the results so far achieved, bear the testimony that the project has been a successful venture and all the 115 of the 115 trainees have already been resettled in their professions like, Poultry, Goat and cow keeping..

Market-gardening, Cultivation of Paddy and Wheat etc. As a consequence this has opened vast possibilities for the rural blind. Now what we need is that a considerable amount of farming land be procured and more facilities be provided to rural blind persons so that the Academy may absorb larger number of rural blind persons, which it cannot do with its present land and residential provision. Land is also required for arranging co-operative farming of those trained blind who have no land at all. Drive is also required for procuring and distributing land to those landless blind who want to be settled in their own individual home setting.

Swimming Pool:

Swimming is one of the best physical exercises that we can have at a cheaper cost and which can offer specially to the blind a better scope for their physical activities which they otherwise can have hardly any opportunity to do. It also develops in blind children self confidence which is very much essential for them to possess for their alround development. For years together we were pining for starting such a project, and at long last the swimming pool project was commissioned in 1978 in an artificial pool with inlet and outlet facilities of water. It has created a new jubilation in the heart of blind youngsters. When situation permits competition in aquatics will be organised here, in this artificial pool.

Teachers' Training:

Teaching the blind (or for that matter anybody who is physically handicapped) is a specialised job and the fact that there are practically a few teachers in the country who are specifically trained to teach the blind has proved a great hurdle to the work of educating the blind. The Academy started training such teachers on a regional basis in 1965 and since then trainees representing different schools and organisations for the blind in the Eastern Region and also of South India have been trained.

Braille Press and Braille Library:

The Academy started a Regional Braille Press in 1967 here at Narendrapur, which is producing Braille books to meet the needs of blind students living inthe Eastern Region of India i.e., Assam, Orissa, West Bengal, Tripura, Manipur, etc. Up to 1986 the Press has completed brailling of books for classes I to VIII and most of the text books for classes IX & X including annual calendars and also a few books of the higher secondary standard.

The languages covered by the Press are Bengali, English, Sanskrit, Assamese, Oriya and Manipuri.

Talking Book Studio:

A well equipped talking book studio has started functioning in 1976 inthe new site of the Academy to facilitate recording of reading materials as also listening to the sound-scribed books for a single individual or whole class at a time. This studio shall also work as a language laboratory to help offer speech

therapy for the blind children having speech defect. It is being contemplated that the services of the studio and its talking books be extended to entire eastern region in future.

Restoration of Physique and Assessment of Abilities:

It often so happens that while a boy is known to be blind, there is really no such damage yet to his eyes that it is not possible, with a little care and treatment, to restore his sight; indeed, many instances are known in which one or two surgical operations and some medical and dietary care have given back a near normal vision. Also it has been observed that often a blind child suffers not only from blindness, but also from other ailments some of them having their roots in other organs. It is, therefore, necessary that there be a well-equipped clinic attached to the Academy which will be charged with the task of thoroughly examining a blind person first to see if it is possible to restore his sight and then, to see if there is any other organ in his body which is damaged like the eye and not functioning normally. Unless such a thorough test is undertaken no reliable assessment of his abilities can be possible and any decision that is made regarding his course of training based on wrong or insufficient data is likely to lead to frustration, if not, what is worse, also to further damage to his body.

Spice Grinding:

Since May 1986, the Blind Boys' Academy have started a new venture-spice powder and napthalene ball making units for self-employment of those visually

handicapped post trainees, who are waiting for employment.

Now-a-days procurement of direct/open employment for the blind has become a difficult proposition for the acute problem of unemployment. To find other channels, the present self-employment venture has been started.

Presently 8 (eight) blind workers have been engaged in training for a period of 1(one) year, to learn making spice powder and naphthalene ball, operating heat sealing machines, drying, packing etc. as also to sale the products, to create market for the future self-employment.

On completion of their training the trainees-cum-workers would be encouraged to start a small business either individually or in a group of 4/5 ex-trainees. Nationalised Banks have assured the financial assistance for these enterprenuors.

....

APPENDIX-II

NATIONAL INSTITUTE FOR THE ORTHOPAEDICALLY HANDICAPPED

...

THE INSTITUTE

National Institute for the Orthopaedically Handicapped was established in a spacious campus, at the northern outskirt of Calcutta on G.T.Road, Bon-Hooghly, Calcutta-90, in 1978. It is an autonomous society under Ministry of Welfare, Govt. of India.

OBJECTIVES

a) To develop manpower for providing services to to the orthopaedically handicapped population.

b) To conduct and sponsor research in all aspects relating to the rehabilitation of the orthopaedically handicapped.

c) To standardise aids and appliances and to promote their manufacture and distribution.

d) To develop model services inthe area of restorative surgery, aids & appliances, and vocational training.

e) To serve as the apex Documentation and information centre.

f) To provide consultancy services to the State Governments and Voluntary Centres.

SERVICES

For the purpose of realising the objectives inthe field of treatment, training and research,.the institute has developed appropriate programmes, services and facilities through its following unts:

* Assessment Clinic
* Restorative Surgery Unit

* Disabled Hostel
* Orthotic & Prosthetic Unit
* Physiotherapy and Occupational Therapy Unit.
* Psychology, Vocational & Social Counselling Unit.
* Polio Immunisation programme.
* X'Ray & Pathology Unit
* Photography Unit
* Library & Documentation Centre
* Medical Service circular
* E.M.G.
* Computer
* Diapulse

The Institute in last few years has developed specialised services for:

* Spinal Cord injured (SCI)
* Spinal deformities
* Post Polio Syndrome
* Amputee
* Cerebral Palsy
* Arthritis
* Congenital conditions leading to locomotor disability.

The treatment is provided free for those within the income group of Rs.1200/- per month. Free aids and appliances are provided to patients having monthly income of less than Rs.1200/- [illegible], only 50% of the cost is charged from patients inthe income group of Rs.1200/- to Rs.2500/-.

TRAINING PROGRAMMES

For the purpose of real ing one of its major objectives of manpower develo t in the field of locomotor disabled NIOH condu several courses.

1. Bachelor of Physiotherapy, aliated to the University of Calcutta.
2. Bachelor of Occupational rapy, affiliated to the University of Calcutta.
3. Diploma in Prosthetic & Orthotic Engineering, recognised by Rehabilitation Council, Government of India.
4. Diploma in Physiotherapy, recognised by Govt.of India.
5. Diploma in Occupational Therapy, recognised by Govt. of India.

Short term orientation courses are organised for professionals to update their knowledge with latest developments inthe field.

Institute also conducts seminars, workshops, symposiums and group discussions regularly and these are open to the professionals working in Govt. and Non-Govt. Organisation. All these together have created an excellent supportive environment for the handicapped who will begin their journey for thousand miles by begining the first step here.

Polio Clinic on every Friday 11 A.M.

General Counselling Clinic on ry
Tuesday and Wednesday. 11 A.M. to 1 P.M. - 2P.M. to 4P.M.

Special Clinic on every Thursday 2.30 P.M.

....

APPENDIX-- III

CALCUTTA BLIND SCHOOL
BEHALA, CALCUTTA - 700 034

Calcutta Blind School was set up by Late Rev.L.B. Shah in 1894 in order to uphold the cause of the sightless in the society. This is a secondary school which offers equal opportunity to the sightless boys and girls on a large scale irrespective of caste, creed and colour. The school have classes from Kindergarten to Class X. Since visually impaired children need individualized instructions, only 12 students are accommodated in each class. Every year the children who appear at the Madhyamik Examination, come out successfully obtaining first division and securing very high marks.

Besides academic classes, the institution provides facilities in music, craft, regular sports activities including Scouting guiding, Cubbing and Busbul.

The work education programme includes Book Binding, Making of Taster, and Hanger, Weaving Door mats and basket making, preparing chalk and candles.

A Guide competition was held on Integrated level on 28.2.1993. Eight sightless guides participated and won prizes for games and sports and stood first in cultural competition. They received cups and shield.

Since typing is the only communicative medium of the sightless with seeing world, a project was started in 1984 and the students of Classes VIII and IX are being trained in this line.

30-Beded Girls' Hostel is onthe point of completion and will be inaugurated on 1.12.1993 onthe occasionof Centenary year. On the same occasion four

class rooms with two storied building is also onthe point of completion inthe centenary school building. One of these rooms will be alotted to Computer Training Programme for sightless and other three room will be utilized for music, general classroom with special apparatus for geography.

APPENDIX - IV

BODHI PEET SCHOOL SECTION
20, HARINATH DE ROAD, CALCUTTA-700009

ABOUT THE SCHOOL

Bodhi Peet School is the first school for Mentally Handicapped Students in West Bengal which was established in 1954. The School progressed through by contributions of renowned educationists of Calcutta University. Late Mr.S.C.Bisi and Late Miss Rekha Ghosh had put in a lot hard work to develop the school.

The school is now under the Sponsorship of Government of West Bengal since 1986. It is a special school for Mentally Handicapped children ranging from 4 years to 21 years of age.

The school is run by qualified personnel and provides training and Special Education to all ranges of Mentally Handicapped studnts. Bodhi Peet School attempts to provide all possible means and facilities necessary for their optimum development.

The school has received a good deal of public encouragement from the professionals and parents of the handicapped for its activities and dedicated work with the Mentally Handicapped.

WE PROVIDE

ASSESSMENT - as an integral [illegible] f the training programme. The students are as[illegible] d by a team of professionals prior to their [illegible] y and periodically during educational and train[illegible] r [illegible].

INDIVIDUALISED TRAINING PROGRAMME

Each child re[illegible] ives in [illegible]ualized training programme in functi nal acad[illegible], motor development, social skills, Prevocational [illegible] vocational skills and Self help.

BEHAVIOUR MODIFICATION

Very often Mentally [illegible]dicapped Children exhibit behaviour problems like aggress[illegible]n, self injury, repetitive behaviour etc. The School gives [illegible]cial attention to these problems.

REHABILITATION AND INTEGRATION

The School gives speci[illegible] attention to rehabilitate its students vocationally [illegible] socially in the Society.

MEDICAL FACILITIES

Medical Specialists at[illegible] the medical ailments of the students as and when [illegible].

CREATIVITY

We give training in D[illegible], Drama, Music, Art & Craft to all our students.

CULTURAL ACTIVITIES

Our students partici[illegible] [illegible]n cultural activities and social functions. Our stud[illegible] also go for picnics and Holiday Camps.

OUR BENIFICIARIES

Under priviledged mentally Handicapped Persons. All our services are FREE for all the students in our School.

WE PROPOSE

- To start an out Patient Department for individualized home-based training programmes for the children, who cannot attend school regularly.
- To start Speech Therapy, Physio-Therapy and occupational Therapy in school.
- To enhance our Vocational Training units.
- To start Transport facility for all our students.
- To have a more spacious accommodation for our School.

.....

APPENDIX - V

CALCUTTA DEAF SCHOOL

Calcutta Deaf School was established in the year 1893 at 293 A.P.C. Road in the heart of Calcutta city. It is a residential school for hearing impaired children. The school is open for both boys and girls from the age group of 3+ to 15 years. The medium of instruction is both Bengali and Hindi. At present about 1000 hearing impaired children are reading in the school.

The children are taught by oral and aural method. The classes are filled with powerful group hearing aids and loop induction hearing aids.

The school follows the prescribed syllabus meant for the normal hearing children. The syllabus is adopted and adjusted whereever necessary. Along with the academic activities, the school provide pre-vocational guidance like blacksmith, tailoring, clay modeling, printing, cutting and binding, wood work and embroidery to the children. These vocational services help them for their self employment at the end of their schooling.

There is one Training College for the Teachers' of the Deaf attached to the school. The school works as a demonstration/practising unit for the practising teachers. The parents and inservice teachers are trained in this College.

....

APPENDIX - VI

MADRAS DEVELOPMENTAL PROGRAMMING SYSTEM

The Madras developmental programming System's (MDPS) Behavioural scales are designed to provide information about the functional skills of the mentally retarded persons for purposes of individualized programme planning. The scales contain 360 items grouped under 18 functional domains. As an aid to programme planning, the items under each domain are developmentally sequenced along a dependence/independence continuom. The scales are designed to collect information about the retarded person by those people who have an interest in the life of the retarded person.

INSTRUCTIONS:

Read the instructions all the way through before beginning the assessment.

In order to use the Madras Developmental Programming System for behavioural assessment the following materials are necessary:

1. this booklet, containing the behavioural scales and instructions.
2. the behavioural profile form.
3. ABAK - Adaptive Behavioural Assessment Kit in the profile ______.

- Complete the identifying information.
- Mark 'A' or 'B' as per instruction for the initial assessment. Count and enter the total number of 'A's and 'B's.
- For the initial assessment and the first, second, third and fourth quarter evaluations follow the markings as indicated in the profile.

Assess the person keeping the following points in mind.

* If the person can perform the behaviour, mark 'A'.

* If no additional training is required for the person to perform the behaviour mark 'A'.

* If the behaviour is too simple and consequently inappropriate mark 'A'.

Example:- Offers little or no resistance while being washed.

A person who is able to wash himself would be marked 'A' for this item.

* If the person cannot perform the behaviour, Mark 'B'.

* If additional training is required for the person to perform the behaviour Mark 'B'.

* If the person cannot perform the behaviour due to physical handicap or absolutely had no opportunity to perform the behaviour mark 'B'.

Example: Travels by public bus to and from any destination. A person who lives in an area without public transportation would be marked 'B' for this item.

* Observe the behaviour directly or consult with some one who has observed. Assessment is based on direct observation-yours or some one else's. Most of the behaviours will occur in routine daily life where you can easily observe.

However, some behaviours will not take place where you can see them. Then you must either:

Consult with other people such as a teacher, employer, parent, doctor or social worker who may have directly observed the person's behaviour in another setting, or if all else fails.

* Do not read between the lines or make quesses. Each item means only what it says.

Example: Sits quitely at a table for two minutes. This means that the person sits at any table and acts in a quite way for two minutes. The person may be doing some other activity at the same time, such as reading, playing a game or eating. The item does not limit the activity to just sitting nor does the item specify the kind of table.

* Do not give assistance unless so stated.

Example: Selects correct sizes and styles of clothing at a store.

The person must select the clothing without assistance to be marked 'A'.

* If there is no possibility to observe certain behaviours in natural setting, then you may a setting. However, simulation is permitted only for items in the following scales:

Scale 1, Gross Motor
Scale 2, Fine Motor
Scale 3, Grooming
Scale 8, Expressive Language
Scale 10, Reading
Scale 11, Writing
Scale 12, Numbers
Scale 13, Time
Scale 14, Money
Scale 18, Vocational

MDPS - BEHAVIOURAL SCALES

1. GROSS MOTOR DEVELOPMENT

1. Holds head erect when in sitting or standing position (body may be supported by a person or prop).
2. Holds head up for 5 seconds when lying on stomach.
3. Sits without support.
4. Rolls over on flat surface from back to stomach or stomach to back.
5. Moves from lying on stomach to sitting position.
6. Creeps or crawls about a room containing furnitures and/or other people.
7. Pulls self to standing position using person or prop for support.
8. Stands unsupported.

9. Walks 5 feet (May us braces or crutches).
10. Crawls forward and backward.
11. Walks upstairs and downstairs putin both feet on each step (may use wall or handrail for support).
12. Walks a straight line for 10 feet.
13. Pushes or pulls a wagon-type object while walking 10 feet.
14. Runs.
15. Squats.
16. Walks upstairs and downstairs, alternating feet (may use wall or handrail for support.)
17. Jumps up, both feet off the
18. Climbs up and down a
19. Stands on tip toe for 10 seconds.
20. Rides a bicycle (without training wheels) for 30 seconds/swims.

2. FINE MOTOR DEVELOPMENT

1. Closes hand around an object placed in hand.
2. Reaches for and grasps objects.
3. Use both hands at the same time when handling an onject.
4. Pick up small objects using thumb and fingers only.
5. Carries a paper cup without crushing, tipping or spilling.
6. Turns a door-knob and opens the door.
7. Makes a stack of 3 cans, or tiffin carrier or wooden blocks.
8. Uses spoon to stir food or drink.
9. Strings three one-inch beads or spool on to a string.
10. Unscrews a jar or bottle lid.

11. Pours liquid from a pitcher into another container without spilling.

12. Tears off a perforat d sheet.

13. Cuts with in 1/8 inch of a straight line drawn on paper using scissors.

14. Pàaces a key in a lock and opens the lock.

15. Cuts out a circle with in 1/8 inch of a line drawn on paper using scissors.

16. Folds a letter to fit an envelope and inserts letter into envelope.

17. Seals envelope with le ter enclose' and puts on a stamp.

18. Uses a screw driver to insert or remove screws.

19. Strikes a safety match within 2 tries.

20. Threads a medium siz d sewing needle within 2 tries.

3. EATING

1. Swallows soft foods hat do not require chewing.

2. Drinks, without spilling, from a glass or cup with assistance.

3. Picks up food with fingers and puts food in months.

4. Uses spoon/hand to pick up and eat food (need not to skillfull).

5. Chews solid food.

6. Picks up a glass and rinks from it witnout spilling.

7. (Eat a complete mea ith little or no spilling. (may use only fingers and spoon).

8. Drinks from a drinkin water tap using hand.

9. Use fingers to pick up and eat food.

10. Waits in line and carries a tray in a dining facility.

11. Eats, supervised in public without calling attention to eating behaviour.

12. Eats Idli/Dosai/Puri/Roti (Uses fingers to meal bits).

13. Eats a complete meal with little or no spilling using all normal dish s and utensils.

14. Eats porridge/payasam from a plate using spoon or fingers.

15. Takes proper portions when food is offered.

16. Displays table manners such a politely asking for food to be passed.

17. Serves self in a family-style setting.

18. Selects and requests food from a limited menu by telling choice to person responsible for delivery.

19. Selects a nutritious and complete meal when variety of foods are available.

20. Orders and eats in public dining facility.

4. DRESSING

1. Offers little or no resistance while being dressed and undressed.

2. Extends and withdraws arms and legs while being dressed and undressed.

3. Removes slip-over shirt.

4. Removes socks, underpants, unzips outer pents and unbuttons shirt dress.

5. Undresses self completely (may need help with belt or bra).

6. Puts on underpants, slip-over shirt or dress outer pants and socks.

7. Puts on jacket/Kurta (need not fasten).

8. Unzips clothing with front zippers.

9. Dresses self completely except for fastenings such as butterns, zippers, ties, or hooks.

10. Puts shoes on correct feet.
11. Buttons clothing.
12. Starts and closes a front zipper.
13. Ties a bow knot in shoe laces.
14. Laces shoes with a lace in each eyelet.
15. Puts on and takes off ties, scarves, belts, watches or jewellery.
16. Puts on outer wear without reminder in response to cold or rain.
17. Selects clothing for seasonal and weather conditions and different occasions.
18. Selects correct size, type and style of clothing at a store.
19. Wears Dhoti (Half Saree/lungi).
20. Wears Dhoti/Saree and manages the wholeday.

5. GROOMING

1. Offers little or no resistance while being washed.
2. Turns head and extends hands while being washed.
3. Puts hands under running water for washing.
4. Dries or blots hands with a towel.
5. Begins brushing motion for cleaning teeth.
6. Wipes face with a wet wash-cloth including forehead, cheeks, nose and chin.
7. Wipes nose with an arm, hand, when nose is running.
8. Soaps and rinses hands.
9. Bathes in a tap or shower.
10. Runs a comb or brush through hair with several strokes.
11. Blows nose in a handkerchief.
12. Soaps and rinses arms and upper body.
13. Uses tooth-paste or tooth powder, brushes teeth and rinses mouth.
14. Dries entire body with a towel after bathing.

15. Applies powder/deodorant.

16. Washes, rinses and dries hair.

17. Grooms hair includin washing, drying, combing and curling (if appropriate).

18. Maintains self-clean, odor-free and groomed.

19. Cleans and clips finger nails with a nail clipper.

20. Shaves (male)/manages during menstrual period(female).

6. TOILETING

1. Stays dry for two hours.
2. Sits on the toilet for 30 seconds.
3. Eliminates when on th toilet (bowel or bladder)
4. Removes clothing befo sitting onthe toilet.
5. Goes to the bathroom with a reminder.
6. Has bowel control at night.
7. Has bowel control.
8. Replaces clothing be leaving the bathroom.
9. Removes clothing, sits on the toilet and eliminates and replaces clothing.
10. Has bowel and bladder control.
11. Indicates by gestures or words when needing to use the toilet.
12. Goes to the bathroom independently.
13. Uses only a urinal or toilet for urination.
14. Flushes the toilet after use.
15. Obtains help with an toileting problem.
16. Cleans self using water.
17. Asks the location of the bathroom in new situations.
18. Closes door of bathroom for normal privacy in toileting.
19. Washes and dries hands after toileting.
20. Cohhoes the correct rest room in a public place.

7. RECEPTIVE LANGUAGE

1. Turns head towards t.. source of a sound.
2. Responds by eye contact or verbal acknowledgement when name is called.
3. Responds to the instruction, "Look at me" with 2 seconds of eye contact.
4. Obets simple instructions such as, "Come here".
5. Performs the appropri .. action when the word "me" is used such as 'Give me the ball".
6. Stops an activity upon request such as "N" or "stop".
7. Sits quietely for 3 minutes while a story is being read.
8. Follows prepositions such as "put the ball in box" or 'put the broom behind the door'.
9. Responds to non verbal communications from others such as frowning, crying, smiling, etc., by returning the gesture or giving an appropriate verbal response.
10. Points to many common objects such as ball, spoon, etc.
11. Points to pictured objects in a book upon request.
12. Points to 10 body parts such as nos, eyes, mouth, etc., upon request.
13. Follows two-step directions in order such as, "Get the ball and close the door".
14. Points to large and small objects upon requ st.
15. Identifies 3 colours out of a group of colours when asked, 'which colour is blue ? red ? etc."
16. Follows three-step directions such as "stand-up, open the book and move the chair".
17. Follows verbal directions to get from building to building in a familiar setting.
18. After listening to a one-page story answers "Yes or "No" to specific questions about it. .
19. After listening to a one page story, answers questions about it such as "What happened first to .am'?
20. Summarises a TV/radio programme in own words.

8. EXPRESSIVE LANGUAGE

1. Makes voice sounds.
2. Uses voice sounds to get attention.
3. Changes the tone and rhythm of voice sounds.
4. Says or indicates, "Yes or No" in response to questions.
5. Imitates five words heard either singularly or all at once.
6. Uses two-word phrases such as, "Hello, Friend", "Go out" or "Eat biscuit".
7. Says 20 words.
8. Names 10 common objects when asked, What is this"?
9. Says first and last name when asked.
10. Names 10 body parts when ask, "What is this"?
11. Uses phrases of four words.
12. Expresses feelings, desires or problems in complete sentences(Subject-verb) such as "I am hungry".
13. Asks simple questions such as, "What is this" or "Why can can't I "?
14. Uses pronouns such as "I, you, he, her, me or mine" in a complete sentence.
15. Speaks in phrases or sentences clearly enough to be understood by some one not familiar with the person.
16. Uses two-part sentences such as, "I saw Ram and I asked him to help me".
17. Carries on a conversation with another person(s) for 10 minutes.
18. Says address of residence clearly when asked.
19. Describes past events in a logical order.
20. Tells jokes.

9. SOCIAL INTERACTION

1. Reacts when touched by reaching towards or moving away.
2. Looks toward or otherwise indicates a person in the immediate area.
3. Follows a person with eyes or otherwise responds to a person moving.
4. Spends time alone with toys or objects for 2 minutes.
5. Imitates arm movement such as clapping hands or writ waving good bye.
6. Spends 5 minutes interaction with one or two other persons.
7. Waits for turn in a group.
8. Identifies friends and acquaintances from strangers.
9. Spends 10 minutes interacting with one or two other persons sitting at a table.
10. Follows directions from others.
11. Waits for 2 minutes for an object wanted.
12. Greets others upon meeting either verbally or with non-verbal friendly gestures.
13. Appears comfortable with members of the opposite sex in social situations.
14. Participates ac-tively in social events by engaging in the same activity as the other members of the group.
15. Says "Please" and "Thank you".
16. Shares possessions with others.
17. Responds with a to proper social courtesies such as greetings, apologies or compliments.
18. Uses things that belong to someone else only with their permission.
19. Invited others to participates in an activity such as going for a walk or going to a movie.
20. Receives and makes local phone calls without assistance.

10. READINESS AND READING

1. Sits quetly at a table for 2 minutes.
2. Looks at objects presented when seated at a table.
3. Turns the pages of a book one at a time.
4. Points to 5 common objects when objects are named.
5. Identifies different sounds, such as bell ringing, hands clapping, whispering,keys jingling.
6. Sorts 3 objects by shape.
7. Identifies 3 primary colours by naming them when an object of that colour is presented.
8. Sorts pictures of similar and/or familiar objects into the same category, such as animals, people, vehicles.
9. Follows printed material left to right.
10. Selects I printed letter from 3 when it is different such as "b, c, b".
11. Reads out common words with 3 letters.
12. After seeing pairs of words such as "pat, pen" or "cat cat" identifies which pairs are the same.
13. Identifies/Reads alphabets from A to Z (may look at letters).
14. When shown 5 pictures arranged to tell a story and then mixed up, arranges them again in sequence.
15. Reads the following words when when shown on flash cards: "Stop, men, women, danger, poison, exit".
16. Reads aloud sentences with 5 common words.
17. Reads a simple sentence and answers questions about it.
18. Reads a story to others.
19. Reads for information or entertainment.
20. Reads a simple story silently and states its main idea.

11. WRITING

1. Graspes chalk, pencil or crayon.

2. Scribbles with chalk, pencil or crayon.

3. Grasps chalk, pencil or crayon with thumb, inded finger and middle finger.

4. Imitates someone moving hand from left to right across a page.

5. Marks on a chalk-board or paper in circles and lines.

6. Traces with pencil or crayon along a three inch straight line with 1/8 inch tolerance on either side.

7. Trace with pencil or crayon around the outside of a six-inch circular object in a continuous motion.

8. Copies with a pencil a three-inch straight line with 1/8 inch tolerance on either side.

9. Draws an X with an example to look at.

10. Draws a circle with no example to look at.

11. Draws a line connecting 3 dots on a piece of paper.

12. Copies upper and lower case alphabets with examples to look at.

13. Writes or prints first and last name with no example to look at.

14. Writes or printes legibly (readably).

15. Stays on the lines when printing or writing.

16. Copies a printed sentence legibly including all the punctuations and capital letters.

17. Copies a paragraph legibly on to an 8-1/2 by 11 inch sheet of lined paper writing on the lines.

18. Writes or prints dictated words.

19. Writes or prints dictated sentences legibly, including capitalisation and punctuations.

20. Writes or printes personal letters for mailing using legible handwriting in an informal letter style.

12. NUMBERS

1. Separates one object's one object from a group upon the request, "give me one block", etc.

2. Creates order out of a group of objects by lining up, stacking, or placing them in some other pattern.

3. Repeats 2 numbers in the order given.

4. Points to the short or long line when asked.

5. Chooses the correct number of objects upto 5 upon request "Give me one block etc."

6. Counts to 10.

7. Indicates the difference between "more" and "less" when shown two different sized groups of objects.

8. Matches equal numbers, uoto 5, of different kinds of objects such as 2 iscuits with 2 shoes.

9. Name the printed number symbols 1 through 10.

10. Follows directions to fill a grass half full.

11. Repeats 5 single-digit numbers in the order given .

12. Places the printed number symbols 1 through 10 in order.

13. Prints the number symbol 1 through 10.

14. Counts from 10 to 20.

15. Matches the printed number symbols 1 through 10 with the correct number of objects.

16. Adds single digit numbers with sums upto 10 such as 7 + 2, 2 + 1 or 8 + 0.

17. Prints the number symbols from 1 to 100 in order.

18. Substracts single digit numbers upto 10 such as 9 - 1, 3 - 1, or 5 - 3.

19. Uses the concert of carrying in addition and borrowing in substraction.

20. Multiplies and divides single and double digit

13. TIME

1. Associates the time of the day with activities such as meals or bed time.

2. Responds to "now", "later", "hurry" and "wait" .

3. Answers correctly when asked, "Is it day or night" ?

4. Answers correctly when asked, "Is it morning or afternoon " ?

5. Indicates own age vocally, with fingers or by writing.

6. Understands the difference between yesterday, today and tomorrow.

7. Names or identifies the 7 days of the week.

8. Answers correctly when asked "What day of the week is today" ?

9. Names or identifies the numbers on the clock.

10. Names or identifies the seasons of the year.

11. Names or identifies the 12 months of the year.

12. Answers correctly when asked "What month and year is it now" ?

13. Tells or identifies the date, month, day and year.

14. Indicates the passage of 5 minutes on a clock.

15. Sets a clock to within one hour of the correct time after hearing the correct time.

16. Indicates the passage of 5 minutes, give or take 2 minutes, without the use of the clock.

17. Tells time to the minute on a clock or watch.

18. Sets a clock or watch to within one minute of the correct time after hearing the correct time.

19. Meets a particular scheduled bus.

20. Arrives on time for an appointment made one week in advance.

14. MONEY

1. Sort coins from othr small metal objects.

2. Uses money to buy things(might not use correct amount).

3. Selects a rupee not from other paper objects.

4. Sorts mixed coins into groups of 5p., 10p., 20p., 25p., 50p., re. 1 and rs.2.

5. Selects 5p., 10p., 25p., and 50p., coins from a group of coins.

6. Saves money such as in a 'Piggy Bank" (Money Box)

7. Identifies 1,2,5, and 10 Rupees notes by naming them when asked.

8. Rank orders, 5p., 10p., 20p., 25p., and 50 p., coins in order of value.

9. Exchange 5p., coins for a 50 paise coin.

10. Makes purchases at local stores.

11. Exchanges 5, 10 paise coins for one rupee.

12. Exchange 25 paise coins for Re.1.

13. Exchanges the correct number of mixed coins for 25 paise.

14. Exchanges the correct number of mixed coins for 50 p.

15. Exchanges the correct number of mixed coins for 1 rupee.

16. Saves money in a bank account.

17. Counts the change from a purchase of 1 rupee or less.

18. Gives an adequate amount of money for purchases over 1 rupee and counts the change.

19. Counts the change from a purchase of 5 rupees or less.

20. Uses a checking account.

15. DOMESTIC BEHAVIOUR

1. Picks up household trash or litter and places it in a waste basket upon request.

2. Puts away personal items in the proper location upon request.

3. Puts dirty clothing and clean clothing in the appropriate places.

4. Makes bed.

5. Damp-wipes a kitchen or classroom table.

6. Folds clothing and puts it away in a drawer.

7. Dusts a floor with a dust cleaner .

8. Sweeps a floor with a broom, picks up sweepings in a dust pan and empties the pan.

9. Dusts furniture, leaving no dust on flat surfaces.

10. Sets a table for lunch (need not be a formal setting).

11. Washes and dries dishes by hand.

12. Wet mops a floor.

13. Shovels sand or rakes leaves, leaving the surface clean.

14. Operates a grinder, mixie or grinding stone.

15. Prepares coffee or tea.

16. Uses a cooker and knows when to take it off from the fire.

17. Buys the necessary things needed for cooking.

18. Washes, dries and irons clothes.

19. Does simple mending such as sewing on buttons or rejoining broken seams, using needle and thread or machine.

20. Prepares and serves a meal including one hot dish.

16. COMMUNITY ORIENTATION

1. Finds way alone from place to place within a familiar building.

2. Performs simple errands within a familiar room.

3. Finds way from one building to another in a familiar setting.

4. Goes to public places in a supervised group without calling unfavourable attention to behaviour.

5. Chooses the correct rest room in familiar public place.

6. Conducts self in public in the company of a peer (same age group) of the opposite sex without calling attention to self.

7. Identifies policeman, a fireman and a bus driver.

8. Interacts appropriately with strangers in public.

9. Crosses residential street intersections, looking in both directions and waiting for traffic to clear before crossing.

10. Responds appropriately to social "kidding" teasing in public.

11. Moves about freely in a familiar community.

12. Goes on foot or bicycle to a familiar place over one-half mile from residence.

13. Obeys lights and "walk" - "Don't walk" signals at a light controlled intersections.

14. Identifies a bus-stop and indicates its purpose.

15. Acts appropriately in all normal public situations.

16. Leaves an awkward public situation that is beyond control and seeks help.

17. Walks along a road that has no side walk.

18. Telephones to residence for information or assistance when necessary.

19. Travels by public bus to and from any destination.

20. Holds a valid driver's licence.

17.RECREATION,LEISURE TIME ACTIVITIES

1. Engages in a leisure-time activity for 5 minutes when materials are set up.

2. Bounces, throws or catches a ball .

3. Watches T.V. without disturbing others.

4. Finger paints.

5. Brush paints.

6. Participates in group singing or dancing.

7. Participates in the activities of the community without disturbing others.

8. Plays simple table games with others.

9. Puts together puzzel of 6 pieces.

10. Watches TV or listens to the radio by selecting a station turning on and off etc.

11. Participates in 3 outdoor activities, such as swimming, biking or gardening.

12. Does arts and crafts such as clay work, leather work or bead work.

13. Uses a canteen, park, library, etc.

14. Participates in organisations such as scouting or any clubs.

15. Initiates self-involvement in a hobby not including reading or watching TV.

16. Does gardening.

17. Participates in organised team sports such as cricket, basket ball, or volley ball.

18. Uses community recreation facilities for recreation, I leisure time activities.

19. Selects books from library for personal reading.

20. Plays a musical instrument.

18. VOCATIONAL

1. Assumes a body position at a task or at play such that both hands are available for use.
2. Participates ina single activity for 10 minutes (if protected from interruption).
3. Attends to a single activity in a room with people.
4. Assembles two-part objects that fit together in a simple but secure way.
5. Attends to an assigned task or activity for one-half hour (may need to be encouraged).
6. Attempts to do an assigned task without resistance.
7. Puts away own tools and materials at the end of a task (May need a reminder upto one-half of the time).
8. Tosses hand-sized objects into an open box or waste basket at a distance of 3 feet.
9. Stops a task when it is done.
10. Attends to work while in a group without distraction others.
11. Changes activity without showing discomfort when assigned from one task to a different task.
12. Goes to an assigned area without reminder in a routing daily programme.
13. Undertakes and completes a task in order to receive money.
14. Indicates if own performance meets the standards set for an ac-tivity (these standards may be very low).
15. Uses a hammer to pound, pliers to grasp and screw driver to turn (need not be skillful).
16. Increases speed of work when told to do so.
17. Arises and leaves from residence so as to reach work or activity on time.
18. Assembles objects with 5 part that must be put together in a particular order.
19. Uses public transportation on one local route such as from residence to work and back.
20. Operates power hand tools such as a drill or food mixer without a supervisor present.